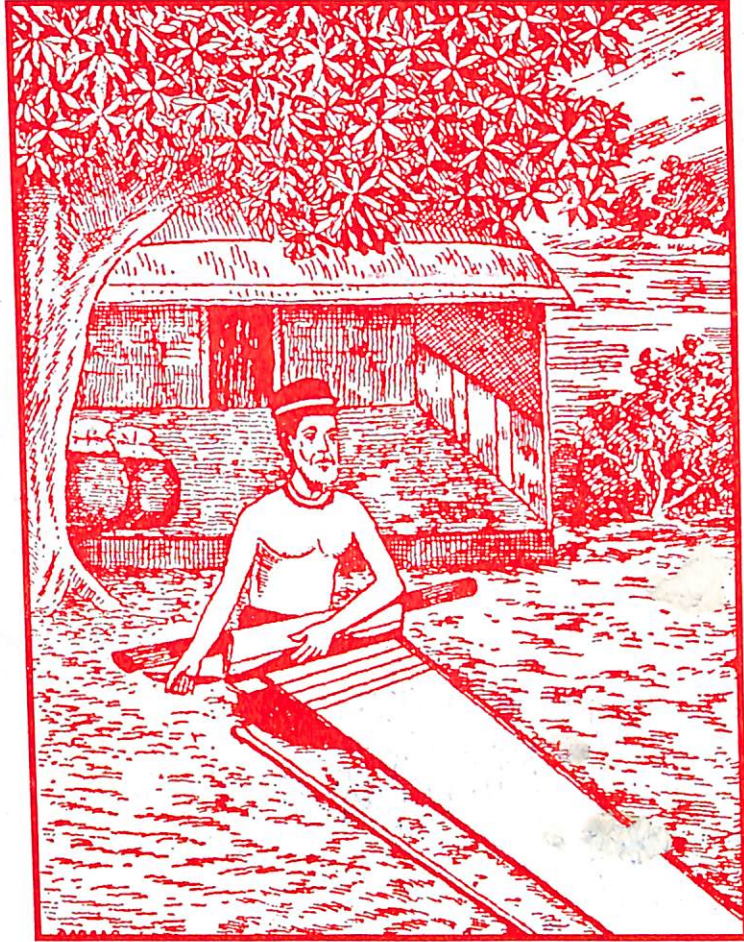


॥ श्री ॥

अनुराग सागर



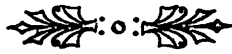
प्रकाशक

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ

मूल्य : २४ रुपये



अनुरागसागर



जिसमें

धर्मदासजी के प्रश्नद्वारा कबीरदासजी
की वाणी वेदान्तमत में वर्णन की
गई है ।

जिसको

महाशय नन्दकुमारलाल साहब, मुकाम गोला,
जिला गोरखपुर—निवासी ने अत्यन्त परिश्रम
से वेदान्त पढ़नेवालों के उपकारार्थ
संग्रह कराया ।

—:०:—

प्रकाशक—

तेजकुमार बुकडिपो, (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ
उत्तराधिकारी
नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा
अवध पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ में मुद्रित

सन् २००४ ई०

पन्द्रहवीं बार - २०००]

[सर्वाधिकार सुरक्षित

T I
II
T I
II १ II
I
II १ II
I
II
I
II २ II
I
II

मोरी II
इदानी II
इ तरई II

अनुरागसागर



सत्यनाम कबीरसाहब की दाया

अनुरागसागर बाणी कबीरसाहब की ।

छंद—प्रथम बन्दों गुरुचरण जिन्ह अगम गम्य लखाइया ।
 ज्ञानदीप प्रकाशकरि पट खोलि दरश देखाइया ॥
 जेहि कारणे सिध्यापचे सो गुरु कृपाते पाइया ।
 अकह मूरति अमिय सूरति ताहि जाय समाइया ॥ १ ॥

सो०—कृपासिंधु गुरुदेव, दीनदयालु कृपायतन ।
 बिरले पायो भेव, जिन्ह चीन्हो परगट तहाँ ॥ १ ॥

छंद—कोइ बूझिहैं जन जौहरी जो शब्द को पारख करै ।
 चितलाइ सुनइ सिखावनो हितलाय हृदये गिरिधरै ॥
 तम मोह मोमन ज्ञानरवि जहँ प्रगट है तब सूझई ।
 कहत हों अब शब्द साँचा सन्त कोई बूझई ॥ २ ॥

सो०—कोइ एक सन्त सुजान, सो मम शब्द बिचारिहैं ।
 पावै पद निर्वान, बसत जासु अनुराग उर ॥

धर्मदासबचन चौपाई ।

हे सतगुरु विनवों कर जोरी * इक संशय भेटहु प्रभु मोरी ॥
 जाके चित अनुराग समाना * ताको कहों कवन सहिदाना ॥
 अनुरागी कैसे लखि परई * बिनु अनुराग जीव नहिं तरई ॥

कबीरबचन ।

धर्मदास परखहु चितलाई ❀ अनुरागी लक्षण सुखदाई ॥
 जैसे मृगा नाद सुनि धावै ❀ मगन होय व्याधा ढिग आवै ॥
 चित कछु शंक न आवै ताही ❀ देत शीश से नाहिं डेराही ॥
 सुनिसुठिनाद शीश तिन दीन्हा ❀ ऐसो अनुरागी को चीन्हा ॥
 औ पतङ्ग को जैसो भाऊ ❀ ऐसो अनुरागी उर आऊ ॥
 ऐसा लक्षण सुन धर्मदासा ❀ ज्ञानी ज्ञान करै परकासा ॥
 जरतिनारि ज्यों मृत पति संगी ❀ तनिको जरत न मोरइ अङ्गा ॥
 तजै सुगृह धनधाम सहेली ❀ पियबिरहिनि उठिचलै अकेली ॥
 सुत ले लोगन्ह आगे कीन्हा ❀ बहुतक मोहताहि कहँ दीन्हा ॥
 बहुतक मोह ताहि सब करई ❀ बालक दुर्बल तेहि बिनु मरई ॥
 बालक दुर्बल तेहि बिनु मरिहैं ❀ घर भौ सून काहिबिधि करिहैं ॥
 बहु सम्पति तोहरे गृह अहई ❀ पलटिचलो गृह सब असकहई ॥
 ताके चित कछु व्यापै नाहीं ❀ पिय अनुराग बसै चितमाहीं ॥

छंद—बहुत कहि समुझावते नर नाहिं समुझति सो धनी ।

नहि काम है धनधाम से कछु मोहिं तौ ऐसे बनी ॥

जग जीवना दिनचारि है कोइनाहिं साथी अन्त को ।

॥ १ ॥ यह समुझि देखो सती ताते गहो पद तुम कन्त को ॥ ३ ॥

सो०—लिये प्रिया कर माहँ, जाय सरा ऊपर चढ़ी ।

गोद लिये निज नाहँ, रामराम कहते जरी ॥ ३ ॥

चौपाई ।

सुनहु सन्त अनुराग कि बानी ❀ तुलततु देखिकहे हितजानी ॥
 ऐसे जो नामहिं लो लावै ❀ कुल परिवार सबै बिसरावै ॥
 सुत नारी का मोह न आनै ❀ जीवन जन्म स्वप्न करिजानै ॥
 जग महँ जीवन थोरहै भाई ❀ अन्त समय कोउ नाहिं सहाई ॥

बहुत पियारि नारि जग माहीं ❀ मातु पिताहु जाहिसरि नाहीं ॥
 तेहि कारण नर शीश जो देही ❀ अन्त काल सो नाहिं सनेही ॥
 स्वारथ कहँ वह रोदन करहीं ❀ तुरतहि नैहर को चित धरहीं ॥
 सुत परिजन धन स्वप्न सनेही ❀ सत्य नामगहु निज मति येही ॥
 निजतनु समप्रिय और न आना ❀ सोतनुसङ्ग न चलिहि निदाना ॥
 अस नहिं कोई देखै भाई ❀ अन्तहु यम सो लेहि छोड़ाई ॥
 अहै एक सो कहौ बखानी ❀ जिन्ह अनुराग लीन्ह सोमानी ॥
 सतगुरु अहैं छड़ावन हारा ❀ निश्चय मानहु कहा हमारा ॥
 कालहि जीत हंस लै जाहीं ❀ अबिचल देश पुरुष जहँ आहीं ॥
 तहाँ जाय सुख होय अपारा ❀ बहुरि न आवै यहि संसारा ॥

छंद—बिश्वास करु मन बचन को चढ़ आय सन्त कि राहहो ।

ज्यों शूर रण में धसै फिरि पाछे न चितवै काहिहो ॥

सन्त शूराभाव निरखहु सन्त सो मगुधारिये ।

मृतक दशा बिचारि गुरुगमि कालकष्ट बिडारिये ॥ ४ ॥

सो०—कोई शूरा जीव, सो ऐसी करणी करै ।

ताहि मिलैगो पीव, कहहिं कबीर बिचारिकै ॥ ४ ॥

धर्मदासबचन चौपाई ।

मृतक जीव प्रभु कहो बुझाई ❀ जाते तनकी तपनि नशाई ॥
 किहिबिधि होय मृतकजीवनतन ❀ कहहु बिलोय नाथ अमृतघन ॥

सद्गुरुबचन ।

धर्मदास यह कठिन कहानी ❀ गुरु गमिते केहु बिरलैजानी ॥
 मृतक होयकै खोजहु सन्ता ❀ शब्द बिचारि गहोमगु अन्ता ॥
 जैसे मृद्गी कीट के पासा ❀ कीटहि गहिगुरुगमि परकासा ॥
 अग्र सुशब्द कीटने माना ❀ बर्ण फेरि आपन कै जाना ॥
 बिरला कीट होय सुखदाई ❀ प्रथम अवाज गहै चितलाई ॥

कोइ दूजे कोइ तीजे जाने ❀ तनमन रहित शब्द हितमानै ॥
 पंखघात तजि महितनु डारै ❀ भृङ्गी शब्द प्रीति चितधारै ॥
 तब लैगो भृङ्गी निजगेहा ❀ श्वास देह कीन्हेउ निज देहा ॥
 भृङ्गी शब्द जो कीट न गहई ❀ तौ पुनि कीट असारो रहई ॥
 सुन धर्मनि जस कीटको भेवा ❀ यहि मत शिष्य गहै गुरुदेवा ॥
 छंद-भृङ्गमत दृढ़कै गहै तौ करौं निजसम तोहिंहो ।

द्वितिय भाव न चित समावै तौ लहै जन मोहिंहो ॥

गुरु शब्द निश्चय सत्य मानै भृङ्गगति ते पावई ।

तजि सकल आशा शब्द बासा कालकष्ट निवारई ॥ ५ ॥

चौपाई ।

सुनहु सन्त अब मृतक सुभाऊ ❀ बिरला जीव पीव मगुपाऊ ॥
 धर्मनिसुनु तुम मृतक सुभावा ❀ मृतक होय सतगुरु पदपावा ॥
 मृतक ओह निभाव उरधारो ❀ ओह निभाव गहि जीवउबारो ॥
 जस पृथ्वी कै गञ्जनि होई ❀ चित अनुमानिगहोगुण सोई ॥
 कोइ चन्दन कोइ बिष्टा डारै ❀ कोई कोडि कृषी अनुसारै ॥
 गुण अवगुण तिन्हसम कै जाना ❀ महा विरोध अधिक सुख माना ॥
 अवरो मृतकभाव सुनि लेहू ❀ निरखि परखि दृढ़मगु पगुदेहू ॥
 जैसे ऊख किसान बनावै ❀ रती रती कै देह कटावै ॥
 कोल्लू महँ निज तनुहि पेरावै ❀ रस निसरै पुनि ताहि तपावै ॥
 निज तनु दाहै गुड़ पुनि होई ❀ बहुरि ताव दै खाँड़ बिलोई ॥
 ताहू माहँ ताव पुनि दीन्हा ❀ चीनी तबहि कहावै लीन्हा ॥
 चीनी होय बहुरि तनु जारा ❀ तामें मिश्री ह्वै अनुसारा ॥
 मिश्री ताय पुनि कन्द कहावा ❀ कहु कबीर सबके मन भावा ॥
 छंद-मृतक जीवन कठिन धर्मनि लहै बिरला शूरहो ।

कादर सुनत तन मन दहै पुनि फिरिन चितवै फूरहो ॥

ऐसही आपुहि सवाँरै तबै सहि गुरु ज्ञानसो ।

लहे भेदी भेद निश्चल जाय दीप अमानसो ॥ ६ ॥

सो०-मृतक होयसो साध, सो सतगुरु को भावई ।

मेटै सकल उपाध, तासुदेव आशा करै ॥ ५ ॥

चौपाई ।

साधूमार्ग कठिन भ्रमदासू ❀ रहनि गहै सो साधु सुपासू ॥
 पांचों इन्द्री समकै राखै ❀ नाम अमीरसनिशिदिनचाखै ॥
 प्रथमहि चक्षु इन्द्रि कहँ साधै ❀ गुरुगमि पन्थ नाम अवरार्धै ॥
 सुन्दर रूप चक्षु को पूजा ❀ रूप असार न भावै दूजा ॥
 रूप कुरूप दोऊसम ठानै ❀ दरश विदेह सदा सुख मानै ॥
 इन्द्रिय श्रवण बचन शुभ चाहै ❀ उतकट शब्द सुनत चितदाहै ॥
 बोल कुबोल दोउ सम लेखै ❀ हृदय शुद्ध गुरुज्ञान बिशेखै ॥
 नासिक इन्द्रि सुवास अधीना ❀ यहि सम राखहि सन्तप्रवीना ॥
 जिह्वा इन्द्रि चहै नित स्वादू ❀ खट्टा मीठा मधुर सुस्वादू ॥
 सहज भाव महँ जो कछु आवै ❀ रुखाफीका नहिं बिलगावै ॥
 जो कोइ पञ्चामृत लै आवै ❀ ताहि देखि नहिं हर्ष बढ़ावै ॥
 तजै न रुखासाग लोनबिन ❀ अधिकप्रेमसो पावै प्रतिदिन ॥
 इन्द्री दुष्ट महा अपराधी ❀ कुटिल काम के बिरले साधी ॥
 कामिनि रूप काल की खानी ❀ त्यागहु तासुसंग गुरु ज्ञानी ॥
 जबहीं काम उमँगि तनु आवै ❀ ताहि समय जो आपु जोगावै ॥
 शब्द विदेह सुरति लै राखै ❀ गहि मन पवननामरस चाखै ॥
 जब निःतत्त्व में जाय समाई ❀ तब पुनि काम रहै मुरझाई ॥

छंद-अति काम पर्वल अति भयंकर महादारुण काल हो ।

सुरदेव मुनि गन्धर्व यक्षन सबहिं हीन बिहाल हो ॥

सबहि लूटै बिरल छूटै ज्ञानगुण जिन्ह दृढ़ गहे ।

गुणज्ञान दीपसमीप सतगुरु भक्तिमारग तिन्ह लहे ॥ ७ ॥

सो०—दीपक ज्ञान प्रकास, भवन अँजोरा करि रहै ।

सतगुरु शब्द बिलास, भाजै चोर अँजोर जब ॥ ६ ॥

चौपाई ।

गुरु कृपा ते साधु कहावै ❀ अलल पक्षिहै लोक सिधावै ॥
 धर्मदास परिखहु यह बानी ❀ अलपक्षी गति कहौ बखानी ॥
 अलल पक्षि वह रहै अकाशा ❀ निशिदिन रहै पवननभ आशा ॥
 दृष्टिभाव तिन्ह रति बिधि ठानी ❀ यहि बिधि गर्भ रहै तेहि जानी ॥
 अण्ड प्रकाश कीन पुनि तहँवाँ ❀ निराधार अण्डारहु जहँवाँ ॥
 मारग माहँ पुष्ट भो अण्डा ❀ मारग माहँ बिहरि भा खण्डा ॥
 मारग माहँ चक्षु तिन्ह पावा ❀ मारग भयो पङ्क परभावा ॥
 महिठिग आवत सुधि भा ताही ❀ इहाँ मोर नहि आश्रम आही ॥
 सुरति सँभारि चलो पुनि तहँवाँ ❀ मातु पिता को आश्रम जहँवाँ ॥
 अलल पक्षि तेहि लेन न आये ❀ उलटिचीन्हि निजघरहिसिधाये ॥
 बहु पक्षी जग माहँ रहावै ❀ अललपक्षिसम नाहि कहावै ॥
 अलल पक्षि जस पक्षिन माहीं ❀ अस बिरला जन नाम समाहीं ॥

छंद—निरालम्ब अलम्ब सतगुरु एक आशा नाम की ।

गुरुचरण अधीन निशिदिन चाव नहि धनधाम की ॥

सुतनारि सकल बिसारि बिषयाचरण गुरु दृढ़ कै गहे ।

सतगुरु कृपा दुखदुसहनारो धाम अबिचलको लहे ॥ ८ ॥

सो०—मन बच क्रम गुरु ध्यान, गुरु आज्ञा निरखत रहै ।

देहि मुक्ति गुरु दान, नाम बिदेह लखाय सो ॥ ७ ॥

नाम महातम चौपाई ।

जौलों ध्यान बिदेह न पावै ❀ तोल गि भवमहँ फिरि फिरि आवै ॥

ध्यान विदेह औनाम बिदेहा ❀ दोउ लखि पावै मिटै सनेहा ॥
 क्षण इक प्रेम बिदेह समाई ❀ ताकी महिमा बरणि न जाई ॥
 जौयुग चारि रहै कोउकासी ❀ सार शब्द बिन यमपुर बासी ॥
 नैमिषार मथुरा द्वारिका ❀ गया प्रयाग अवध बद्रिका ॥
 अरसठि तीर्थ पृथी परिकर्मा ❀ सार शब्द बिनु मिटै न भर्मा ॥
 कहँ लगि भाषौं नाम प्रभाऊ ❀ जेहि सुमिरे यम त्रास नसाऊ ॥
 सारनाम सतगुरु सों पावै ❀ नाम डोर गहि लोक सिधावै ॥
 धर्मराय तेहि शीश नवावै ❀ जो हंसा निःतत्त्व समावै ॥
 सार शब्द बीदेह स्वरूपा ❀ निःअक्षर वह रूप अनूपा ॥
 तत्त्व प्रभाव प्रकृति वश देहा ❀ सार शब्द निःतत्त्व बिदेहा ॥
 कहन सुनन कहि शब्द चौधारा ❀ सार शब्द सो जीव उबारा ॥
 सुपुरुष नाम सार परवाना ❀ सुमिरण डोरि नाम सहिदाना ॥
 बिनु रसना को दाम समाई ❀ तासों रहै काल शिरनाई ॥

छंद—सतगुरु शब्द जो सार है तिहि परखि गुरु गमि लाइये ।

मनपवन थिरकै शब्द निरखै भूलि कुपथ न जाइये ॥

होत ध्वनि रसना बिना करमाल बिन निवारिये ।

शब्द शोर बिदेह निरखत अमरलोक सिधारिये ॥६॥

सो०—शोभा पुरुष अपार, कोटि भानु शशि रोम इक ।

षोडश शशि छिटकार, एक हंस उजियार तनु ॥८॥

धर्मदासबचन चौपाई ।

हे प्रभु तवचरणन बलिहारी ❀ किये सुखी सबमिथ्या सारी ॥
 चक्षुहीन जिमि पावै नयना ❀ तिमिमोहिं हर्ष सुनत तबबयना ॥
 लोक द्वीप सब बरणि सुनावहु ❀ तृषावन्त को अमी पिलावहु ॥
 कौने द्वीप पुरुष को बासा ❀ करत हंस केहि द्वीप निवासा ॥
 भोजन कौन हंस तहँ करहीं ❀ बाणा कौन पुरुष उच्चरहीं ॥

कैसे पुरुष लोक रचि राखो ❀ बरणहु सकल गोय जनिराखो ॥
 कालनिरंजन केहिबिधि भयऊ ❀ कैसे षोडश सुत निर्मयऊ ॥
 कैसे चारखानि बिस्तरिया ❀ कैसे जीव काल बस परिया ॥
 कैसे कर्म शेष उपराजा ❀ कैसे मीन बराहहि साजा ॥
 तीन देव कौने बिधि भयऊ ❀ कैसे महि अकाश निरमयऊ ॥
 चन्द्र सूर्य कहु कैसे भयऊ ❀ कैसे तारागण सब ठयऊ ॥
 कैसे भयो शरीर की रचना ❀ भाषहु समरथ उत्पतिबचना ॥

छंद-आदि उत्पति कहो सतगुरु कृपा करि निज दास को ।

बचन अमृत प्रकाश कीजै नाश हो यमत्रास को ॥

एक एक बिलोय बरणहु दास मोहिं निज जानिकै ।

सत्यवक्ता सत्यगुरु तुम लिहेउ निश्चय मानिकै ॥१०॥

सो०-निश्चय बचन तुम्हार, मोहिं अधिक प्रिय ताहिते ।

लीला अगम अपार, धन्य भाग मोहिं दरश दिय ॥६॥

कबीरबचन चौपाई ।

धर्मदास तुम आदि अँकूरी ❀ मोहिं मिलेहु कीन्हेहुदुखदूरी ॥
 जस तुम मोसों कीन्हेउ नेहा ❀ तजि धन धाम बित्तसुतगेहा ॥
 आगे जो चेला अस करिहै ❀ गुरुचरणन्हचितनिश्चल धरिहै ॥
 तन मन धन नेवछावरि डारै ❀ गुरु के चरण प्रीति दृढ़ धारै ॥
 सोजन मोहिं अधिक प्रियहोई ❀ ताकहँ रोंकि सकै नहिं कोई ॥
 शिष्य होय सरबस नहिं धारै ❀ हृदय कपट मुख प्रीति उचारै ॥
 सो जिव कैसे लोकहिं जाई ❀ बिनु गुरुभक्ति मोहिं नहिं षाई ॥
 अब तुम सुनहु आदिकी बानी ❀ भाषों उत्पति प्रलय निशानी ॥
 तबकी बात सुनो धर्मदासा ❀ जब नहिं महि पाताल अकासा ॥
 तब नहिं कूर्म बराह औ शेषा ❀ तब नहिं शारद गौरि गणेशा ॥
 तब नहिं हती निरंजन माया ❀ जिन्हजीवन कहँबाँधिभुलाया ॥

तैंतिस कोटि देव तब नाहीं ❀ और अनेक बतावों काहीं ॥
तीन देवता दिन नहिं रहिया ❀ शास्त्र पुरान कुरान न तहिया ॥
सबै रहा तब पुरुष के माहीं ❀ जिमि पटबीज मध्य रहु छाहीं ॥

छंद—आदि उत्पत्ति सुनो धर्मनि कोउ न जानत ताहि हो ।

सबै भो बिस्तार पाछे साखि देउँ मैं काहि हो ॥

बेद चारौ नाहिं जानैं सत्यपुरुष कहा किया ।

बेद को तब मूल नाहीं अकथकथा बखानिया ॥ ११ ॥

सो०—निराकालते बेद, आदि भेद जानैं नहीं ।

पण्डित करहिं उछेद, मते बेद को जग चलैं ॥ १० ॥

चोपाई ।

सत्यपुरुष जब गर्भ रहाये ❀ कारण कर्म नाहिं निरमाये ॥
कमल माँह रह पुरुष बिदेहा ❀ सम्पुट कमल गुप्त सन्देहा ॥
इच्छा कीन्ह अंश उपजाऊ ❀ अंशन्ह देखि हर्ष हूँ भाऊ ॥
प्रथम शब्द सब पुरुष प्रकासा ❀ लोकद्वीप रचि कीन्ह निवासा ॥
चारि केरि सिंहासन रहा ❀ अगम जगामगि शोभामहा ॥
पुरुष कलाधरि बैठे जबहीं ❀ अगरबासना प्रकटी तबहीं ॥
सहस अठासि द्वीप रचि राखा ❀ पुरुषेच्छा ते सब अभिलाखा ॥
सबै द्वीप अगरहि रह छाई ❀ अगर बासना अधिक सुहाई ॥
द्वितिये शब्द सन्त परकासा ❀ निकसे कूर्मचरण धरिआशा ॥
तीजे शब्द भयो उच्चारा ❀ ज्ञाननाम सुत उपज सारा ॥
चरण टेकि सम्मुख हूँ रहेऊ ❀ आज्ञा पुरुष द्वीप तिन्ह लहेऊ ॥
चौथे शब्द भयो पुनि जबहीं ❀ नाम बिबेक प्रकट सुत तबहीं ॥
आज्ञा पुरुष किय द्वीप निवासा ❀ पँचयें शब्द तेज परकासा ॥
पच प्रांसव निज शब्द उचारा ❀ काल निरंजन लिय औतारा ॥
तेज सुअंगकाल हूँ आवा ❀ ताते जीवन कहँ सन्तावा ॥

जीया अंश पुरुष को आहीं ❀ आदि अन्त कोउ जानत नाही ॥
 छठ्यें शब्द पुरुषमुख भाषा ❀ उपजे सहज नाम अभिलाषा ॥
 सतयें शब्द भयो सन्तोषा ❀ दीन्हों द्वीप पुरुष परतोषा ॥
 अठयें शब्द पुरुष उच्चार ❀ सुसस्वभाव द्वीप बैठारा ॥
 नवयें शब्द अनन्द अपारा ❀ दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
 एकादशे नाम निष्कामा ❀ द्वादश भो जल रंगि अनामा ॥
 सुतहि अचिन्त त्रयोदश जानो ❀ शब्द चतुर्दश प्रेम बखानो ॥
 शब्द पञ्चदश दीनदयाला ❀ षोडशयें सुत धीर्य रसाला ॥
 सत्रहयें भो योग सन्तायन ❀ एक नाल षोडश सुत पायन ॥
 शब्दहि ते भयो सुतन्ह अकारा ❀ शब्दहि ते सुलोक विस्तारा ॥
 द्वीप-द्वीप अंशन्ह बैठारा ❀ अग्र अमीदिहु अंश अहारा ॥
 अंशन्हि शोभा कला अनन्ता ❀ होत तहाँ सुख सदा बसन्ता ॥
 सबसुत करहि पुरुष को ध्याना ❀ अमी अहार अधिक सुखमाना ॥
 छंद-द्वीपकरहि अनन्त शोभा नाहि बरणत सो बनै ।

अमित कला अपार अद्भुत सुतन्ह शोभा सो गनै ॥

पुरुष के उजियार से रहै सबै द्वीप अँजोर हो ।

इक रोम पुरुष प्रकाश में लहि सूर्य चन्द्र करोर हो ॥ १२ ॥

सो०-सतपुर आनन धाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।

हंसन को विश्राम, पुरुष दरश अचवन सुधा ॥ ११ ॥

चौपाई ।

यहिविधि बहुत दिवस गयोबीती ❀ तेहि पाछे ऐसी भई रीती ॥
 धर्मराय अस कीन्ह तमासा ❀ सो चरित्र सुनिये भ्रमदासा ॥
 युग चौंसठि तिन्ह सेवा लाये ❀ पगयक ठाढ़ पुरुष चितलाये ॥
 पुरुष अवाज उठी नभ बानी ❀ कहाँ जानिये तुम सबठानी ॥
 कहैं धर्म तब शीश नवाई ❀ देहु ठौर तहँ बैठों जाई ॥
 आज्ञा कियो जाहु सुत तहाँ ❀ मानसरोवर द्वीप है जहाँ ॥

चल्यो धर्म तब मानसरोवर ❀ बहुत हर्ष चित करत कलोलर ॥
 मानसरोवर आयो जबहीं ❀ बहुरि पुरुष ध्यावत भयो तबहीं ॥
 एकहि पगु तहँ सेवा लावा ❀ पुरुष दयानिधि बचन सुनावा ॥
 जाहु सहज तुम धर्म के पासा ❀ अस कस ध्यान कीन परकासा ॥
 चले सहज पुनि शीश नवाई ❀ धर्मदास सो पहुँचे आई ॥
 कहैं सहज सुनु भ्राता मेरो ❀ सेवा पुरुष मानि लियो तेरो ॥
 अब का माँगसि सो कहु मोहीं ❀ पुरुष अवाज दीन्ह असतोहीं ॥

धर्मराय वचन ।

सुनो सहज तुम मोरे भाई ❀ करहु पुरुष सों बिनती जाई ॥
 इतना ठाम न मोहिं सुहाई ❀ अब मोहिं देहु बकसि ठकुराई ॥
 मोरे चित अस भव अनुरागा ❀ देहु देश मोहिं करहु सुभागा ॥
 की मोहिं देहु लोक अधिकारा ❀ की मोहिं देहु देश इक न्यारा ॥
 चले सहज सुनि धर्मनि बाता ❀ जाय पुरुष सों कह बिख्याता ॥
 जो कछु धर्मराय अभिलाषा ❀ तैसे सहज सुनायो भाषा ॥

छंद—सुनि सहज के बचन तबहीं गिरा पुरुष उचारेऊ ।

धर्म से सन्तुष्ट हैं हम बचन मम हिय धारेऊ ॥

मानसर तेहि ठाम दीन्हों शून्य देश बसावहू ।

करहु रचना जाय तहँवाँ सहज बचन सुनावहू ॥ १३ ॥

सो०—सहज जाहु तुम ताहि, अस कहि बेगि सुनावहू ।

दियो शून्य हम वाहि, रचना करहु बनाइ कै ॥ १२ ॥

चौपाई ।

जाय सहज सों बचन सुनावा ❀ सत्य पुरुष जो कहि समुझावा ॥
 सुनत सुबचन धर्म हरषाने ❀ कछुक हर्ष कछु बिस्मय आने ॥
 कहैं धर्म सुनु सहज पियारा ❀ कैसे रचि केहि बिधि बिस्तारा ॥
 मो कहँ देहु साज प्रभु सोई ❀ रचना जगत जाहि ते होई ॥

जीया अंश पुरुष को आहीं ❀ आदि अन्त कोउ जानत नाहीं ॥
 छठयें शब्द पुरुषमुख भाषा ❀ उपजे सहज नाम अभिलाषा ॥
 सतयें शब्द भयो सन्तोषा ❀ दीन्हों द्वीप पुरुष परतोषा ॥
 अठयें शब्द पुरुष उच्चार ❀ सुसस्वभाव द्वीप बैठारा ॥
 नवयें शब्द अनन्द अपारा ❀ दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
 एकादशे नाम निष्कामा ❀ द्वादश भो जल रंगि अनामा ॥
 सुतहि अचिन्त त्रयोदश जानो ❀ शब्द चतुर्दश प्रेम बखानो ॥
 शब्द पञ्चदश दीनदयाला ❀ षोडशयें सुत धीर्य रसाला ॥
 सत्रहयें भो योग सन्तायन ❀ एक नाल षोडश सुत पायन ॥
 शब्दहि ते भयो सुतन्ह अकारा ❀ शब्दहि ते सुलोक विस्तारा ॥
 द्वीप-द्वीप अंशन्ह बैठारा ❀ अग्र अमीदिहु अंश अहारा ॥
 अंशन्हि शोभा कला अनन्ता ❀ होत तहाँ सुख सदा बसन्ता ॥
 सबसुत करहिं पुरुष को ध्याना ❀ अमी अहार अधिक सुखमाना ॥
 छंद-द्वीपकरहिं अनन्त शोभा नाहिं बरणत सो बनै ।

अमित कला अपार अद्भुत सुतन्ह शोभा सो गनै ॥

पुरुष के उजियार से रहै सबै द्वीप अँजोर हो ।

इक रोम पुरुष प्रकाश में लहि सूर्य चन्द्र करोर हो ॥ १२ ॥

सो०-सतपुर आनन धाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।

हंसन को विश्राम, पुरुष दरश अचवन सुधा ॥ ११ ॥

चौपाई ।

यहिबिधि बहुत दिवस गयोबीती ❀ तेहि पाछे ऐसी भई रीती ॥
 धर्मराय अस कीन्ह तमासा ❀ सो चरित्र सुनिये भ्रमदासा ॥
 युग चौंसठि तिन्ह सेवा लाये ❀ पगयक ठाढ़ पुरुष चितलाये ॥
 पुरुष अवाज उठी नभ बानी ❀ कहाँ जानिये तुम सबठानी ॥
 कहैं धर्म तब शीश नवाई ❀ देहु ठौर तहँ बैठों जाई ॥
 आज्ञा कियो जाहु सुत तहाँ ❀ मानसरोवर द्वीप है जहाँ ॥

चल्यो धर्म तब मानसरोवर ❀ बहुत हर्ष चित करत कलोलर ॥
 मानसरोवर आयो जबहीं ❀ बहुरि पुरुष ध्यावत भयो तबहीं ॥
 एकहि पगु तहँ सेवा लावा ❀ पुरुष दयानिधि बचन सुनावा ॥
 जाहु सहज तुम धर्म के पासा ❀ अस कस ध्यान कीन परकासा ॥
 चले सहज पुनि शीश नवाई ❀ धर्मदास सो पहुँचे आई ॥
 कहैं सहज सुनु भ्राता मेरो ❀ सेवा पुरुष मानि लियो तेरो ॥
 अब का माँगसि सो कहु मोहीं ❀ पुरुष अवाज दीन्ह असतोहीं ॥

धर्मराय वचन ।

सुनो सहज तुम मोरे भाई ❀ करहु पुरुष सों बिनती जाई ॥
 इतना ठाम न मोहिं सुहाई ❀ अब मोहिं देहु बकसि ठकुराई ॥
 मोरे चित अस भव अनुरागा ❀ देहु देश मोहिं करहु सुभागा ॥
 की मोहिं देहु लोक अधिकारा ❀ की मोहिं देहु देश इक न्यारा ॥
 चले सहज सुनि धर्मनि बाता ❀ जाय पुरुष सों कह बिख्याता ॥
 जो कछु धर्मराय अभिलाषा ❀ तैसे सहज सुनायो भाषा ॥

छंद—सुनि सहज के वचन तबहीं गिरा पुरुष उचारेऊ ।

धर्म से सन्तुष्ट हैं हम वचन मम हिय धारेऊ ॥

मानसर तेहि ठाम दीन्हों शून्य देश बसावहू ।

करहु रचना जाय तहँवाँ सहज वचन सुनावहू ॥ १३ ॥

सो०—सहज जाहु तुम ताहि, अस कहि बेगि सुनावहू ।

दियो शून्य हम वाहि, रचना करहु बनाइ कै ॥ १२ ॥

चोपाई ।

जाय सहज सों वचन सुनावा ❀ सत्य पुरुष जो कहि समुझावा ॥
 सुनत सुबचन धर्म हरषाने ❀ कछुक हर्ष कछु बिस्मय आने ॥
 कहैं धर्म सुनु सहज पियारा ❀ कैसे रचि केहि बिधि बिस्तारा ॥
 मो कहँ देहु साज प्रभु सोई ❀ रचना जगत जाहि ते होई ॥

कैसे पुरुष लोक रचि राखो ❀ बरणहु सकल गोय जनिराखो ॥
 कालनिरंजन केहिबिधि भयऊ ❀ कैसे षोडश सुत निर्मयऊ ॥
 कैसे चारखानि बिस्तरिया ❀ कैसे जीव काल बस परिया ॥
 कैसे कर्म शेष उपराजा ❀ कैसे मीन बराहहि साजा ॥
 तीन देव कौने बिधि भयऊ ❀ कैसे महि अकाश निरमयऊ ॥
 चन्द्र सूर्य कहु कैसे भयऊ ❀ कैसे तारागण सब ठयऊ ॥
 कैसे भयो शरीर की रचना ❀ भाषहु समरथ उत्पतिबचना ॥

छंद-आदि उत्पति कहो सतगुरु कृपा करि निज दास को ।

बचन अमृत प्रकाश कीजै नाश हो यमत्रास को ॥

एक एक बिलोय बरणहु दास मोहिं निज जानिकै ।

सत्यबक्ता सत्यगुरु तुम लिहेउ निश्चय मानिकै ॥१०॥

सो०-निश्चय बचन तुम्हार, मोहिं अधिक प्रिय ताहिते ।

लीला अगम अपार, धन्य भाग मोहिं दरश दिय ॥६॥

कबीरबचन चौपाई ।

धर्मदास तुम आदि अँकूरी ❀ मोहिं मिलेहु कीन्हेहुदुखदूरी ॥
 जस तुम मोसों कीन्हेउ नेहा ❀ तजि धन धाम बिचसुतगेहा ॥
 आगे जो चेला अस करिहै ❀ गुरुचरणन्हचितनिश्चल धरिहै ॥
 तन मन धन नेवछावरि डारै ❀ गुरु के चरण प्रीति दृढ़ धारै ॥
 सोजन मोहिं अधिक प्रियहोई ❀ ताकहँ रोंकि सकै नहिं कोई ॥
 शिष्य होय सरबस नहिं धारै ❀ हृदय कपट मुख प्रीति उचारै ॥
 सो जिव कैसे लोकहिं जाई ❀ बिनु गुरुभक्ति मोहिं नहिं षाई ॥
 अब तुम सुनहु आदि की बानी ❀ भाषों उत्पति प्रलय निशानी ॥
 तबकी बात सुनो धर्मदासा ❀ जब नहिं महि पाताल अकासा ॥
 तब नहिं कूर्म बराह औ शेषा ❀ तब नहिं शारद गौरि गणेशा ॥
 तब नहिं हती निरंजन माया ❀ जिन्हजीवन कहँबाँधिमुलाया ॥

तैंतिस कोटि देव तब नाहीं ❀ और अनेक बतावों काहीं ॥
तीन देवता दिन नहिं रहिया ❀ शास्त्र पुरान कुरान न तहिया ॥
सबै रहा तब पुरुष के माहीं ❀ जिमि पटबीज मध्य रहु छाहीं ॥

छंद-आदि उत्पत्ति सुनो धर्मनि कोउ न जानत ताहि हो ।

सबै भो बिस्तार पाछे साखि देऊँ मैं काहि हो ॥

बेद चारौ नाहिं जानै सत्यपुरुष कहा किया ।

बेद को तब मूल नाहीं अकथकथा बखानिया ॥ ११ ॥

सो०-निराकालते बेद, आदि भेद जानै नहीं ।

पण्डित करहिं उछेद, मते बेद को जग चलै ॥ १० ॥

चोपाई ।

सत्यपुरुष जब गर्भ रहाये ❀ कारण कर्म नाहिं निरमाये ॥

कमल माँह रह पुरुष बिदेहा ❀ सम्पुट कमल गुप्त सन्देहा ॥

इच्छा कीन्ह अंश उपजाऊ ❀ अंशन्ह देखि हर्ष हूँ भाऊ ॥

प्रथम शब्द सब पुरुष प्रकासा ❀ लोकद्वीप रचि कीन्ह निवासा ॥

चारि केरि सिंहासन रहा ❀ अगम जगामगि शोभामहा ॥

पुरुष कलाधरि बैठे जबहीं ❀ अगरबासना प्रकटी तबहीं ॥

सहस्र अठासि द्वीप रचि राखा ❀ पुरुषेच्छा ते सब अभिलाखा ॥

सबै द्वीप अगरहि रह छाई ❀ अगर बासना अधिक सुहाई ॥

द्वितिये शब्द सन्त परकासा ❀ निकसे कूर्मचरण धरिआशा ॥

तीजे शब्द भयो उच्चारा ❀ ज्ञाननाम सुत उपज सारा ॥

चरण टेकि सम्मुख हूँ रहेऊ ❀ आज्ञा पुरुष द्वीप तिन्ह लहेऊ ॥

चौथे शब्द भयो पुनि जबहीं ❀ नाम बिबेक प्रकट सुत तबहीं ॥

आज्ञा पुरुष किय द्वीप निवासा ❀ पँचयें शब्द तेज परकासा ॥

पंच प्रांसव निज शब्द उचारा ❀ काल निरंजन लिय औतारा ॥

तेज सुअंगकाल हूँ आवा ❀ ताते जीवन कहँ सन्तावा ॥

जीया अंश पुरुष को आहीं ❀ आदि अन्त कोउ जानत नाही ॥
 छठयें शब्द पुरुषमुख भाषा ❀ उपजे सहज नाम अभिलाषा ॥
 सतयें शब्द भयो सन्तोषा ❀ दीन्हों द्वीप पुरुष परतोषा ॥
 अठयें शब्द पुरुष उच्चारा ❀ सुसस्वभाव द्वीप बैठारा ॥
 नवयें शब्द अनन्द अपारा ❀ दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
 एकादशे नाम निष्कामा ❀ द्वादश भोजल रंगि अनामा ॥
 सुतहि अचिन्त त्रयोदश जानो ❀ शब्द चतुर्दश प्रेम बखानो ॥
 शब्द पञ्चदश दीनदयाला ❀ षोडशयें सुत धीर्य रसाला ॥
 सत्रहयें भो योग सन्तायन ❀ एक नाल षोडश सुत पायन ॥
 शब्दहि ते भयो सुतन्ह अकारा ❀ शब्दहि ते सुलोक विस्तारा ॥
 द्वीप-द्वीप अंशन्ह बैठारा ❀ अग्र अमीदिहु अंश अहारा ॥
 अंशन्हि शोभा कला अनन्ता ❀ होत तहाँ सुख सदा बसन्ता ॥
 सबसुत करहि पुरुष को ध्याना ❀ अमी अहार अधिक सुखमाना ॥

छंद-द्वीपकरहि अनन्त शोभा नाहि बरणत सो बनै ।

अमित कला अपार अद्भुत सुतन्ह शोभा सो गनै ॥

पुरुष के उजियार से रहै सबै द्वीप अँजोर हो ।

इक रोम पुरुष प्रकाश में लहि सूर्य चन्द्र करोर हो ॥ १२ ॥

सो०-सतपुर आनन धाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।

हंसन को विश्राम, पुरुष दरश अचवन सुधा ॥ ११ ॥

चौपाई ।

यहिविधि बहुत दिवस गयोबीती ❀ तेहि पाछे ऐसी भई रीती ॥

धर्मराय अस कीन्ह तमासा ❀ सो चरित्र सुनिये ध्रमदासा ॥

युग चौंसठि तिन्ह सेवा लाये ❀ पगयक ठाढ़ पुरुष चितलाये ॥

पुरुष अवाज उठी नभ बानी ❀ कहाँ जानिये तुम सबठानी ॥

कहैं धर्म तब शीश नवाई ❀ देहु ठौर तहँ बैठों जाई ॥

आज्ञा कियो जाहु सुत तहाँ ❀ मानसरोवर द्वीप है जहाँ ॥

चल्यो धर्म तब मानसरोवर ❀ बहुत हर्ष चित करत कलोलर ॥
 मानसरोवर आयो जबहीं ❀ बहुरि पुरुष ध्यावत भयो तबहीं ॥
 एकहि पगु तहँ सेवा लावा ❀ पुरुष दयानिधि बचन सुनावा ॥
 जाहु सहज तुम धर्म के पासा ❀ अस कस ध्यान कीन परकासा ॥
 चले सहज पुनि शीश नवाई ❀ धर्मदास सो पहुँचे आई ॥
 कहैं सहज सुनु भ्राता मेरो ❀ सेवा पुरुष मानि लियो तेरो ॥
 अब का माँगसि सो कहु मोहीं ❀ पुरुष अवाज दीन्ह असतोहीं ॥

धर्मराय बचन ।

सुनो सहज तुम मोरे भाई ❀ करहु पुरुष सों बिनती जाई ॥
 इतना ठाम न मोहिं सुहाई ❀ अब मोहिं देहु बकसि ठकुराई ॥
 मोरे चित अस भव अनुरागा ❀ देहु देश मोहिं करहु सुभागा ॥
 की मोहिं देहु लोक अधिकारा ❀ की मोहिं देहु देश इक न्यारा ॥
 चले सहज सुनि धर्मनि बाता ❀ जाय पुरुष सों कह बिख्याता ॥
 जो कछु धर्मराय अभिलाषा ❀ तैसे सहज सुनायो भाषा ॥

छंद—सुनि सहज के बचन तबहीं गिरा पुरुष उचारेऊ ।

धर्म से सन्तुष्ट हैं हम बचन मम हिय धारेऊ ॥

मानसर तेहि ठाम दीन्हों शून्य देश बसावहू ।

करहु रचना जाय तहँवाँ सहज बचन सुनावहू ॥ १३ ॥

सो०—सहज जाहु तुम ताहि, अस कहि बेगि सुनावहू ।

दियो शून्य हम वाहि, रचना करहु बनाइ कै ॥ १२ ॥

चोपाई ।

जाय सहज सों बचन सुनावा ❀ सत्य पुरुष जो कहि समुझावा ॥
 सुनत सुबचन धर्म हरषाने ❀ कछुक हर्ष कछु बिस्मय आने ॥
 कहैं धर्म सुनु सहज पियारा ❀ कैसे रचिकेहि बिधि बिस्तारा ॥
 मो कहँ देहु साज प्रभु सोई ❀ रचना जगत जाहि ते होई ॥

जीया अंश पुरुष को आहीं ❀ आदि अन्त कोउ जानत नाहीं ॥
 छठयें शब्द पुरुषमुख भाषा ❀ उपजे सहज नाम अभिलाषा ॥
 सतयें शब्द भयो सन्तोषा ❀ दीन्हों द्वीप पुरुष परतोषा ॥
 अठयें शब्द पुरुष उच्चार ❀ सुसस्वभाव द्वीप बैठारा ॥
 नवयें शब्द अनन्द अपारा ❀ दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
 एकादशे नाम निष्कामा ❀ द्वादश भो जल रंगि अनामा ॥
 सुतहि अचिन्त त्रयोदश जानो ❀ शब्द चतुर्दश प्रेम बखानो ॥
 शब्द पञ्चदश दीनदयाला ❀ षोडशयें सुत धीर्य रसाला ॥
 सत्रहयें भो योग सन्तायन ❀ एक नाल षोडश सुत पायन ॥
 शब्दहि ते भयो सुतन्ह अकारा ❀ शब्दहि ते सुलोक विस्तारा ॥
 द्वीप-द्वीप अंशन्ह बैठारा ❀ अग्र अमीदिहु अंश अहारा ॥
 अंशन्हि शोभा कला अनन्ता ❀ होत तहाँ सुख सदा बसन्ता ॥
 सबसुत करहि पुरुष को ध्याना ❀ अमी अहार अधिक सुखमाना ॥

छंद-द्वीपकरहि अनन्त शोभा नाहि बरणत सो बनै ।

अमित कला अपार अद्भुत सुतन्ह शोभा सो गनै ॥

पुरुष के उजियार से रहै सबै द्वीप अँजोर हो ।

इक रोम पुरुष प्रकाश में लहि सूर्य चन्द्र करोर हो ॥ १२ ॥

सो०-सतपुर आनन धाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।

हंसन को विश्राम, पुरुष दरश अचवन सुधा ॥ ११ ॥

चौपाई ।

यहिबिधि बहुत दिवस गयोबीती ❀ तेहि पाछे ऐसी भई रीती ॥
 धर्मराय अस कीन्ह तमासा ❀ सो चरित्र सुनिये भ्रमदासा ॥
 युग चौंसठि तिन्ह सेवा लाये ❀ पगयक ठाढ़ पुरुष चितलाये ॥
 पुरुष अवाज उठी नभ बानी ❀ कहाँ जानिये तुम सबठानी ॥
 कहैं धर्म तब शीश नवाई ❀ देहु ठौर तहँ बैठों जाई ॥
 आब्रा कियो जाहु सुत तहाँ ❀ मानसरोवर द्वीप है जहाँ ॥

चल्यो धर्म तब मानसरोवर ❀ बहुत हर्ष चित करत कलोलर ॥
 मानसरोवर आयो जबहीं ❀ बहुरि पुरुष ध्यावत भयो तबहीं ॥
 एकहि पगु तहँ सेवा लावा ❀ पुरुष दयानिधि बचन सुनावा ॥
 जाहु सहज तुम धर्म के पासा ❀ अस कस ध्यान कीन परकासा ॥
 चले सहज पुनि शीश नवाई ❀ धर्मदास सो पहुँचे आई ॥
 कहैं सहज सुनु भ्राता मेरो ❀ सेवा पुरुष मानि लियो तेरो ॥
 अब का माँगसि सो कहु मोहीं ❀ पुरुष अवाज दीन्ह असतोहीं ॥

धर्मराय वचन ।

सुनो सहज तुम मोरे भाई ❀ करहु पुरुष सों बिनती जाई ॥
 इतना ठाम न मोहिं सुहाई ❀ अब मोहिं देहु बकसि ठकुराई ॥
 मोरे चित अस भव अनुरागा ❀ देहु देश मोहिं करहु सुभागा ॥
 की मोहिं देहु लोक अधिकारा ❀ की मोहिं देहु देश इक न्यारा ॥
 चले सहज सुनि धर्मनि बाता ❀ जाय पुरुष सों कह बिख्याता ॥
 जो कछु धर्मराय अभिलाषा ❀ तैसे सहज सुनायो भाषा ॥

छंद—सुनि सहज के बचन तबहीं गिरा पुरुष उचारेऊ ।

धर्म से सन्तुष्ट हैं हम बचन मम हिय धारेऊ ॥

मानसर तेहि ठाम दीन्हों शून्य देश बसावहू ।

करहु रचना जाय तहँवाँ सहज बचन सुनावहू ॥ १३ ॥

सो०—सहज जाहु तुम ताहि, अस कहि बेगि सुनावहू ।

दियो शून्य हम वाहि, रचना करहु बनाइ कै ॥ १२ ॥

चोपाई ।

जाय सहज सों बचन सुनावा ❀ सत्य पुरुष जो कहि समुझावा ॥
 सुनत सुबचन धर्म हरषाने ❀ कछुक हर्ष कछु बिस्मय आने ॥
 कहैं धर्म सुनु सहज पियारा ❀ कैसे रचि केहि विधि बिस्तारा ॥
 मो कहँ देहु साज प्रभु सोई ❀ रचना जगत जाहि ते होई ॥

चले सहज सुपुरुष पहुँ गयऊ ❀ समाचार सब बरणि सुनयऊ ॥
 आज्ञा दियो पुरुष तेहिं बारा ❀ जाहु सुसहज धर्म दरबारा ॥
 कूम उदर महुँ है सब साजा ❀ शोधै धर्म करै सब काजा ॥
 बिनती करो कूर्म सों जाई ❀ माँगि लेहु तेहि शीश नवाई ॥
 गयो सहज पुनि धर्म के पासा ❀ आज्ञा पुरुष कीन परकासा ॥
 जाय कूर्म ढिग माथ नवावहु ❀ करिहैं कृपा बहुत तब पावहु ॥
 चलि भो धर्म हर्ष तब बाढ़यो ❀ मन महुँ कीन गुनावन गाढ़यो ॥
 जाय कूर्म के सनमुख भयऊ ❀ दंड प्रणाम एक नहिं कियऊ ॥
 भयो सरोष कोप भ्रमधीरा ❀ जाय कूर्म से सम्मुख भीरा ॥
 अमिय सरूप कूर्म सुखदाई ❀ तप तनतनको अतिशितलाई ॥
 कालै कीन्ह उदर नख घाता ❀ उदर ते निकरे पवन अघाता ॥
 निसरयो नीर अग्नि शशि शूरा ❀ निसरयो नभ ढाकन महिथूरा ॥
 मीन शेष ब्रह्मा महि बम्भन ❀ पुनि पृथ्वी को भयो अरम्भन ॥
 ब्राह्मदन्त रहु महि के मूला ❀ पवन प्रचंड कियो अस्थूला ॥
 तारागण ब्रह्मांड सुवेशा ❀ कूर्म उदरते सकल प्रवेशा ॥
 क्षीरताय जस परै मलाई ❀ तस जलपर ओहनि उतराई ॥
 अंडसरूप अकाश को जानो ❀ ताहि बीच पृथ्वी अनुमानो ॥
 कूर्म उदर लखि बाढ़त पानी ❀ तापर ब्रह्म शेष को थानी ॥
 शेष शीश पर पृथ्वी आही ❀ फिरि तम कूर्म अंडके माही ॥
 आदिकूर्म भूलोक मँझारा ❀ तिन्ह पुनि पुरुष ध्यान अनुसारा ॥
 निरङ्कार कीन्हें बरिआई ❀ काल कलाधरि मोपहुँ आई ॥
 उदर बिदार कीन्ह तिन्ह मोरा ❀ आज्ञा जानि कीन कछु थोरा ॥
 पुरुष अवाज कीन्ह तेहि बारा ❀ लहुर बन्धु वह आहि तुम्हारा ॥
 आहै यही बड़े की रीती ❀ ये गुण ठाम करै बहुप्रीती ॥
 पुरुष बचन सुनि कूर्म अनन्दा ❀ अमिय रूप सो आनंदकन्दा ॥
 पुरुष ध्यान सो कीन्ह निरंजन ❀ युग अनेक कियो सेवा सज्जन ॥

स्वारथवश तिन्ह सेवा लाई ❀ करि रचना बैठे पछिताई ॥
कवनि भाँति कस करों उपाई ❀ केहि बिधि रचों शरीर बनाई ॥

छंद-दयानिधि सतपुरुष समरथ बस सुसेवा के भये ।
बहुरि भाष्यो सहजसेती कहु कहाँ याचतनये ॥
जाहु सहज निरञ्जना पहुँ देइ जो कछु माँगहू ।
करहु रचना पुरुष बाचा छलमता सब त्यागहू ॥ १४ ॥

सो०-चले सहज शिरनाय, जबहिं पुरुष आज्ञा कियो ।
तहाँ सो पहुँचे जाय, जहाँ निरंजन ठाढ़ रहु ॥ १३ ॥

चौपाई ।

देखत सहज धर्म हरषाना ❀ सेवा वश्य पुरुष तिन्ह जाना ॥
कहैं सहज सुनु धर्मनिराई ❀ केहि कारण सेवा अधिकाई ॥
कूर्म उदर से जो कछु आवा ❀ सो तोहिं दीन पुरुष फुरमावा ॥
तीनों लोक राज तोहिं दीना ❀ रचनारचहु होहु जनि भीना ॥
तबहिं निरंजन बिनती लाई ❀ कैसे सृष्टि करों मैं भाई ॥
पुरुषहिं करहु जोरि युगपानी ❀ देहु सुबीज अमर सहिदानी ॥
मैं सेवक दुतिया नहिं ठानी ❀ ध्यानपुरुषकोनिशिदिनजानी ॥
सहज कह्यो पुनि पुरुषहिं जाई ❀ जस कछु कह्यो निरंजन राई ॥
गयो सहजनिज द्वीपसुखासन ❀ जबहीं पुरुषदीन्ह अनुशासन ॥
सेवावश सतपुरुष दयाला ❀ गुणऔगुण नहिंचित्तकृपाला ॥
इच्छा कीन पुरुष तेहिवारा ❀ इच्छाते कन्या अवतारा ॥
अष्ट तासु कन्या है आई ❀ बामे अंग ठाढ़ भइ जाई ॥
माथ नवाय पुरुष से कहई ❀ आज्ञा पुरुष मोहिं कस अहई ॥
तबहिं पुरुष आज्ञा अनुसारा ❀ पुत्री जाहु धर्म दरबारा ॥
देय बस्तु सो लेहु सँभारी ❀ रचहु धर्म मिलि उत्पतिबारी ॥
दीन्ह्यों बीज जीव सुनु सोई ❀ नाम सुहृज्जीव कह सोई ॥

जीया अंश पुरुष को आहीं ❀ आदि अन्त कोउ जानत नाहीं ॥
 छठयें शब्द पुरुषमुख भाषा ❀ उपजे सहज नाम अभिलाषा ॥
 सतयें शब्द भयो सन्तोषा ❀ दीन्हों द्वीप पुरुष परतोषा ॥
 अठयें शब्द पुरुष उच्चारा ❀ सुसस्वभाव द्वीप बैठारा ॥
 नवयें शब्द अनन्द अपारा ❀ दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
 एकादशे नाम निष्कामा ❀ द्वादश भोजल रंगि अनामा ॥
 सुतहि अचिन्त त्रयोदश जानो ❀ शब्द चतुर्दश प्रेम बखानो ॥
 शब्द पञ्चदश दीनदयाला ❀ षोडशयें सुत धीर्य रसाला ॥
 सत्रहयें भो योग सन्तायन ❀ एक नाल षोडश सुत पायन ॥
 शब्दहि ते भयो सुतन्ह अकारा ❀ शब्दहि ते सुलोक विस्तारा ॥
 द्वीप-द्वीप अंशन्ह बैठारा ❀ अग्र अमीदिहु अंश अहारा ॥
 अंशन्हि शोभा कला अनन्ता ❀ होत तहाँ सुख सदा बसन्ता ॥
 सबसुत करहि पुरुष को ध्याना ❀ अमी अहार अधिक सुखमाना ॥

छंद-द्वीपकरहि अनन्त शोभा नाहि बरणत सो बनै ।

अमित कला अपार अद्भुत सुतन्ह शोभा सो गनै ॥

पुरुष के उजियार से रहै सबै द्वीप अँजोर हो ।

इक रोम पुरुष प्रकाश में लहि सूर्य चन्द्र करोर हो ॥ १२ ॥

सो०-सतपुर आनन धाम, सोग मोह दुख तहँ नहीं ।

हंसन को विश्राम, पुरुष दरश अचवन सुधा ॥ ११ ॥

चौपाई ।

यहिबिधि बहुत दिवस गयोबीती ❀ तेहि पाछे ऐसी भई रीती ॥
 धर्मराय अस कीन्ह तमासा ❀ सो चरित्र सुनिये ध्रमदासा ॥
 युग चौंसठि तिन्ह सेवा लाये ❀ पगयक ठाढ़ पुरुष चितलाये ॥
 पुरुष अवाज उठी नभ बानी ❀ कहाँ जानिये तुम सबठानी ॥
 कहैं धर्म तब शीश नवाई ❀ देहु ठौर तहँ बैठों जाई ॥
 आज्ञा कियो जाहु सुत तहाँ ❀ मानसरोवर द्वीप है जहाँ ॥

चल्यो धर्म तब मानसरोवर ❀ बहुत हर्ष चित करत कलोलर ॥
 मानसरोवर आयो जबहीं ❀ बहुरि पुरुष ध्यावत भयो तबहीं ॥
 एकहि पगु तहँ सेवा लावा ❀ पुरुष दयानिधि बचन सुनावा ॥
 जाहु सहज तुम धर्म के पासा ❀ अस कस ध्यान कीन परकासा ॥
 चले सहज पुनि शीश नवाई ❀ धर्मदास सो पहुँचे आई ॥
 कहैं सहज सुनु भ्राता मेरो ❀ सेवा पुरुष मानि लियो तेरो ॥
 अब का माँगसि सो कहु मोहीं ❀ पुरुष अवाज दीन्ह असतोहीं ॥

धर्मराय वचन ।

सुनो सहज तुम मोरे भाई ❀ करहु पुरुष सों बिनती जाई ॥
 इतना ठाम न मोहिं सुहाई ❀ अब मोहिं देहु बकसि ठकुराई ॥
 मोरे चित अस भव अनुरागा ❀ देहु देश मोहिं करहु सुभागा ॥
 की मोहिं देहु लोक अधिकारा ❀ की मोहिं देहु देश इक न्यारा ॥
 चले सहज सुनि धर्मनि बाता ❀ जाय पुरुष सों कह बिख्याता ॥
 जो कछु धर्मराय अभिलाषा ❀ तैसे सहज सुनायो भाषा ॥

छंद—सुनि सहज के बचन तबहीं गिरा पुरुष उचारेऊ ।

धर्म से सन्तुष्ट हैं हम बचन मम हिय धारेऊ ॥

मानसर तेहि ठाम दीन्हों शून्य देश बसावहू ।

करहु रचना जाय तहँवाँ सहज बचन सुनावहू ॥ १३ ॥

सो०—सहज जाहु तुम ताहि, अस कहि बेगि सुनावहू ।

दियो शून्य हम वाहि, रचना करहु बनाइ कै ॥ १२ ॥

चोपाई ।

जाय सहज सों बचन सुनावा ❀ सत्य पुरुष जो कहि समुझावा ॥
 सुनत सुबचन धर्म हरषाने ❀ कछुक हर्ष कछु बिस्मय आने ॥
 कहैं धर्म सुनु सहज पियारा ❀ कैसे रचिकेहि बिधि बिस्तारा ॥
 मो कहँ देहु साज प्रभु सोई ❀ रचना जगत जाहि ते होई ॥

चले सहज सुपुरुष पहुँ गयऊ ❀ समाचार सब बरणि सुनयऊ ॥
 आज्ञा दियो पुरुष तेहिं बारा ❀ जाहु सुसहज धर्म दरबारा ॥
 कूर्म उदर महँ है सब साजा ❀ शोधै धर्म करै सब काजा ॥
 बिनती करो कूर्म सों जाई ❀ माँगि लेहु तेहि शीश नवाई ॥
 गयो सहज पुनि धर्म के पासा ❀ आज्ञा पुरुष कीन परकासा ॥
 जाय कूर्म ढिग माथ नवावहु ❀ करिहैं कृपा बहुत तब पावहु ॥
 चलि भो धर्म हर्ष तब बाढ़्यो ❀ मन महँ कीन गुनावन गाढ़्यो ॥
 जाय कूर्म के सनमुख भयऊ ❀ दंड प्रणाम एक नहिं कियऊ ॥
 भयो सरोष कोप ध्रमधीरा ❀ जाय कूर्म से सम्मुख भीरा ॥
 अमिय सरूप कूर्म सुखदाई ❀ तप तनतनको अतिशितलाई ॥
 कालै कीन्ह उदर नख घाता ❀ उदर ते निकरे पवन अघाता ॥
 निसरयो नीर अग्नि शशि शूरा ❀ निसरयो नभ ढाकन महिथूरा ॥
 मीन शेष ब्रह्मा महि बम्भन ❀ पुनि पृथ्वी को भयो अरम्भन ॥
 ब्राह्मदन्त रहु महि के मूला ❀ पवन प्रचंड कियो अस्थूला ॥
 तारागण ब्रह्मांड सुवेशा ❀ कूर्म उदरते सकल प्रवेशा ॥
 क्षीरताय जस परै मलाई ❀ तस जलपर ओहनि उतराई ॥
 अंडसरूप अकाश को जानो ❀ ताहि बीच पृथ्वी अनुमानो ॥
 कूर्म उदर लखि बाढ़त पानी ❀ तापर ब्रह्म शेष को थानी ॥
 शेष शीश पर पृथ्वी आही ❀ फिरि तम कूर्म अंडके माही ॥
 आदिकूर्म भूलोक मँभारा ❀ तिन्ह पुनि पुरुष ध्यान अनुसारा ॥
 निरङ्कार कीन्हें बरिआई ❀ काल कलाधरि मोपहँ आई ॥
 उदर बिदार कीन्ह तिन्ह मोरा ❀ आज्ञा जानि कीन कछु थोरा ॥
 पुरुष अवाज कीन्ह तेहि बारा ❀ लहुर बन्धु वह आहि तुम्हारा ॥
 आहै यही बड़े की रीती ❀ ये गुण ठाम करै बहु प्रीती ॥
 पुरुष बचन सुनि कूर्म अनन्दा ❀ अमिय रूप सो आनँद कन्दा ॥
 पुरुष ध्यान सो कीन्ह निरंजन ❀ युग अनेक कियो सेवा सज्जन ॥

स्वारथवश तिन्ह सेवा लाई ❀ करि रचना बैठे पछिताई ॥
कवनि भाँति कस करों उपाई ❀ केहि बिधि रचों शरीर बनाई ॥

छंद-दयानिधि सतपुरुष समरथ बस सुसेवा के भये ।

बहुरि भाष्यो सहजसेती कहु कहाँ याचतनये ॥

जाहु सहज निरञ्जना पहुँ देइ जो कछु माँगहू ।

करहु रचना पुरुष बाचा छलमता सब त्यागहू ॥ १४ ॥

सो०-चले सहज शिरनाय, जबहिं पुरुष आज्ञा कियो ।

तहाँ सो पहुँचे जाय, जहाँ निरंजन ठाढ़ रहु ॥ १३ ॥

चौपाई ।

देखत सहज धर्म हरषाना ❀ सेवा वश्य पुरुष तिन्ह जाना ॥

कहैं सहज सुनु धर्मनिराई ❀ केहि कारण सेवा अधिकाई ॥

कूर्म उदर से जो कछु आवा ❀ सो तोहिं दीन पुरुष फुरमावा ॥

तीनों लोक राज तोहिं दीना ❀ रचनारचहु होहु जनि भीना ॥

तबहिं निरंजन बिनती लाई ❀ कैसे सृष्टि करौं मैं भाई ॥

पुरुषहिं करहु जोरि युगपानी ❀ देहु सुबीज अमर सहिदानी ॥

मैं सेवक दुतिया नहिं ठानी ❀ ध्यानपुरुषकोनिशिदिनजानी ॥

सहज कह्यो पुनि पुरुषहिं जाई ❀ जस कछु कह्यो निरंजन राई ॥

गयो सहजनिज द्वीपसुखासन ❀ जबहीं पुरुषदीन्ह अनुशासन ॥

सेवावश सतपुरुष दयाला ❀ गुणऔगुण नहिंचित्तकृपाला ॥

इच्छा कीन पुरुष तेहिबारा ❀ इच्छाते कन्या अवतारा ॥

अष्ट तासु कन्या है आई ❀ बामे अंग ठाढ़ भइ जाई ॥

माथ नवाय पुरुष से कहई ❀ आज्ञा पुरुष मोहिं कस अहई ॥

तबहिं पुरुष आज्ञा अनुसारा ❀ पुत्री जाहु धर्म दरबारा ॥

देय वस्तु सो लेहु सँभारी ❀ रचहु धर्म मिलि उत्पतिबारी ॥

दीन्हों बीज जीव सुनु सोई ❀ नाम सुहृद्जीव कह सोई ॥

जिवसँग सोहं दूजा नाही ❀ जीव सुअंश पुरुष को आहीं ॥
 शक्ति तीनि प्रभु तब उत्पाने ❀ उलघनि चेतनि अभया ठाने ॥
 यह सब लीन्हों आदि कुमारी ❀ मानसरोवर चलिभवनारी ॥
 कामिनि आवत देखेसि जबहीं ❀ धर्मराय इतरानो तबहीं ॥
 कला देखि अष्टाङ्गी केरा ❀ धर्मराय तोह दृढ़कै हेरा ॥
 कला उदोत अन्त कछु नाही ❀ कला पलाधै निरखै ताहीं ॥
 निरखत धर्म भयो अधियारा ❀ अंग अंग जब युवति निहारा ॥
 धर्मराय कन्या कहँ ग्रासा ❀ कालसुभाव देखि भ्रमदासा ॥
 ग्राससुकीन काल अन्याई ❀ तब कन्याचित बिस्मयआई ॥
 कन्या ध्यान कीन तेहिबारा ❀ काल निरंजन कीन अहारा ॥
 तबहिं पुरुष चित दायाआई ❀ काल कठिन यह भा अन्याई ॥

छंद-कीन पुरुष तिवान तेहि क्षण मेटि डारो काल हो ।

कठिन काल कराल जीवन बहुत करहि बिहाल हो ॥

वाहि नहिं मेटत बनै अब भयो नाले षोड़सा ।

एक मेटत सबै मेटै बचन डोल अमोलसा ॥ १५ ॥

सो०-डोलै बचन हमार, मेटत इहि कहँ नहिं बनै ।

करिय सो यतन बिचार, दरश मोर अब ना लहै ॥ १४ ॥

चौपाई ।

योग जीति तुम बेगि सिधारो ❀ धर्मराय कहँ मारि निकारो ॥
 मानसरोवर रहै न पावै ❀ अब यहि देश काल नहिं आवै ॥
 जाइ सु रहो धर्म वहि देशा ❀ स्वर्ग नूलोक पताल नरेशा ॥
 धर्मनि उदर माँह है नारी ❀ सो कहिहो निज शब्दसँभारी ॥
 उदर फारि कै बाहर आवै ❀ कर्म उदर बिदारि फल पावै ॥
 धर्मराय सों कहहु समोई ❀ उहै नारि फिरि तोहरी जोई ॥
 योगिजीति चलिभो शिरनाई ❀ मानसरोवर पहुँचे जाई ॥

योगजीति कहँ देखेसि जबहीं ❀ अति भा काल भयङ्कर तबहीं ॥
 पूँछै धर्म सुनो रे भाई ❀ कौन काज आयहु यहि ठाई ॥
 योगजीति अस कहा बिचारी ❀ अहो धर्म तुम ग्रासेहु नारी ॥
 आज्ञा पुरुष दीन यह मोहीं ❀ इहाँ ते बेगि निकालों तोहीं ॥
 योगजीति कसे सो कहिया ❀ नारी कहा उदर में रहिया ॥
 उदर फारि कै आवहु बाहर ❀ पुरुष तेज सुमिरो यहि ठाहर ॥
 यह कहि योगजीति कृत ध्याना ❀ पुरुष प्रभाव तेज उर आना ॥

छंद—योगिजीति फिरिकादि दीन्हों परचो लोकते न्यारहो ।

भरचो त्रासित पुरुष डरते बहुरि उख्यो सँभार हो ॥

निकसि कन्या उदर से पुनि देखि धर्महि अति डरी ।

अब नाहिं देखौ देश वह कहु कवनि विधि इहवाँ परी ॥ १६ ॥

सो०—कामिनि रही लजाय, त्रासित काल के डर अधिक ।

रही सो शीश नवाय, आग पाछ चितवै खड़ी ॥ १५ ॥

चौपाई ।

कहैं धर्म सुनु आदि कुमारी ❀ कहा त्रास तुम करहु हमारी ॥
 पुरुष रचा तोहिं हमरे काजा ❀ एकम होय करहु उपराजा ॥
 हमहैं पुरुष तुमहिं हौ नारी ❀ अब जनि डरहु त्रास ममभारी ॥
 कह कन्या कस बोलहु बानी ❀ भ्राता जेठ प्रथम हम जानी ॥
 अब मैं पुत्री भई तुम्हारी ❀ जब ते उदर माँह लियो डारी ॥
 तुम तौ अहौ हमारे ताता ❀ जेठ बन्धु प्रथमहि को नाता ॥
 निर्मल दृष्टिहि चितवहु मोहीं ❀ नाहित पाप होय बड़ तोहीं ॥
 कहैं निरञ्जन सुनहु भवानी ❀ यह मैं तोहिं कहौ सहिदानी ॥
 पाप पुण्य डर मैं नहिं डरता ❀ पाप पुण्य के हमहीं करता ॥
 पाप पुण्य हमहीं से होई ❀ लेखा मोर न लेहै कोई ॥
 पाप पुण्य हम करब पसारा ❀ जो बाँझै सो होइ हमारा ॥

ताते तोहिं कहौं समुझाई ❀ सिख हमार लेहु शीश चढ़ाई
 पुरुष दीन तोहिं हम कह जानी ❀ मानहुँ कहा हमार भवानी
 कन्या विहँसि कहै अस बाता ❀ इकमत होइ दुनो रँगराता
 रहसि बचन बोलै मृदुबानी ❀ नारिबिपुलमतिरतिविधिठानी।

छंद—नाहिं कन्या के हती भग चरित कीन निरंजना ।

बेधि किय भगद्वार ततक्षण गाढ़ उत्पति गंजना ॥

नख रेख से शोणित चलेउ किहु कौशबस्र अरम्भना ।

आदिउत्पति सुनहु धर्मणि कोउ न जानत भर्मना ॥ १७ ॥

सो०—उत्पति आदि प्रकास, यहि विधिते परसंगभा ।

कीन्हो भोग बिलास, इकमत कन्या काल होइ ॥ १६ ॥

चौपाई ।

तेहि पाछे ऐसे भा लेखा ❀ धर्मदास चित करहु परेखा ॥
 अग्नि पवन जल मही अकासा ❀ कूर्म उदर ते भया प्रकासा ॥
 पाँचौं अंश ताहि सन लीन्हा ❀ गुण तीनों जो सक सों लीन्हा ॥
 इहिविधि भयो तत्त्व गुण तीनी ❀ धर्मराय तब रचना कीनी ॥
 गुणतनुसमकै देविहि दीन्हा ❀ आपन अंश प्रकट चहै लीन्हा ॥
 बुन्द तीनि कन्या भग डारा ❀ तासँग तीनों अंश सुधारा ॥
 प्रथम बुन्द ते ब्रह्मा भयऊ ❀ रजगुण पंचतत्त्व सो दयऊ ॥
 दूज बुन्द बिष्णु जो भयऊ ❀ सतगुण पंचतत्त्व तिन्ह पयऊ ॥
 तीजे बुन्द रुद्र उत्पानी ❀ तमगुण पंचतत्त्व तेहि सानी ॥
 पंचतत्त्व गुण तीनि खभीरा ❀ तीनों जन की रची शरीरा ॥
 ताते फिरि फिरि परलै होई ❀ आदि भेद जानै नहिं कोई ॥
 कहैं धर्म कामिनि सुनु बानी ❀ जो मैं कहौं लेहु सो मानी ॥
 जीव बीज आहै तोहिं पासा ❀ सो बर रचना करहु प्रकासा ॥
 त्रय सुत सौं पि तोहिं कहैं दीन्हा ❀ अब हम तासों होब भीना ॥

॥ राज करहु तुम लै तिहुँ बारा ❀ भेद न कहिहौ काहु हमारा ॥
 मोर दरश तिय सुत नहिँ पैहैं ❀ जो मोहिं खोजत जन्म सिरैहैं ॥
 अस कहि मता दृढ़ायो जानी ❀ पुरुष भेद कोई पाव न प्रानी ॥
 त्रय सुत जब होइहि ब्रधमाना ❀ सिन्धु मथन पठयहु सुखदाना ॥

छंद—यह कह्यो बहुत बुझाइ देविहि गुप्त मो पुनि आप सो ।

लै शून्य गुफा निवास कीन्हों भेद लहइ को तासुको ॥

वह गुप्त भा पुनि संग सबके मन निरंजन जानिये ।

मन पुरुष भेद उच्छेद कै सोई व्यास परगट आनिये ॥१८॥

सो०—जीव भयो मति हीन, परसि अंग सो काल के ।

जन्म जन्म भय खीन, मुरचा कर्म विपाक के ॥१७॥

साखी—जिवन्ह सतावै काल नाना कर्म लगाय कै ।

आप चला है चाल कष्ट देइ पुनि जीव कहँ ॥१८॥

चौपाई ।

त्रय बालक पुनि भयो सयाने ❀ पठयो जननी सिन्धु मथाने ॥
 बालक माते खेल खेलारी ❀ सिन्धु मथन नहिँ गयो खरारी ॥
 तेहि अन्तर कस भयो तमासा ❀ सो चरित्र बूझहु ध्रमदासा ॥
 योग अधारि निरंजन राई ❀ पवन अरम्भ रहे बहुताई ॥
 त्यागन पवन रहित तेहि कीन्हा ❀ निसरत श्वास वेदसँग दीन्हा ॥
 श्वास संग आयो सो वेदा ❀ बिरला कोइ जानै यह भेदा ॥
 अस्तुति कान्ह वेद पुनि ताहाँ ❀ आज्ञा का मोहिं निर्गुण नाहाँ ॥
 कह्यो जायकरु सिन्धु निवासा ❀ जो भेंटै जैहो तेहि पासा ॥
 उठै अवाज तहाँ नहिँ देखा ❀ ज्योति अंग देखलावै भेखा ॥
 चल्यो वेद पुनि तेज उपानी ❀ तेज अंत पुनि विष संधानी ।
 चलि भे दोऊ वेद पगु धारे ❀ धर्मराय तब बुक्ति विचारे ॥
 गुप्त आनि देविहि समुझावा ❀ सिन्धु मथन कहँ का बिलमावा ॥

जिवसँग सोहं दूजा नाही ❀ जीव सुअंश पुरुष को आहीं ॥
 शक्ति तीनि प्रभु तब उत्पाने ❀ उलघनि चेतनि अभया ठाने ॥
 यह सब लीन्हों आदि कुमारी ❀ मानसरोवर चलिभवनारी ॥
 कामिनि आवत देखेसि जबहीं ❀ धर्मराय इतरानो तबहीं ॥
 कला देखि अष्टाङ्गी केरा ❀ धर्मराय तोह दृढ़कै हेरा ॥
 कला उदोत अन्त कछु नाही ❀ कला पलाधै निरखै ताहीं ॥
 निरखत धर्म भयो अँधियारा ❀ अंग अंग जब युवति निहारा ॥
 धर्मराय कन्या कहँ ग्रासा ❀ कालसुभाव देखि भ्रमदासा ॥
 ग्राससुकीन काल अन्याई ❀ तब कन्याचित बिस्मयआई ॥
 कन्या ध्यान कीन तेहिबारा ❀ काल निरंजन कीन अहारा ॥
 तबहिँ पुरुष चित दायाआई ❀ काल कठिन यह भा अन्याई ॥

छंद—कीन पुरुष तिवान तेहि क्षण मेटि डारो काल हो ।

कठिन काल कराल जीवन बहुत करहि बिहाल हो ॥

वाहि नहिँ मेटत बनै अब भयो नाले षोड़सा ।

एक मेटत सबै मेटै बचन डोल अमोलसा ॥ १५ ॥

सो०—डोलै बचन हमार, मेटत इहि कहँ नहिँ बनै ।

करिय सो यतन विचार, दरश मोर अब ना लहै ॥ १४ ॥

चौपाई ।

योग जीति तुम बेगि सिधारो ❀ धर्मराय कहँ मारि निकारो ॥
 मानसरोवर रहै न पावै ❀ अब यहि देश काल नहिँ आवै ॥
 जाइ सु रहो धर्म वहि देशा ❀ स्वर्ग नृलोक पताल नरेशा ॥
 धर्मनि उदर माँह है नारी ❀ सो कहिहो निज शब्दसँभारी ॥
 उदर फारि कै बाहर आवै ❀ कर्म उदर बिदारि फल पावै ॥
 धर्मराय सों कहहु समोई ❀ उहै नारि फिरि तोहरी जोई ॥
 योगिजीति चलिभो शिरनाई ❀ मानसरोवर पहुँचे जाई ॥

योगजीति कहँ देखेसि जबहीं ❀ अति भा काल भयङ्कर तबहीं ॥
 पूँछै धर्म सुनो रे भाई ❀ कौन काज आयहु यहि ठाई ॥
 योगजीति अस कहा बिचारी ❀ अहो धर्म तुम ग्रासेहु नारी ॥
 आज्ञा पुरुष दीन यह मोहीं ❀ इहाँ ते बेगि निकालों तोहीं ॥
 योगजीति कसे सो कहिया ❀ नारी कहा उदर में रहिया ॥
 उदर फारि कै आवहु बाहर ❀ पुरुष तेज सुमिरौ यहि ठाहर ॥
 यह कहि योगजीति कृत ध्याना ❀ पुरुष प्रभाव तेज उर आना ॥

छंद—योगिजीति फिरि काढ़ि दीन्हों परयो लोकते न्यारहो ।

भरयो त्रासित पुरुष डरते बहुरि उख्यो सँभार हो ॥

निकसि कन्या उदर से पुनि देखि धर्महि अति डरी ।

अब नाहिं देखौं देश वह कहु कवनि विधि इहवाँ परी ॥ १६ ॥

सो०—कामिनि रही लजाय, त्रासित काल के डर अधिक ।

रही सो शीश नवाय, आग पाछ चितवै खड़ी ॥ १५ ॥

चौपाई ।

कहैं धर्म सुनु आदि कुमारी ❀ कहा त्रास तुम करहु हमारी ॥
 पुरुष रचा तोहिं हमरे काजा ❀ एकम होय करहु उपराजा ॥
 हमहैं पुरुष तुमहिं हौ नारी ❀ अब जनि डरहु त्रास ममभारी ॥
 कह कन्या कस बोलहु बानी ❀ भ्राता जेठ प्रथम हम जानी ॥
 अब मैं पुत्री भई तुम्हारी ❀ जब ते उदर माँह लियो डारी ॥
 तुम तौ अहो हमारे ताता ❀ जेठ बन्धु प्रथमहि को नाता ॥
 निर्मल दृष्टिहि चितवहु मोहीं ❀ नाहिं त पाप होय बड़ तोहीं ॥
 कहैं निरञ्जन सुनहु भवानी ❀ यह मैं तोहिं कहों सहिदानी ॥
 पाप पुण्य डर मैं नहिं डरता ❀ पाप पुण्य के हमहीं करता ॥
 पाप पुण्य हमहीं से होई ❀ लेखा मोर न लेहै कोई ॥
 पाप पुण्य हम करब पसारा ❀ जो बाँझै सो होइ हमारा ॥

ताते तोहिं कहौ समुझाई ❀ सिख हमार लेहु शीश चढ़ाई ॥
 पुरुष दीन तोहिं हम कह जानी ❀ मानहुँ कहा हमार भवानी ॥
 कन्या विहँसि कहै अस बाता ❀ इकमत होइ दुनो रँगराता ॥
 रहसि बचन बोलै मृदुबानी ❀ नारिबिपुलमतिरतिबिधिठानी ॥

छंद—नाहिं कन्या के हती भग चरित कीन निरंजना ।

बेधि किय भगद्वार ततक्षण गाढ़ उत्पति गंजना ॥

नख रेश से शोणित चलेउ किहु कौशबस्र अरम्भना ।

आदिउत्पति सुनहु धर्मणि कोउ न जानत भर्मना ॥ १७ ॥

सो०—उत्पति आदि प्रकास, यहि विधिते परसंगभा ।

कीन्हो भोग बिलास, इक मत कन्या काल होइ ॥ १६ ॥

चौपाई ।

तेहि पाछे ऐसे भा लेखा ❀ धर्मदास चित करहु परेखा ॥
 अग्नि पवन जल मही अकासा ❀ कूर्म उदर ते भया प्रकासा ॥
 पाँचौं अंश ताहि सन लीन्हा ❀ गुण तीनों जो सक सौं लीन्हा ॥
 इहिविधि भयो तत्त्व गुण तीनी ❀ धर्मराय तब रचना कीनी ॥
 गुणतनुसमकै देविहि दीन्हा ❀ आपन अंश प्रकट चहै लीन्हा ॥
 बुन्द तीनि कन्या भग डारा ❀ तासँग तीनों अंश सुधारा ॥
 प्रथम बुन्द ते ब्रह्मा भयऊ ❀ रजगुण पंचतत्त्व सो दयऊ ॥
 दूज बुन्द बिष्णु जो भयऊ ❀ सतगुण पंचतत्त्व तिन्ह पयऊ ॥
 तीजे बुन्द रुद्र उत्पानी ❀ तमगुण पंचतत्त्व तेहि सानी ॥
 पंचतत्त्व गुण तीनि खभीरा ❀ तीनों जन की रची शरीरा ॥
 ताते फिरि फिरि परलै होई ❀ आदि भेद जानै नहिं कोई ॥
 कहै धर्म कामिनि सुनु बानी ❀ जो मैं कहौ लेहु सो मानी ॥
 जीव बीज आहै तोहिं पासा ❀ सो बर रचना करहु प्रकासा ॥
 त्रय सुत सौं पि तोहिं कहँ दीन्हा ❀ अब हम तासों होब भीना ॥

राज करहु तुम लै तिहुँ बारा ❀ भेद न कहिहौ काहु हमारा ॥
मोर दरश तिय सुत नहिँ पैहैं ❀ जो मोहिं खोजत जन्म सिरैहैं ॥
अस कहि मता दृढ़ायो जानी ❀ पुरुष भेद कोई पाव न प्रानी ॥
त्रय सुत जब होइहि ब्रधमाना ❀ सिन्धु मथन पठ्यहु सुखदाना ॥

छंद—यह कह्यो बहुत बुझाइ देविहि गुप्त भो पुनि आप सो ।

लै शून्य गुफा निवास कीन्हों भेद लहइ को तासुको ॥

वह गुप्त भा पुनि संग सबके मन निरंजन जानिये ।

मन पुरुष भेद उछेद कै सोई व्यास परगट आनिये ॥१८॥

सो०—जीव भयो मति हीन, परसि अंग सो काल के ।

जन्म जन्म भय खीन, मुरचा कर्म विपाक के ॥१७॥

साखी—जिवन्ह सतावै काल नाना कर्म लगाय कै ।

आप चला है चाल कष्ट देइ पुनि जीव कहँ ॥१८॥

चौपाई ।

त्रय बालक पुनि भयो सयाने ❀ पठ्यो जननी सिन्धु मथाने ॥
बालक माते खेल खेलारी ❀ सिन्धु मथन नहिँ गयो खरारी ॥
तेहि अन्तर कस भयो तमासा ❀ सो चरित्र बूझहु भ्रमदासा ॥
योग अधारि निरंजन राई ❀ पवन अरम्भ रहे बहुताई ॥
त्यागन पवन रहित तेहि कीन्हा ❀ निसरत श्वास वेदसँग दीन्हा ॥
श्वास संग आयो सो वेदा ❀ बिरला कोइ जानै यह भेदा ॥
अस्तुति कान्ह वेद पुनि ताहाँ ❀ आज्ञा का मोहिं निर्गुण नाहाँ ॥
कह्यो जायकरु सिन्धु निवासा ❀ जो भेंटै जैहो तेहि पासा ॥
उठै अवाज तहाँ नहिँ देखा ❀ ज्योति अंग देखलावै भेखा ॥
चल्यो वेद पुनि तेज उपानी ❀ तेज अंत पुनि विष संधानी ।
चलि भे दोऊ वेद पगु धारे ❀ धर्मराय तब बुक्ति विचारे ॥
गुप्त आनि देविहि समुझावा ❀ सिन्धु मथन कहँ का बिलमावा ॥

पठवहु बेगि सिन्धु त्रय बारा ❀ दृढ़ कै शोचहु बचन हमारा ॥
 बहुरि आप पुनि सिन्धु समाना ❀ देवी कीन मथन अनुमाना ॥
 तिहुँ बालक कहँ कहि समुझावा ❀ आश देइ पुनि ताहि पठावा ॥
 पैहौ बस्तु सिन्धु के माहीं ❀ जाहु बेगि तीनों जन ताहीं ॥
 चलि भो ब्रह्मा मानि सिखाई ❀ दोउ लहुरा तेहि पाछे जाई ॥

छंद-त्रयसुत चले खेलत भले ज्यों सुभग बाल मरालके ।

गहि एक छोड़त एकगहि महि परत लटपट चालके ॥

क्षणहिं धावत क्षण खड़े क्षण भुजा गरहि लगावहीं ।

तेहिसमयकी शोभाभली तेहिवेद बहुविधि गावहीं ॥१६॥

सो०-गये सिन्धु के पास, भये ठाढ़ तीनिउ निकट ।

युक्तिमथन परकास, एकहि एक निरेखहीं ॥१६॥

चौपाई ।

तीनों कीन मथन पुनि जाई ❀ बस्तु तीनि तीनों जनपाई ॥
 ब्रह्मा वेद तेज तेहिछोटा ❀ लहुरा तासुमिले विषखोटा ॥
 भेंटि बस्तुत्रय तीनों भाई ❀ चलिभव हरष करत जहँमाई ॥
 माता पहुँ आये त्रयबारा ❀ निजनिजबस्तुप्रकटिअनुसारा ॥
 मातैं आज्ञा कीन प्रकासा ❀ राखुबस्तुतुम निजनिज पासा ॥
 पुनि तुम मथहुसिन्धु कहँ जाई ❀ जो जेहि मिलै लेहु सो भाई ॥
 कृत चरित्र असआदिभवानी ❀ आपन तीनि अंश उत्पानी ॥
 पठयो सिन्धु माहँ पुनि ताहीं ❀ त्रिसुतमर्म सो जानत नाहीं ॥
 पुनितिन्ह मथनसिन्धु कोकीन्हा ❀ कन्यालहिहरषित ह्वै लीन्हा ॥
 आइ जननि पहुँ नायो माथा ❀ कन्या तीनि लगाये साथी ॥
 आदिनारि कह सुनु सुत मोरा ❀ अब तौ काज भयो सुत तोरा ॥
 इकइकबाँटि त्रयनकहँ दीन्हा ❀ करहु भोगअसआज्ञाकीन्हा ॥
 तीनोंजन लीन्हा सिर नाई ❀ भयो कामवश तीनों भाई ॥

हे धर्मणि यह परखहु बाता ❀ नारी भई हुती जो माता ॥
 ब्रह्मा वेद मथन तब लागा ❀ पढ़त वेद तब भा अनुरागा ॥
 कह्यो वेद पुरुष इक आही ❀ निरङ्कार रूप तेहि नाही ॥
 शून्यमाहि वह ज्योति देखावै ❀ चितवत देहनजरि नहि आवै ॥
 स्वर्ग शीशपग आहिपताला ❀ इहिविधि ब्रह्माभा मतवाला ॥
 चतुरानन कह विष्णुबुभावा ❀ अहै पुरुष मोहिं वेद लखावा ॥
 पुनिब्रह्मै शिवसों अस कहिया ❀ पुरुष एक गुप्त सो रहिया ॥

छंद-ब्रह्मा कहैं जननी सुनो कहौ कहाँ कन्त तुम्हार है ।
 सो अहै कहँवाँ मोहिं बतावहु कहाँ पिता हमार है ॥
 कहै जननी सुनो ब्रह्मा नाहिं है तुम्हरो पिता ।
 यह सबै रचना हमहिते भइ तोरि उत्पति मै कृता ॥ २० ॥
 सो०-ब्रह्मा कहैं पुकारि, सुनु जननी तैं चित्त दै ।
 वेद कहैं निरुवारि, पुरुष एक कोउ गुप्त है ॥ २० ॥

चौपाई ।

जननी गुणयो बचन चित माहीं ❀ मोर कहा यह मानिहि नाही ॥
 इहि कहँ वेद दीन्ह उपदेशा ❀ पैदर ते नहि पावे भेशा ॥
 कह अष्टङ्गि सुनोरे बारा ❀ अलख निरंजन पिता तुम्हारा ॥
 तासु दरश नहिं पैहौ पूता ❀ यह तौ बचन कहौ निज गूता ॥
 ब्रह्मा सुनिव्याकुल है धावा ❀ परमै शीश ध्यान तिन्हलावा ॥
 ब्रह्मा चले जननि शिर नाई ❀ पितु दर्शन हित ध्यान दृढ़ाई ॥
 आज्ञा माँगि विष्णुचले बाला ❀ पितुपद परसै चले पताला ॥
 इतउत चित्त महेश न डोला ❀ सेवा करत कछू नहिं बोला ॥
 जननी की सेवा चित लावा ❀ ताते मातहि शिवमन भावा ॥
 इहिविधि बहुत दिवस चलि गयऊ ❀ मातै अमरपुत्र कह कियऊ ॥
 प्रथमहिं विष्णु गये जननी जहँ ❀ अपनी कथा कह्यो माता पहुँ ॥

ताते तोहिं कहीं समुझाई ❀ सिख हमार लेहु शीश चढ़ाई ॥
 पुरुष दीन तोहिं हम कह जानी ❀ मानहुँ कहा हमार भवानी ॥
 कन्या विहँसि कहै अस बाता ❀ इकमत होइ दुनो रँगराता ॥
 रहसि बचन बोलै मृदुबानी ❀ नारिबिपुलमतिरतिबिधिठानी ॥

छंद—नाहिं कन्या के हती भग चरित कीन निरंजना ।

बेधि किय भगद्वार ततक्षण गाढ़ उत्पति गंजना ॥

नख रेख से शोणित चलेउ किहु कौशबस्र अरम्भना ।

आदिउत्पति सुनहु धर्मणि कोउ न जानत भर्मना ॥ १७ ॥

सो०—उत्पति आदि प्रकास, यहि बिधिते परसंगभा ।

कीन्हो भोग बिलास, इकमत कन्या काल होइ ॥ १६ ॥

चौपाई ।

तेहि पाछे ऐसे भा लेखा ❀ धर्मदास वित करहु परेखा ॥
 अग्नि पवन जल मही अकासा ❀ कूर्म उदर ते भया प्रकासा ॥
 पाँचौं अंश ताहि सन लीन्हा ❀ गुणतीनों जो सक सौं लीन्हा ॥
 इहिविधि भयो तत्त्व गुण तीनी ❀ धर्मराय तब रचना कीनी ॥
 गुणतनुसमकै देविहि दीन्हा ❀ आपन अंश प्रकट चहै लीन्हा ॥
 बुन्द तीनि कन्या भग डारा ❀ तासँग तीनों अंश सुधारा ॥
 प्रथम बुन्द ते ब्रह्मा भयऊ ❀ रजगुण पंचतत्त्व सो दयऊ ॥
 दूज बुन्द बिष्णु जो भयऊ ❀ सतगुण पंचतत्त्व तिन्ह पयऊ ॥
 तीजे बुन्द रुद्र उत्पानी ❀ तमगुण पंचतत्त्व तेहि सानी ॥
 पंचतत्त्व गुण तीनि खभीरा ❀ तीनों जन की रची शरीरा ॥
 ताते फिरि फिरि परलै होई ❀ आदि भेद जानै नहिं कोई ॥
 कहैं धर्म कामिनि सुनु बानी ❀ जो मैं कहौं लेहु सो मानी ॥
 जीव बीज आहै तोहिं पासा ❀ सो बर रचना करहु प्रकासा ॥
 त्रय सुत सौं पि तोहिं कहँ दीन्हा ❀ अब हम तासों होब भीना ॥

राज करहु तुम लै तिहुँ बारा ❀ भेद न कहिहौ काहु हमारा ॥
मोर दरश तिय सुत नहिं पैहैं ❀ जो मोहिं खोजत जन्म सिरैहैं ॥
अस कहि मता दृढ़ायो जानी ❀ पुरुष भेद कोई पाव न प्रानी ॥
त्रय सुत जब होइहि ब्रधमाना ❀ सिन्धु मथन पठ्यहु सुखदाना ॥

छंद—यह कह्यो बहुत बुझाइ देबिहि गुप्त मो पुनि आप सो ।

लै शून्य गुफा निवास कीन्हों भेद लहइ को तासुको ॥

वह गुप्त भा पुनि संग सबके मन निरंजन जानिये ।

मन पुरुष भेद उछेद कै सोई व्यास परगट आनिये ॥१८॥

सो०—जीव भयो मति हीन, परसि अंग सो काल के ।

जन्म जन्म भय खीन, मुरचा कर्म विपाक के ॥१७॥

साखी—जिवन्ह सतावै काल नाना कर्म लगाय कै ।

आप चला है चाल कष्ट देइ पुनि जीव कहँ ॥१८॥

चौपाई ।

त्रय बालक पुनि भयो सयाने ❀ पठ्यो जननी सिन्धु मथाने ॥
बालक माते खेल खेलारी ❀ सिन्धु मथन नहिं गयो खरारी ॥
तेहि अन्तर कस भयो तमासा ❀ सो चरित्र बूझहु भ्रमदासा ॥
योग अधारि निरंजन राई ❀ पवन अरम्भ रहे बहुताई ॥
त्यागन पवन रहित तेहि कीन्हा ❀ निसरत श्वास वेदसंग दीन्हा ॥
श्वास संग आयो सो वेदा ❀ बिरला कोइ जानै यह भेदा ॥
अस्तुति कान्ह वेद पुनि ताहाँ ❀ आज्ञा का मोहिं निर्गुण नाहाँ ॥
कह्यो जायकरु सिन्धु निवासा ❀ जो भेंटै जैहो तेहि पासा ॥
उठै अवाज तहाँ नहिं देखा ❀ ज्योति अंग देखलावै भेखा ॥
चल्यो वेद पुनि तेज उपानी ❀ तेज अंत पुनि विष संधानी ।
चलि भे दोऊ वेद पगु धारे ❀ धर्मराय तब बुक्ति विचारे ॥
गुप्त आनि देविहि समुझावा ❀ सिन्धु मथन कहँ का बिलमावा ॥

पठवहु वेगि सिन्धु त्रय बारा ❀ दृढ़ कै शोचहु बचन हमारा ॥
 बहुरि आप पुनि सिन्धु समाना ❀ देवी कीन मथन अनुमाना ॥
 तिहुँ बालक कहँ कहि समुझावा ❀ आश देइ पुनि ताहि पठावा ॥
 पैहौ बस्तु सिन्धु के माहीं ❀ जाहु वेगि तीनों जन ताहीं ॥
 चलि भो ब्रह्मा मानि सिखाई ❀ दोउ लहुरा तेहि पाछे जाई ॥

छंद—त्रयसुत चले खेलत भले ज्यों सुभग बाल मरालके ।

गहि एक छोड़त एकगहि महि परत लटपट चालके ॥

क्षणहिं धावत क्षण खड़े क्षण भुजा गरहि लगावहीं ।

तेहिसमयकी शोभाभली तेहिवेद बहुविधि गावहीं ॥१६॥

सो०—गये सिन्धु के पास, भये ठाढ़ तीनिउ निकट ।

युक्तिमथन परकास, एकहि एक निरेखहीं ॥१६॥

चौपाई ।

तीनों कीन मथन पुनि जाई ❀ बस्तु तीनि तीनों जनपाई ॥
 ब्रह्मा वेद तेज तेहिछोटा ❀ लहुरा तासुमिले विषखोटा ॥
 भेंटि बस्तुत्रय तीनों भाई ❀ चलिभव हरष करत जहँमाई ॥
 माता पहुँ आये त्रयबारा ❀ निजनिजबस्तुप्रकटि अनुसारा ॥
 मातैं आज्ञा कीन प्रकासा ❀ राखुबस्तुतुम निजनिज पासा ॥
 पुनि तुम मथहुसिन्धु कहँ जाई ❀ जो जेहि मिलै लेहु सो भाई ॥
 कृत चरित्र असआदिभवानी ❀ आपन तीनि अंश उत्पानी ॥
 पठयो सिन्धु माहँ पुनि ताहीं ❀ त्रिसुतमर्म सो जानत नाहीं ॥
 पुनितिन्ह मथनसिन्धु कोकीन्हा ❀ कन्यालहिहरषित हैं लीन्हा ॥
 आइ जननि पहुँ नायो माथा ❀ कन्या तीनि लगाये साथ ॥
 आदिनारि कह सुनु सुत मोरा ❀ अब तौ काज भयो सुत तोरा ॥
 इकइकबाँटि त्रयनकहँ दीन्हा ❀ करहु भोगअस आज्ञा कीन्हा ॥
 तीनोंजन लीन्हा सिर नाई ❀ भयो कामवश तीनों भाई ॥

हे धर्मणि यह परखहु बाता ❀ नारी भई हुती जो माता ॥
 ब्रह्मा वेद मथन तब लागा ❀ पढ़त वेद तब भा अनुरागा ॥
 कह्यो वेद पुरुष इक आही ❀ निरङ्कार रूप तेहि नाही ॥
 शून्यमाहि वह ज्योति देखावै ❀ चितवत देह नजरि नहि आवै ॥
 स्वर्ग शीशपग आहिपताला ❀ इहिविधि ब्रह्माभा मतवाला ॥
 चतुरानन कह विष्णुबुभावा ❀ अहै पुरुष मोहिं वेद लखावा ॥
 पुनिब्रह्मै शिवसों अस कहिया ❀ पुरुष एक गुप्त सो रहिया ॥

छंद-ब्रह्मा कहैं जननी सुनो कहौ कहाँ कन्त तुम्हार है ।

सो अहै कहँवाँ मोहिं बतावहु कहाँ पिता हमार है ॥

कहै जननी सुनो ब्रह्मा नाहिं है तुम्हरो पिता ।

यह सबै रचना हमदिते भइ तोरि उत्पति मैं कृता ॥ २० ॥

सो०-ब्रह्मा कहैं पुकारि, सुनु जननी तैं चित्त दै ।

वेद कहैं निरुवारि, पुरुष एक कोउ गुप्त है ॥ २० ॥

चौपाई ।

जननी गुणयो बचन चित माहीं ❀ मोर कहा यह मानिहिं नाहीं ॥
 इहि कहँ वेद दीन्ह उपदेशा ❀ पैदर ते नहिं पावे भेशा ॥
 कह अष्टङ्गि सुनोरे बारा ❀ अलख निरंजन पिता तुम्हारा ॥
 तासु दरश नहिं पैहौ पूता ❀ यह तौ बचन कहौ निज गूता ॥
 ब्रह्मा सुनिव्याकुल है धावा ❀ परसै शीश ध्यान तिन्हलावा ॥
 ब्रह्मा चले जननि शिर नाई ❀ पितु दर्शन हित ध्यान दृढ़ाई ॥
 आज्ञा माँगि विष्णुचले बाला ❀ पितुपद परसै चले पताला ॥
 इतउत चित्त महेश न डोला ❀ सेवा करत कछू नहिं बोला ॥
 जननी की सेवा चित्त लावा ❀ ताते मातहि शिवमन भावा ॥
 इहिविधि बहुत दिवस चलि गयऊ ❀ मातै अमरपुत्र कह कियऊ ॥
 प्रथमहिं विष्णु गये जननी जहँ ❀ अपनी कथा कह्यो माता पहुँ ॥

भैंव्यो नाहिं मोहिं पद ताता ❀ विषज्वालहि श्यामल भवगाता ॥
 व्याकुलभयउँतबहिंफिरिआयों ❀ पितुपद दरश नाहिं मैं पायों ॥
 सुनि हरषित भईआदिकुमारी ❀ लीन्ह विष्णुकहँ निकटदुलारी ॥
 चूँबो बदन शीश दिय हाथा ❀ सत्य सत्य बोलेहु सुत बाता ॥
 देखु पुत्र तोहिं पिता भेटावों ❀ तोरे मनकर धोख मिटावों ॥
 प्रथमैं ज्ञानदृष्टि सों देखो ❀ बचन मोर निजहृदय परेखो ॥
 मन स्वरूप करता कह जानो ❀ मनते दूजा और न मानो ॥
 स्वर्ग पताल दौर मनकेरा ❀ मन अस्थिर मनरमै अनेरा ॥
 क्षणमहँ कला अनन्त देखावै ❀ मन कहँ पेखि कोइ नहिं पावै ॥
 निराकार मनहीं को कहिये ❀ मनकी आशदिवसनिशिरहिये ॥
 देखहु पलटि शून्यमहँ जोती ❀ जहँवाँ फिलमिलभालरिमोती ॥
 फेरहु श्वास गगन कहँ धावो ❀ मार्ग अकाशहि ध्यान लगावो ॥
 जैसे मातैं कहि समुझावा ❀ तैसहिं बिष्णुध्यान मन लावा ॥

छंद—पैठिगोफा निरखि कीन्हों श्वास संयम जानिकै ।

पवन धूकादियो मनतब गगन गज्यों आनिकै ॥

बाजा सुनत तब मगन भव पुनिकीन्ह मनकस ज्वालहो ।

शून्यसित पितसबुज रक्त जँगालरँग देखलायहो ॥२१॥

सो०—तेहि पाछे धर्मदास, मनपुनि आप देखायऊ ।

कीन्ह ज्योति परकास, देखि विष्णु हरषित भये ॥२१॥

मातैं दीन्ह अशीश, बहु अधीन पुनि विष्णुभव ।

मैं सुभयो जगदीश, हे जननी परसाद तब ॥२२॥

चौपाई ।

धर्मदास यह काल सुभाऊ ❀ पूरुष भेद विष्णु नहिं पाऊ ॥

कामिनि की यह देखहु बाजी ❀ अमृत बिगोय दियो विषसाजी ॥

जीति काल दूजा जनि जानहु ❀ धर्म निरखि सत्यहि उर आनहु ॥

प्रकट सुतोहिं कहौं समुझाई ❀ धर्मदास परिखहु चितलाई ॥
 जस परगट तस गुप्त सुभाऊ ❀ जो रह हृदय सो बाहर आऊ ॥
 जबहीं दिय निवारु नरलोई ❀ देखहु ज्योति सुभाव बिलोई ॥
 देखत ज्योति पतंग हुलासा ❀ प्रीति जानि आवहितेहिपासा ॥
 परसत होखै ज्योति पतंगा ❀ अनजाने जरिमरहि तरंगा ॥
 ज्योति स्वरूप काल अस आहीं ❀ कठिन काल वह छाँड़त नाहीं ॥
 कोटि विष्णु अवतारहि खायसि ❀ ब्रह्मा इन्द्रहि खाय चबायसि ॥
 कौनबिपतिजीवन्ह कै कहऊं ❀ परखिबचन निजसहजहिरहऊं ॥
 सवालाख जिय नित लै खाई ❀ अस बिकराल सुकाल कसाई ॥
 धर्मदास कह सुनहु गोसांई ❀ मोरे चित संशय अस आई ॥
 अष्टंगिहि पुरुष उत्पानी ❀ ज्यहिविधि उपजी सो मैं जानी ॥
 पुनि इहि ग्रास कीन भ्रमराई ❀ पुरुष प्रतापते बाहर आई ॥
 सो अष्टंगी अस छल कीन्हा ❀ गोइसि पुरुष प्रकटयम कीन्हा ॥
 पुरुष भेदनहिं सुरन्ह बतायसि ❀ काल निरञ्जन ध्यानलगायसि ॥
 यह कस चरित कीन अष्टंगी ❀ तजी पुरुष भइ कालकि संगी ॥
 धर्म सुनहु जन नारि सुभाऊ ❀ अबतोहिं परगट बरणिसुनाऊ ॥
 होत सुता जाके गृहमाही ❀ विविध यतन परितोषै ताही ॥
 वस्त्र भक्ष्य सुखसेज निवासा ❀ घर बाहर सब तेहि विश्वासा ॥
 यज्ञ कराइ देइ पुनि ताता ❀ बिदा कराइ कीन पितु माता ॥
 गई सुता जब स्वामी गेहा ❀ रात्यो तासु संग गुणनेहा ॥
 माता पिता सबहि बिसरावा ❀ धर्मणि यह है नारि सुभावा ॥
 ताते आद्याभई बिगानी ❀ कालअंग है रही भवानी ॥
 कहु धर्मणि यह संशय बीती ❀ साहेब कह्यो धर्म यह रीती ॥

छंद-गयो ब्रह्मा शीशपरस कथा तादिन की कहो ।

भयो दृष्टिमेराव की नहिं तासु दर्शन तिन्ह लहो ॥

यह बरणि मोपै कहो सतगुरु एक एक बिलोयकै ।

जिहि सुनतसंशयमिटै चितको कछु न राखहुगोयकै ॥ २२ ॥

सो०—प्रभु हमहैं तुव दास, जन्म कृतारथ मोर करि ।

करहु बचन परकास, तेहि पाछे जो चरित भा ॥ २३ ॥

चौपाई ।

धर्मणिम्वहितिम अतिप्रिय अहहू ❀ कहौ कथा पारिख दृढ़ गहहू ॥
 ब्रह्मा तात दरश नहिं पाई ❀ शून्य ध्यानमहँ युग बहु जाई ॥
 मातै चिंताकृत मनमाहाँ ❀ जेठपुत्र ब्रह्मा रहु काहाँ ॥
 केहिबिधि रचना रचे बनाई ❀ ब्रह्मा आवै कवनि उपाई ॥
 उठी शरीर मैलि गहि काढ़ी ❀ पुत्रीरूप कीन रचि ठाढ़ी ॥
 शक्तिअंश निज ताहि मेरावा ❀ गायत्री तेहि नाम धरावा ॥
 गायत्री मातै शिर नावा ❀ चरणचूमिनिजशीश चढ़ावा ॥
 गायत्री बिनवै करजोरी ❀ सुनहुजननि यह बिनतीमोरी ॥
 कवन काज मोकहँ निरमाई ❀ कहौ वचन लेहुँ शीश चढ़ाई ॥
 कहैं श्रद्धा पुत्री सुनु बाता ❀ ब्रह्मा आहि जेठ तव भ्राता ॥
 पिता दरश हित गयोअकाशा ❀ आनहु तासु गिरा परगाशा ॥
 दरश तातकर वह नहिं पाइहि ❀ जोखोजत आपुहि मरिजाइहि ॥
 जौनीबिधि वह आवै भाई ❀ करिहौ तहँवाँ तवनि उपाई ॥
 चलि भवते मारग सुकुमारी ❀ जननी बचन प्रीति उरधारी ॥

छंद—जाइ देख्यो चतुरमुख कहँ नाहिं पलक उधारई ।

कछुक दिन सो रही तहँवाँ बहुरि युक्ति बिचारई ॥

कहो केहिबिधि जागिहै यह कहो कवनि उपाइहो ।

गुनत-गुनत सुचकित बहुविधि ध्यान जननीलाइहो ॥ २३ ॥

सो०—भाद्या आयसु पाय, गायत्री ततध्यान महँ ।

निजकर परसहु जाय, ब्रह्मा तबहीं जागिहैं ॥ २४ ॥

चौपाई ।

गायत्री पुनि कीन्हों तैसो ❀ मातै युक्ति बताई जैसो ॥
 निजकरकमल परसितेहि अंगा ❀ कर परसत भयो मदन तरंगा ॥
 जाग्यो मदन ध्यान तब डोला ❀ ब्याकुल भयो ब्रह्म अस बोला ॥
 कवनि अहसि पापिनि अपराधी ❀ कहाँ छुड़ावहु मोरि समाधी ॥
 दैहों शाप लेउ शिरमानी ❀ पिता ध्यान मोहिं खंड्यो आनी ॥
 गायत्री कह मोहिं न पापा ❀ बूझि लेहु तब देहु शरापा ॥
 कहों तोहिं सो निश्चय बाता ❀ तो कहैं लेन पठायो माता ॥
 चलहु बेगि जननी पहुँ जाई ❀ तोहिं बिन रचना होइ न भाई ॥
 कह ब्रह्मा मैं केहि बिधि जाऊँ ❀ दरश पिता को अजहुँ न पाऊँ ॥
 कह गायत्री दरश न पैहो ❀ बेगि चलो नाहिं त पछितैहो ॥
 कह ब्रह्मा तुम देहु जो साखी ❀ परस्यो शीश देखु मैं आँखी ॥
 यह जो मातहि कह समुझाई ❀ तो तुम्हरे संग हम चलि जाई ॥
 कह गायत्री सुनु श्रुतिधारी ❀ हम नहिं मिथ्या बचन उचारी ॥
 जो ममस्वारथ पुरवहु भाई ❀ तो हम मिथ्या कहब बनाई ॥
 कह ब्रह्मा नहिं लखी कहानी ❀ कहहु बुझाइ प्रकट की बानी ॥
 कह गायत्री देहु रति मोहीं ❀ तो कहि भूठ जितावों तोहीं ॥
 सुनि ब्रह्मै चित कीन बिचारा ❀ अब कस युक्ति करों इहि बारा ॥

छंद—जो बिमुख अब करों यहि कहैं तौ नहीं बनि आवई ।

साखि तो यह देइ नहिं जननी सो मोहिं लजावई ॥

इहाँ नाहीं पिता पायों भयो न एको काजको ।

पापशोचत नहिं बनै अब करौ रति बिधि सङ्गको ॥ २४ ॥

सो०—कियो भोग रतिरङ्ग, बिसरयो सो मन दरश को ।

दोउ कहैं बाढ़यो रङ्ग, बलमत बुद्धि प्रकाश किय ॥ २५ ॥

चौपाई ।

कहैं ब्रह्म चलु जननी पासा ❀ तब गायत्री बचन प्रकासा ॥
 औरौ करो युक्ति इकठानी ❀ दूसरि साखि लेव उत्पानी ॥
 ब्रह्मा कहैं भली है बाता ❀ करहु सोई जेहि मानै माता ॥
 तब गायत्री युक्ति विचारा ❀ देह मइलि गहिकीन निनारा ॥
 कन्या रचिनिज अंश मेरावा ❀ नाम सवित्री तासु धरावा ॥
 गायत्री तेहि कहि समुभावा ❀ कह्यो दरश ब्रह्म पितु पावा ॥
 कह सावित्री हम नहिं जानी ❀ भूँठ साखि दै आपनि हानी ॥
 सोसुनिदोउकहँचिन्ता व्यापा ❀ यह तो भयो कठिनसन्तापा ॥
 बहुविधि गायत्री समुभावा ❀ सावित्री के मन नहिं आवा ॥
 पुनि गायत्री कहा बुझाई ❀ तब सावित्री बचन सुनाई ॥
 ब्रह्माकर मोसों रति साजा ❀ तौ मैं भूँठ कहों यहिकाजा ॥
 गायत्री ब्रह्महि समुभावा ❀ यहिकहँ दै रति काज सुभावा ॥
 ब्रह्म रति सावित्रिहि दीन्हा ❀ पाप मोट ब्रह्म शिर लीन्हा ॥
 सावित्रीकर दुतिया नाऊँ ❀ कहिपुहुपावति बचन सुनाऊँ ॥
 तीनौमिलिपुनिचलिभे तहँवाँ ❀ कन्या आदि कुमारी जहँवाँ ॥
 करि प्रणाम सम्मुख रहु जाई ❀ मातै सबहि पूछ कुशलाई ॥
 कहु ब्रह्मा दरशन पितु पायहु ❀ दूसरि नारि कहाँ ते लायहु ॥
 कहैं ब्रह्मा दोऊ हैं साखी ❀ परस्यो शीश देख इन्ह आँखी ॥
 मातै तब पूछा अनुसारी ❀ कहु गायत्री बचन उचारी ॥
 देख्यो दरश पिता इन्ह पायउ ❀ कहो सत्यजनि तनिक दुरायउ ॥
 तब गायत्री बचन सुनायउ ❀ ब्रह्म दरश पिताकर पायउ ॥
 किहि देखत इन्ह परस्यो शीशा ❀ ब्रह्महिं मिल्यो देव जगदीशा ॥

छंद-लै पुहुप परस्यो शीश पितु इन्ह दृष्टि मैं देखत रही ।

जल ढारि पुहुप चढ़ाइया अजहे जननि यह है सही ॥

पुहुप से पुहुपावती भइ प्रकट ताही ठामसे ।

इन्हहुदरशन लह्यो पितुको पुछहु नहिं इहिबामसे ॥ २५ ॥

सो०—कहु पुहुपावति मोहिं, ब्रह्मै परस्यो शीश पितु ।

यह मैं पूछों तोहिं, दरशकथा निरुवारि कहु ॥ २६ ॥

चौपाई ।

सावित्री अस बचन उचारा ❀ मातु सुनहु तुम बचन हमारा ॥
 दरशन शीश लह्यो चतुरानन ❀ देख्यो धरु आद्या निश्चय मन ॥
 सो सुनि अष्टङ्गी अकुलानी ❀ यह अचरजभा मरम न जानी ॥
 अलख निरञ्जन असप्रण भाखी ❀ मोकहँ कोउ न देखिहि आँखी ॥
 ये तीनों कस करहिं लबारी ❀ अलख निरंजन कहु संभारी ॥
 ध्यान कीन अष्टङ्गी तेहि छन ❀ ध्यानमाँह अस कह्यो निरंजन ॥
 ब्रह्मै मोर दरश नहिं पावा ❀ झूठिसाखि इन्हआनि दिआवा ॥
 तीनों मिथ्या कहा बनाई ❀ जनि मानहु यह है लबराई ॥
 यह सुनि मातै कीन्ह्यो दापा ❀ कोष कीन पुनि ब्रह्महिं शापा ॥
 अब तव सेवा करिहि न कोई ❀ मोते मिथ्याँ कह्यो सजोई ॥
 इक मिथ्या औ अकरम कीन्हा ❀ नरकमोट अपने शिर लीन्हा ॥
 आगे ह्वै जो साखि तुम्हारी ❀ मृषा पाप करिहैं बहु भारी ॥
 प्रकट करहिं बहुनेम अचारा ❀ अन्तर मैलि पुहुप बिस्तारा ॥
 विष्णु भक्त से करिहि हँकारा ❀ ताते परिहैं नरक मँझारा ॥
 कथा पुराण और समुझैहैं ❀ चालि अबीन आपु दुख पैहैं ॥
 उन्हसे और समुझि हैं ज्ञाना ❀ करिहँसि भक्ति कहौ परवाना ॥
 और देव को अंश लखैहै ❀ औरन्ह निन्दि कालमुख जैहै ॥
 निज स्वारथ को ज्ञान सुनैहै ❀ अपनी पूजा जगत दूढैहै ॥
 परमारथ के निकट न जैहै ❀ स्वारथ अर्थ सबै समुझैहै ॥
 ब्रह्मौ मूर्च्छि मही कर धारा ❀ जब मातै अस कीन्ह प्रहारा ॥

शाप्यो गायत्रिहि तेहिबारा ❀ होइहैं तो कहँ पञ्च भतारा ॥
 निजस्वारथ तुम मिथ्या भाखी ❀ कहा जानि यह दीनों साखी ॥
 मानि शाप गायत्री लीन्हा ❀ सावित्री तब चिन्तन कीन्हा ॥
 पुहुपावति निज नाम धरायहु ❀ मिथ्याकहिनिज जन्मनशायहु ॥
 होउ कुगन्ध ठौर तवबासा ❀ भुगतहु नरक कामगहि आसा ॥

छंद—भे शापवश तीनों बिकल मतिहीन क्षीन कुकर्मते ।

यह काल कला प्रचंड कामिनि डस्यो सबकहँ चर्मते ॥

ब्रह्मादि शिव सनकादि नारद कोउ न बांचै भक्त हो ।

कह कबीरा बिरल उबरेव शब्दसत सो लागि हो ॥२६॥

सो०—सत्य शब्द परताप, कालकला व्याप नहीं ।

निकट न आवै पाप, मनबच क्रम जो पद गहै ॥२७॥

चौपाई ।

पुनि मातै गहि विष्णुदुलारा ❀ मम मर्याद मान सुतबारा ॥
 अहो विष्णु तुम लेहु अशीशा ❀ सबदेवन्ह में तुमहीं ईशा ॥
 जोइच्छा तुम चित में धरिहौं ❀ सो सबकाज तोर मैं करिहौं ॥
 प्रथम पुत्र ब्रह्मा दुरि गयऊ ❀ अकरम झूठ ताहि प्रिय भयऊ ॥
 देवन्ह श्रेष्ठ तुमहिं कहँ जानिहि ❀ तुम्हरी प्रजा सबै कोइ मानिहि ॥
 कृपा बचन मातै अस भाखा ❀ सबपर श्रेष्ठ विष्णुकहँ राखा ॥
 पुनि लहुरा कहँ पूछै माता ❀ तुम अब कहौ हृदय की बाता ॥
 माँगहु जो तुम्हरे चित आवै ❀ सो तोहिं देउं देवि फुरमावै ॥
 जोरिपाणि शिव कहबे लीन्हा ❀ देहु जननि जो आज्ञा कीन्हा ॥
 कबहुँ न बिनशै मेरी देही ❀ हे माता माँगौं बर येही ॥
 कह अष्टंगी अस नहिं होई ❀ दूजा अमर भया नहिं कोई ॥
 करहु योग तप पवन सनेहा ❀ रहै चारियुग तुम्हरी देहा ॥
 दूनोंजने हरष मन कीन्हा ❀ ब्रह्मा भयो मान मद हीना ॥

जाय विष्णु से बिनती ठानी ❀ अहो बन्धु देवन्ह परधानी ॥
 तुम पर माता भई दयाला ❀ हमहीं शाप्यो दुखित दयाला ॥
 निज करणी फल पायों भाई ❀ केहि विधि दोष लगावहुँ माई ॥
 अब यह यत्न करौ तुम भ्राता ❀ चलै प्रवाह बचन रहै माता ॥
 कहैं विष्णु छाँड़हु चित बंगा ❀ मैं सेवकाई करिहों संगी ॥
 तुम जेठे हम लहुरे भाई ❀ चितसंशय अब देहु बहाई ॥

छंद—जगहिं मैं असकै दृढ़ाइब कथों बहु बाणी घनी ।

फलकि आशा देव जीवन्ह अधिक महिमा को गनी ॥

जो करहि सेवाद्विजन्ह की तेहि महापुण्य प्रभावहो ।

सोजीव मोको प्रिय अधिकलै राखिहों निजठामहो ॥ २७ ॥

सो०—ब्रह्मा भयो अनन्द, जबहिं विष्णु अस भासेऊ ।

मेढ्यो चितको द्वन्द, सखा मोर सब सुखी है ॥ २८ ॥

चौपाई ।

देखहु धर्मणि काल पसारा ❀ इन्ह ठग ठग्यो सकल संसारा ॥
 आशा दै जीवन्ह बिलमावै ❀ जन्म जन्म जीवन्ह संतावै ॥
 बलि हरिचन्द और बैरोचन ❀ कुन्तीसुत औरौ महि शोचन ॥
 ये सब त्यागी दानि नरेशा ❀ इन्ह कहँलै राखिन्हि केहिदेशा ॥
 जैसे पतन सबन को कीना ❀ सो जानहु जियकाल अधीना ॥
 जानत हों जग होय न शुद्धी ❀ काल प्रबल सबकी हर बुद्धी ॥
 मन तरंगमहँ जीव बँधाना ❀ निजघरउलटिन चीन्ह अयाना ॥
 धर्मदास कहैं सुनो गोसाईं ❀ तब की कथा कहो समुझाई ॥
 तुम्हरो शब्द को लक्षण चीन्हा ❀ निश्चय तुम्हरेपदचित दीन्हा ॥
 अब भवबूढ़त तुम मोहिं राखा ❀ शब्द सुधारस कहिहित भाखा ॥
 अब वह कथा कहो समुझाई ❀ शाप अन्त किहु कवन उपाई ॥
 धर्मणि तुमसन कहोंकथानी ❀ भाष्यो ज्ञान अगम की बानी ॥

शाप मातु गायत्री लीना ❀ उलटिशापपुनि मातहिदीना ॥
 हम जो पाँच पुरुष की जोई ❀ पाँचों की तुम जननी होई ॥
 बिना पुरुष तुहि जनिहै बारा ❀ सो जानहि सकलो संसारा ॥
 दुहुन शाप फल पायो भाई ❀ उग्रह भइउ देह धरि आई ॥
 यह सब द्वन्द्ववाद है गयऊ ❀ तब पुनि जगकी रचनाभयऊ ॥
 चौरासी लख जोइनि भाऊ ❀ चारि खानि चारिहु निरमाऊ ॥

छंद-प्रथमअडज रच्यो जननी चतुरमुख पिण्डज कियो ।

विष्णु उपमज रच्यो तबहीं रुद्र अस्थावर कियो ॥

कीन्ह रचि जेहि खानि चारो जीव बन्धन दीन्ह हो ।

होन लागी कृषी कारण करण करता चीन्ह हो ॥ २८ ॥

सो०-इहि विधि चारोखान, चारहु रचि बिस्तार किय ।

धर्मदास चित जान, बाणी चारिउ चारिको ॥ २९ ॥

चार खानि की गिनती धर्मदास वचन चौपाई ।

धर्मणि कहै जोरियुग पानी ❀ तुम सतगुरु यह कहो बखानी ॥

चारि खानि की उत्पति पाऊ ❀ भिन्न भिन्न मोहिं बरणियनाऊ ॥

चौरासी लक्ष योनि को धारा ❀ कवन योनि केतिकबिस्तारा ॥

सतगुरु वचन ।

कह कबीर सुनु धर्मणिबानी ❀ योनि भाव तोहिं कहों बखानी ॥

उदक जन्तु दशलखनिरमायउ ❀ अँकुर खानिदशलक्ष बनायउ ॥

गऊ अश्व औ चौपद जेते ❀ तीस लक्ष जोइनि भौ तेते ॥

नवहि लाख पक्षी परगासा ❀ लक्ष यकादश कीट निवासा ॥

चतुर लक्ष मानुष कर कहिये ❀ मानुषदेही सो पद लहिये ॥

और योनि परचौ नहिं पावै ❀ कर्म बन्ध भव महुँ भटकावै ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास नायो पद शीशा ❀ यह समुझाई कहौ जगदीशा ॥
सकलजिवनिजिव एक समाना ❀ नरसम औरन्ह कहँ नहिं ज्ञाना ॥
सो चरित्र मोहिं कहौ बुझाई ❀ जाते जिय की संशय जाई ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मणि निजवंश अभूषण ❀ तोहिं बुझाई कहौ यह दूषण ॥
चारिखानि जिव एकै आहीं ❀ सबै विशेष अहै सुनु ताहीं ॥
अस्थावर ततु एकै आहीं ❀ एकै तत्त्व अंश रहवाहीं ॥
उषमज दोय तत्त्व अनुमाना ❀ अंडज तीनि तत्त्व गुणजाना ॥
पिंडज चारि तत्त्व जग कहिये ❀ मानुष पंच तत्त्व अनुसरिये ॥
ताते होय ज्ञान अधिकारी ❀ नर की देह भक्ति अनुसारी ॥

धर्मदास वचन ।

ये साहेब मोहिं कहु समुझाई ❀ कवन कवन ततु इन्हसब पाई ॥
उषमज औ अस्थावर अण्डा ❀ पिंडज औ मानुष परचण्डा ॥
केहि कहँ कवन तत्त्व दियसंगा ❀ ज्ञान बिलोय किहे सबरंगा ॥

सतगुरु वचन ।

छंद—सतगुरु कहे सुनु दास धर्मणि तत्त्वखानि को बेरनो ।
जाहि खानि जो तत्त्व आहै कहौ सो सब ढेरनो ॥
खानि अंडज तीनि ततु है आप बायू तेज हो ।
खानिअंकुर एक ततु है आप तत्त्व विशेष हो ॥ २६ ॥
सो०—पिण्डज नरपरमान, पांचतत्त्व तेहिसंग है ।
कहहिं कबीर प्रधान, धर्मदास ले परखिकै ॥ ३० ॥
उषमज में द्वै तत्त्व, आप तेज सो जानिये ।
पिण्डज चारि सुतत्त्व, पृथ्वी तेज अप बायु सम ॥ ३१ ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

धर्मदास कहैं सुनु बँदिबोरा ❀ यह संशय मेटहु प्रभु मोरा ॥
यह नर नारि तत्त्व सम आहीं ❀ इकसम ज्ञान सबनको नाहीं ॥

दयाशील संतोष क्षमा गुण ❀ कहूँ शून्य कहूँ आहि संपूरण ॥
 कोई मानुष है अति अपराधी ❀ कोईशीतल कोईकाल उपाधी ॥
 कोई मारि तन करै अहारा ❀ काहू जीव दया उर धारा ॥
 कोई ज्ञान सुनत सुख मानै ❀ कोई काल गुण बाद बखानै ॥
 नर नारी नाना गुण होई ❀ साहेब बरणि सुनावहु सोई ॥

चार खानि की पारख—सतगुरु वचन ।

धर्मदास परखहु चितलाई ❀ नर नारी गुण कहौं बुझाई ॥
 जे तन रह्यो ज्ञानि अज्ञानी ❀ सो सब तोहिं कहौं सहिदानी ॥
 नाहर सर्प औ श्वान सियारा ❀ काग गिद्ध शूकर मज्जारा ॥
 और अनन्तयोनि अघ खानी ❀ खाहिंअखज अधमागुणजानी ॥
 इन्ह जोइनि ते जो जिवआवा ❀ नरकी योनि जन्मतिन्ह पावा ॥
 पीछे योनि सुभाव न छूटै ❀ कर्म प्रभाव महा पुनि घूटै ॥
 ताते सब चलि कागकि लेखो ❀ नर की देह प्रकट तेहि देखो ॥
 जिहि जोइनिते जोजिय आऊ ❀ ताको तैसो आह सुभाऊ ॥
 अघकरमी घातिक विष पूजा ❀ योनि प्रभाव होइ नहिं दूजा ॥
 सतगुरु मिलै तो ज्ञान लखावै ❀ कागदशा तब सब बिसरावै ॥
 मुरचा योनि छूटै तब भाई ❀ ज्ञान मसाला फिरै बनाई ॥
 जस धोबी बस्तर कहँ धोवै ❀ जलसाबुन मिलिउज्ज्वलहोवै ॥
 थोरि मइलि करि बस्तर भाई ❀ थोरे ही श्रम मैलि नशाई ॥
 निपट मलिन जे बस्तर आही ❀ ताकहँअधिकअधिकश्रमचाही ॥
 जैसो मैलि वस्त्र कर भाऊ ❀ ऐसो जीवन्ह केर स्वभाऊ ॥
 कोई जीव अंकुरी होई ❀ स्वल्प ज्ञान सों गहै बिलोई ॥
 छंद—जन्म जन्म को मैलि छूटै पुरुष शब्द जो पावई ।

नाम भाव सुमिरण गहै सो जीवलोक सिधावई ॥

जो शब्द निश्चय कै गहै सो जीव अमिय अमोल है ।

नामबल निजघर चलै मिलि हंस करै कलोल है ॥ ३० ॥

सो०—पुरुष नाम परताप, काल न रोंकै जीवकहँ ।
देखि जीव को छाप, काल रहै शिरनाइकै ॥ ३२ ॥

सतगुरु वचन—चौपाई ।

धर्मणि नरदेही सुखदाई ❀ नरदेही गुरुज्ञान समाई ॥
सो तनु पाइ आपु जहँ जावै ❀ सतगुरु भक्ति बिना यम खावै ॥
नरतनु वा कि नारि चौरासी ❀ शब्द न गहै मूढ़ मति नासी ॥
चौरासी की चालि न छाँड़ै ❀ सत्य नामते नेह न माड़ै ॥
लै गाढ़हिं चौरासी माहीं ❀ परचै ज्ञान तहाँ कछु नाहीं ॥
बहुत भांति कहि कहि समुझावा ❀ जीव बिपत्तिजानि गोहरावा ॥
यह तनु पाय भजै सतनामा ❀ नामप्रताप लहै निजधामा ॥

छंद—आदि नाम बिदेह अस्थिर परखि जो जियरा गहै ।

पाय बीरासार सुमिरण गुरुकृपा मारग लहै ॥

तजि काल चाल मराल पथगहि नीर क्षीर बिचारही ।

ज्ञानदृष्टि अदृष्टि पेखे क्षर अक्षर निरुवारई ॥ ३१ ॥

सो०—निहअक्षर है सार, अक्षर में लखि पाइये ।

धर्मणि करहु विचार, निहअक्षर निहतत्त्वसो ॥ ३३ ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

कहैं धर्म धनि यह दिन मोरा ❀ हे प्रभु दरशन पायों तोरा ॥
मुहिं किङ्करपर दाया कीजै ❀ दासजानि मोहिं यहबर दीजै ॥
निशि दिनरहौं चरण लौलीना ❀ पलकौ सुरति होइ नहिं छीना ॥
तव पद पङ्कज रुचिर सुहावन ❀ पदपरगाशहुपतितन्ह पावन ॥
कृपासिन्धु करुणानिधि स्वामी ❀ कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
अब वह कथा कहो निरुवारी ❀ हे साहब मैं तव बलिहारी ॥
चारिखानिरचिपुनिकस कीन्हा ❀ सो सब मोहिं बतावहु चीन्हा ॥

शाप मातु गायत्री लीना ❀ उलटिशापपुनि मातहिदीना ॥
 हम जो पाँच पुरुष की जोई ❀ पाँचों की तुम जननी होई ॥
 बिना पुरुष तुहि जनिहै बारा ❀ सो जानहि सकलो संसारा ॥
 दुहुन शाप फल पायो भाई ❀ उग्रह भइउ देह धरि आई ॥
 यह सब द्वन्द्वबाद है गयऊ ❀ तब पुनि जगकी रचनाभयऊ ॥
 चौरासी लख जोइनि भाऊ ❀ चारि खानि चारिहु निरमाऊ ॥

छंद-प्रथमअडज रच्यो जननी चतुरमुख पिण्डज कियो ।

विष्णु उषमज रच्यो तबहीं रुद्र अस्थावर कियो ॥

कीन्ह रचि जेहि खानि चारो जीव बन्धन दीन्ह हो ।

होन लागी कृषी कारण करण करता चीन्ह हो ॥ २८ ॥

सो०-इहि विधि चारोखान, चारहु रचि विस्तार किय ।

धर्मदास चित जान, बाणी चारिउ चारिको ॥ २९ ॥

चार खानि की गिनती धर्मदास वचन चौपाई ।

धर्मणि कहै जोरियुग पानी ❀ तुम सतगुरु यह कहो बखानी ॥

चारि खानि की उत्पति पाऊ ❀ भिन्न भिन्न मोहिं बरणियनाऊ ॥

चौरासी लक्ष योनि को धारा ❀ कवन योनि केतिकबिस्तारा ॥

सतगुरु वचन ।

कह कबीर सुनु धर्मणिबानी ❀ योनि भाव तोहिं कहों बखानी ॥

उदक जन्तु दशलखनिरमायउ ❀ अँकुर खानिदशलक्ष बनायउ ॥

गऊ अश्व औ चौपद जेते ❀ तीस लक्ष जोइनि भौ तेते ॥

नवहि लाख पक्षी परगासा ❀ लक्ष यकादश कीट निवासा ॥

चतुर लक्ष मानुष कर कहिये ❀ मानुषदेही सो पद लहिये ॥

और योनि परचौ नहिं पावै ❀ कर्म बन्ध भव महँ भटकावै ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास नाथो पद शीशा ❀ यह समुझाई कहो जगदीशा ॥
सकलजिवनिजिव एक समाना ❀ नरसम औरन्ह कहँ नहिं ज्ञाना ॥
सो चरित्र मोहिं कहौ बुझाई ❀ जाते जिय की संशय जाई ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मणि निजवंश अभूषण ❀ तोहिं बुझाई कहौ यह दूषण ॥
चारिखानि जिव एकै आहीं ❀ सबै विशेष अहै सुनु ताहीं ॥
अस्थावर ततु एकै आहीं ❀ एकै तत्त्व अंश रहवाहीं ॥
उषमज दोय तत्त्व अनुमाना ❀ अंडज तीनि तत्त्व गुणजाना ॥
पिंडज चारि तत्त्व जग कहिये ❀ मानुष पंच तत्त्व अनुसरिये ॥
ताते होय ज्ञान अधिकारी ❀ नर की देह भक्ति अनुसारी ॥

धर्मदास वचन ।

ये साहेब मोहिं कहु समुझाई ❀ कवन कवन ततु इन्हसब पाई ॥
उषमज औ अस्थावर अण्डा ❀ पिंडज औ मानुष परचण्डा ॥
केहि कहँ कवन तत्त्व दियसंगा ❀ ज्ञान बिलोय किहे सबरंगा ॥

सतगुरु वचन ।

छंद—सतगुरु कहे सुनु दास धर्मणि तत्त्वखानि को बेरनो ।
जाहि खानि जो तत्त्व आहै कहौ सो सब ढेरनो ॥
खानि अंडज तीनि ततु है आप बायू तेज हो ।
खानिअंकुर एक ततु है आप तत्त्व विशेष हो ॥ २६ ॥
सो०—पिण्डज नरपरमान, पांचतत्त्व तेहिसंग है ।
कहहिं कबीर प्रधान, धर्मदास ले परखिकै ॥ ३० ॥
उषमज में द्वै तत्त्व, आप तेज सो जानिये ।
पिण्डज चारि सुतत्त्व, पृथ्वी तेज अप बायु सम ॥ ३१ ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

धर्मदास कहैं सुनु बैदिछोरा ❀ यह संशय मेटहु प्रभु मोरा ॥
यह नर नारि तत्त्व सम आहीं ❀ इकसम ज्ञान सबनको नाहीं ॥

दयाशील संतोष क्षमा गुण ❀ कहूँ शून्य कहूँ आहि संपूरण ॥
 कोई मानुष है अति अपराधी ❀ कोई शीतल कोई काल उपाधी ॥
 कोई मारि तन करै अहारा ❀ काहू जीव दया उर धारा ॥
 कोई ज्ञान सुनत सुख मानै ❀ कोई काल गुण बाद बखानै ॥
 नर नारी नाना गुण होई ❀ साहेब बरणि सुनावहु सोई ॥

चार खानि की पारख—सतगुरु वचन ।

धर्मदास परखहु चितलाई ❀ नर नारी गुण कहौं बुझाई ॥
 जे तन रह्यो ज्ञानि अज्ञानी ❀ सो सब तोहिं कहौं सहिदानी ॥
 नाहर सर्प औ श्वान सियारा ❀ काग गिद्ध शूकर मञ्जारा ॥
 और अनन्तयोनि अघ खानी ❀ खाहिं अखज अधमा गुण जानी ॥
 इन्ह जोइनि ते जो जिवआवा ❀ नरकी योनि जन्मतिन्ह पावा ॥
 पीछे योनि सुभाव न छूटै ❀ कर्म प्रभाव महा पुनि घूटै ॥
 ताते सब चलि कागकि लेखो ❀ नर की देह प्रकट तेहि देखो ॥
 जिहि जोइनिते जोजिय आऊ ❀ ताको तैसो आह सुभाऊ ॥
 अघकरमी घातिक विष पूजा ❀ योनि प्रभाव होइ नहिं दूजा ॥
 सतगुरु मिलै तो ज्ञान लखावै ❀ कागदशा तब सब बिसरावै ॥
 मुरचा योनि छूटै तब भाई ❀ ज्ञान मसाला फिरै बनाई ॥
 जस धोबी बस्तर कहँ धोवै ❀ जल साबुन मिलि उज्ज्वल होवै ॥
 थोरि मइलि करि बस्तर भाई ❀ थोरे ही श्रम मैलि नशाई ॥
 निपट मलिन जे बस्तर आही ❀ ताकहँ अधिक अधिक श्रम चाही ॥
 जैसो मैलि वस्त्र कर भाऊ ❀ ऐसो जीवन्ह केर स्वभाऊ ॥
 कोई जीव अंकुरी होई ❀ स्वल्प ज्ञान सों गहै बिलोई ॥

छंद—जन्म जन्म को मैलि छूटै पुरुष शब्द जो पावई ।

नाम भाव सुमिरण गहै सो जीवलोक सिधावई ॥

जो शब्द निश्चय कै गहै सो जीव अमिय अमोल है ।

नामबल निजघर चलै मिलि हंस करै कलोल है ॥ ३० ॥

सो०—पुरुष नाम परताप, काल न रोंकै जीवकहँ ।
देखि जीव को छाप, काल रहै शिरनाइकै ॥ ३२ ॥

सतगुरु वचन—चौपाई ।

धर्मणि नरदेही सुखदाई ❀ नरदेही गुरुज्ञान समाई ॥
सो तनु पाइ आपु जहँ जावै ❀ सतगुरु भक्ति बिना यम खावै ॥
नरतनु वा कि नारि चौरासी ❀ शब्द न गहै मूढ़ मति नासी ॥
चौरासी की चालि न छाँड़ै ❀ सत्य नामते नेह न माड़ै ॥
लै गाड़हिं चौरासी माहीं ❀ परचै ज्ञान तहाँ कछु नाहीं ॥
बहुत भांति कहि कहि समुझावा ❀ जीव बिपत्तिजानि गोहरावा ॥
यह तनु पाय भजै सतनामा ❀ नामप्रताप लहै निजधामा ॥

छंद—आदि नाम बिदेह अस्थिर परखि जो जियरा गहै ।

पाय बीरासार सुमिरण गुरुकृपा मारग लहै ॥

तजि काल चाल मराल पथगहि नीर क्षीर बिचारही ।

ज्ञानदृष्टि अदृष्टि पेखे क्षर अक्षर निरुवारई ॥ ३१ ॥

सो०—निहअक्षर है सार, अक्षर में लखि पाइये ।

धर्मणि करहु विचार, निहअक्षर निहतत्वसो ॥ ३३ ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

कहैं धर्म धनि यह दिन मोरा ❀ हे प्रभु दरशन पायों तोरा ॥
मुहिं किङ्करपर दाया कीजै ❀ दासजानि मोहिं यहबर दीजै ॥
निशि दिनरहों चरण लौलीना ❀ पलकौ सुरति होइनहिं छीना ॥
तव पद पङ्कज रुचिर सुहावन ❀ पदपरगाशहुपतितन्ह पावन ॥
कृपासिन्धु करुणानिधि स्वामी ❀ कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
अब वह कथा कहो निरुवारी ❀ हे साहब मैं तव बलिहारी ॥
चारिखानिरचिपुनिकस कीन्हा ❀ सो सब मोहिं बतावहु चीन्हा ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मणि यह है यम बाजी ❀ जन्म हीन सो पंडित काजी ॥
 जन्मताहिगो सेवा भाखै ❀ तेजि सुधा यह नर विष चाखै ॥
 चारिहु मिलि यह रचना कीन्हा ❀ कच्चा रंग जीव कहँ दीन्हा ॥
 नरकिदेह कस कीन्हा बिचारा ❀ चौदहजन्महिं सङ्ग सुधारा ॥
 ॐकार है वेद को मूला ❀ ॐकार में सब जग भूला ॥
 है ॐकार निरंजन जानो ❀ पुरुष नाम सो गुप्त अमानो ॥
 सहस अठासी ब्रह्मा जाया ❀ भा बिस्तार काल की छाया ॥
 ब्रह्मा ते जिव उपज्यो वारा ❀ तिन्ह पुनिकीन बहुत बिस्तारा ॥
 अमृत शास्त्र पुराण बखाना ❀ जाके मत सब जीव भुलाना ॥
 जीवन्ह कहँ ब्रह्म अरुभावा ❀ अलख निरंजन कहि समुभावा ॥
 वेदमते सब जिय भरमाने ❀ सत्य पुरुष का मर्म न जाने ॥
 निरंकार कस कीन तमासा ❀ सो चरित्र पूछहु भ्रमदासा ॥
 छंद-असुर है आपुहि सतावै देव ऋषि मुनिकारकं ।

पुनि धरै अवतार रक्षक असुर करि संहारकं ॥

जीव को दिखलाय लीला आपनी महिमा धनी ।

देखि जीवन्ह बाँध आशा यही हैं रक्षक धनी ॥३२॥

सो०-रक्षक कला देखाय, अन्त भक्ष्य जीवन्ह करै ।

पाछे जिव पछताय, जबहिं काल के मुख परै ॥३४॥

यम का फन्दा रचकर जीवों को बन्धन और कष्ट में डालना ।

चौपाई ।

अरसठि तीर्थ ब्रह्मा लै थापा ❀ अकरम करम पुण्य औ पापा ॥
 बारह राशि नखत सत्ताइस ❀ सात बार पन्द्रह तिथि लाइस ॥
 चारोयुग पुनि बाँधेसि जानी ❀ घरी दण्ड श्वासा अनुमानी ॥
 कार्तिक माघ पुण्य कहि दीन्हा ❀ जन्मबाजि काहू नहिं चीन्हा ॥
 तीरथ धाम को बाँध महातम ❀ तजै न भर्म न चीन्है आतम ॥

जीवन को अरुम्हाइसि काला ❀ पाप पुण्य में जीव बिहाला ॥
 सत्य शब्द बिनु बाचै नाही ❀ नाम बिना यम के मुख जाहीं ॥
 अस जानी जिय पुण्य कमावै ❀ किञ्चित फलते क्षुधा न जावै ॥
 जौलों पुरुष डोरि नहिं गहई ❀ तौलों फिरि फिरि जोइनि बहई ॥
 अमित कलाजगजिवहि डगावा ❀ पुरुष सुभेद जीव नहिं पावा ॥
 लाभ जानि जिव लागै धाई ❀ आशा बंध काल धरि खाई ॥
 यम बाजी कोइ चीन्हि न पावै ❀ आशा दै यम जीव सतावै ॥
 प्रथमहि सतयुग को व्यवहारा ❀ जीवन्ह लै यम करै अहारा ॥
 सवालक्ष जिव नित लै खाई ❀ परबल काल निरञ्जन राई ॥
 तप्त शिला निशि दिन सो जरई ❀ तापरलै जीवन्ह कहँ धरई ॥
 धीर्य कराय कष्ट दिखराई ❀ दाढ़वाभि जिय अति दुख पाई ॥
 महाकष्ट दुख गज्जन करई ❀ पुनि जीवन्ह जोइन संधरई ॥
 बहुत कष्ट जियरा दुख पावा ❀ तप्त शिलापर जब बैठावा ॥
 तबहीं जीवन्ह कीन्ह पुकारा ❀ धर्मराय दे कष्ट अपारा ॥
 यम के हाथ सों आनि उबारो ❀ महाकष्ट दुख मोर निवारो ॥

छंद—देखि जीवन्ह कष्ट अति दाया पुरुष मन आइया ।

दयानिधि सत पुरुष समरथ तबहिं मोहिं बोलाइया ॥

कहेन्हि मोहिं समुम्हाइ बहुविधि जिवन्ह जाय सुनावहू ।

तुम्हरे दरश ह्वै जीव शीतल जाय तप्त जुड़ावहू ॥३३॥

सो०—आज्ञा लीन्हो मानि, जे कछु पुरुष कहा सही ।

ततक्षण कीन्ह पयान, शीश नाय सतपुरुष कहँ ॥३५॥

चौपाई ।

आये जहाँ जीव दुख पावै ❀ काल निरंजन जीव चबावै ॥
 छट पट करहिं जीव तेहि ठाई ❀ ठाढ़ भयो जीवन्ह ढिगजाई ॥
 मोहिं राखिजिव कीन को आरी ❀ हे साहब अब लेहु उबारी ॥
 पुरुष सेइ जिव कीन जुड़ावा ❀ तबपुनि जीवन्ह अस्तुतिलावा ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मणि यह है यम बाजी ❀ जन्म हीन सो पंडित काजी ॥
 जन्मताहिगो सेवा भाखै ❀ तेजि सुधा यह नर विष चाखै ॥
 चारिहु मिलि यह रचना कीन्हा ❀ कच्चा रंग जीव कहँ दीन्हा ॥
 नरकिदेह कस कीन्ह बिचारा ❀ चौदहजन्महिं सङ्ग सुधारा ॥
 ॐकार है वेद को मूला ❀ ॐकार में सब जग भूला ॥
 है ॐकार निरंजन जानो ❀ पुरुष नाम सो गुप्त अमानो ॥
 सहस अठासी ब्रह्मा जाया ❀ भा बिस्तार काल की छाया ॥
 ब्रह्मा ते जिव उपज्यो वारा ❀ तिन्ह पुनिकीन बहुत बिस्तारा ॥
 अमृत शास्त्र पुराण बखाना ❀ जाके मत सब जीव भुलाना ॥
 जीवन्ह कहँ ब्रह्म अरुभावा ❀ अलख निरंजन कहि समुभावा ॥
 वेदमते सब जिय भरमाने ❀ सत्य पुरुष का मर्म न जाने ॥
 निरंकार कस कीन तमासा ❀ सो चरित्र पूछहु भ्रमदासा ॥

छंद-असुर है आपुहि सतावै देव ऋषि मुनिकारकं ।

पुनि धरै अवतार रक्षक असुर करि संहारकं ॥

जीव को दिखलाय लीला आपनी महिमा घनी ।

देखि जीवन्ह बाँध आशा यही हैं रक्षक धनी ॥३२॥

सो०-रक्षक कला देखाय, अन्त भक्ष्य जीवन्ह करै ।

पाछे जिव पछताय, जबहिं काल के मुख परै ॥३४॥

यम का फन्दा रचकर जीवों को बन्धन और कष्ट में डालना ।

चौपाई ।

अरसठि तीर्थ ब्रह्मा लै थापा ❀ अकरम करम पुण्य औ पापा ॥
 बारह राशि नखत सत्ताइस ❀ सात बार पन्द्रह तिथि लाइस ॥
 चारोयुग पुनि बाँधेसि जानी ❀ घरी दण्ड श्वासा अनुमानी ॥
 कार्तिक माघ पुण्य कहि दीन्हा ❀ जन्मबाजि काहु नहिं चीन्हा ॥
 तीरथ धाम को बाँध महातम ❀ तजै न भर्म न चीन्है आतम ॥

जीवन को अरुम्हाइसि काला ❀ पाप पुण्य में जीव बिहाला ॥
 सत्य शब्द बिनु बाचै नाही ❀ नाम बिना यम के मुख जाहीं ॥
 अस जानी जिय पुण्य कमावै ❀ किञ्चित फलते क्षुधा न जावै ॥
 जौलों पुरुष डोरि नहिं गहई ❀ तौलों फिरि फिरि जोइनि बहई ॥
 अमित कलाजगजिवहि डगावा ❀ पुरुष सुभेद जीव नहिं पावा ॥
 लाभ जानि जिव लागै धाई ❀ आशा बंध काल धरि खाई ॥
 यम बाजी कोइ चीन्हि न पावै ❀ आशा दै यम जीव सतावै ॥
 प्रथमहि सतयुग को व्यवहारा ❀ जीवन्ह लै यम करै अहारा ॥
 सवालक्ष जिव नित लै खाई ❀ परबल काल निरञ्जन राई ॥
 तस शिला निशि दिन सो जरई ❀ तापरलै जीवन्ह कहँ धरई ॥
 धीर्य कराय कष्ट दिखराई ❀ दाढ़चाभि जिय अति दुख पाई ॥
 महाकष्ट दुख गञ्जन करई ❀ पुनि जीवन्ह जोइन संधरई ॥
 बहुत कष्ट जियरा दुख पावा ❀ तस शिलापर जब बैठावा ॥
 तबहीं जीवन्ह कीन्ह पुकारा ❀ धर्मराय दे कष्ट अपारा ॥
 यम के हाथ सों आनि उबारो ❀ महाकष्ट दुख मोर निवारो ॥

छंद-देखि जीवन्ह कष्ट अति दाया पुरुष मन आइया ।

दयानिधि सत पुरुष समरथ तबहिं मोहिं बोलाइया ॥

कहेन्हि मोहिं समुम्हाइ बहुविधि जिवन्ह जाय सुनावहू ।

तुम्हरे दरश है जीव शीतल जाय तस जुड़ावहू ॥३३॥

सो०-आज्ञा लीन्हो मानि, जे कछु पुरुष कहा सही ।

ततक्षण कीन्ह पयान, शीश नाय सतपुरुष कहँ ॥३५॥

चौपाई ।

आये जहाँ जीव दुख पावै ❀ काल निरंजन जीव चबावै ॥
 छट पट करहिं जीव तेहि ठाई ❀ ठाढ़ भयो जीवन्ह ढिगजाई ॥
 मोहिं राखि जिव कीन को आरी ❀ हे साहब अब लेहु उबारी ॥
 पुरुष सेइ जिव कीन जुड़ावा ❀ तबपुनि जीवन्ह अस्तुतिलावा ॥

यम से छोरि लेहु मोहिं स्वामी ❀ दया करहु तुम अन्तर्यामी ॥
 तवपुनि कह्यो जिवन्ह समुझाई ❀ जोर करै तव बचन न साँई ॥
 जब तुम जाय धरहु नरदेहा ❀ तबतुम करयो शब्द सों नेहा ॥
 देह धरे सतशब्द समैहैं ❀ तब हंसा सतलोकहि ऐहैं ॥
 पुरुष अंक पावे परवाना ❀ पुरुष नाम सुमिरै सहिदाना ॥
 जहँ आशा तहँ बासा होई ❀ मन बच कर्म सुमिर जो कोई ॥
 देह धरे कीन्हेहु जेहि आशा ❀ अंतहु आय रहै तेहि पासा ॥
 कहैं जीव सुनु पुरुष पुराना ❀ देह धरे बिसरै यह ज्ञाना ॥
 पुरुष जानि सुमिरहु यमराई ❀ वेद पुराण कहै समझाई ॥
 शास्त्र पुराण कहै मत येहा ❀ निराकार सों कीजै नेहा ॥
 सुर नर मुनि गणतेंतिस क्रोरी ❀ बाँधे सबै निरंजन डोरी ॥
 ताके मते कीन्ह मैं आशा ❀ अब यह जीव परा यमफाँसा ॥
 सुनहु जीव छल यह यमकेरा ❀ फंद अनेक काल किहुँ घेरा ॥

छंद—काल कला अनेक कीन्हो जीवकारण दृढ़ रहो ।

वेद शास्त्र पुराण स्मृति तेरुधौ काल कराल हो ॥

देह धरि नर प्रकट हो बसि फेरि आशा कीन्हेऊ ।

भरमि इत उत कालवश बहुपंथ में चित दीन्हेऊ ॥३४॥

सो०—काल कराल प्रचंड, जीव परे वश ताहिके ।

जन्म जन्म यमदंड, सत्य नाम सुमिरण बिना ॥३६॥

चौपाई ।

क्षणयक जीवन्ह कहँ सुखदीन्हा ❀ जीवन्ह यह्यो ज्ञान को चीन्हा ॥
 जब तुम देह धरो जग आई ❀ तब हम शब्द कहव गोहराई ॥
 जो गहिहै सत नाम कि डोरी ❀ तब आनव हम यम से छोरी ॥
 जिवन्ह प्रबोधिपुरुषपहँ गयऊ ❀ जीवन्ह को दुखवरणि सुनयऊ ॥
 पुरुष दयालु दयानिधि स्वामी ❀ जिव के मूल अमान अकामी ॥
 कहेन्हिमोहिं बहुविधिसमुझाई ❀ जीवन्ह आनहु शब्द चेताई ॥

गुप्त शब्द प्रभु हमकहँ दीन्हा ❀ नाम बिदेह मुक्ति को चीन्हा ॥
 बिनु रसना ते सो धुनि होई ❀ गुरु गमि ते लखि पावै कोई ॥
 पंच अमीय मुक्ति को मूला ❀ जातें मिले गर्भ अस्थूला ॥
 परिचै नाम गहै जो हंसा ❀ तरै एकोतर ताको बंसा ॥
 नाम डोरि गहि लोकहि जाई ❀ धर्मराय जेहि देखि डराई ॥

गुरुमहिमा ।

गुरुमुख शब्दथापि दिलराखा ❀ निशिदिन नामभुधारसचाखा ॥
 पियसनेहजिमि कामिनि लागी ❀ तिमिगुरुसुरतिशिष्यअनुरागी ॥
 पलक पलक निरखै गुरुकांती ❀ शिष्य चकोर गुरु शशिसांती ॥
 पतिव्रता ज्यों पतिव्रत ठानै ❀ दुतियपुरुष सपनेहु नहिं जानै ॥
 पतिव्रता दोउकुलहि उजागर ❀ यह गुन गहहु संतमतिआगर ॥
 जिमि पतिव्रता पतिहिमन लावै ❀ गुरुआज्ञाअस शिष्य जोगावै ॥
 गुरुते अधिक और कोउ नाहीं ❀ धर्मदास परिखहु हियमाहीं ॥
 तीर्थधाम देवल औ देवा ❀ शीश आपते लावै सेवा ॥
 तौ नहिं वचन कहैं हितकारी ❀ भूले भरमै यह संसारी ॥
 गुरु दयालु अस हैं सुखदाई ❀ देहिं मुक्ति को पंथ बताई ॥
 गुरुते अधिक कौन है दूजा ❀ धर्म तेज करु सतगुरु पूजा ॥

छंद—गुरुभक्ति अटल अमान धर्मनि यहि सरिस दूजा नहीं ।

योगजप व्रत दान बहुविधि तृण सदृश जन जानहीं ॥

सतगुरुदया जेहि सन्त पर ताके हृदय वह आवई ।

मम गिरा परखि हरषि गहै जो तिमिर मोह नशावई ॥ ३५ ॥

सो०—दीपक सतगुरुज्ञान, निरखहि सन्त अँजोर तेहि ।

पावै मुक्ति अमान, सत्य नाम जो गहि रहै ॥ ३७ ॥

चोपाई ।

शुकदेव भो गर्भ योगेश्वर ❀ सोनिजसमनहिंथापिहि दूसर ॥
 तपके तेज गयो हरिधामा ❀ गुरुबिहीन नहिं लहबिश्रामा ॥

कहाविष्णुऋषिह्याँ कहँ आयहु ❀ गुरुबिहीन तप तेज भुलायहु ॥
 गुरु बिहीन नर मोहिं न भावै ❀ फिरि फिरि जोइन सङ्कट पावै ॥
 पलटि जाहु गुरु करहु सयाना ❀ तब पैहो इहवाँ असथाना ॥
 शुकदेव मुनि बेगि सिधाये ❀ गुरु बिहीन तहँ रहै न पाये ॥
 जनक बिदेह कीन गुरु ज्ञानी ❀ हरषि मिले तब शारँग पानी ॥
 नारद ब्रह्मासुत बड़ ज्ञानी ❀ यह सबकथा जगत सब जानी ॥
 और देवऋषि मुनिवर जेते ❀ बिन गुरु ठौर न पावहिं तेते ॥
 जो गुरु मिले तो पन्थ बतावै ❀ सार असार परखि दिखलावै ॥
 गुरु सोई जो छाँड़ै भर्मा ❀ कृत्रिम तजै भजै निहकर्मा ॥
 सत्य पुरुष को कहै सँदेशा ❀ सत्य शब्द मिलि करै प्रवेशा ॥
 पाप पुण्य की आशा नाहीं ❀ बैठे अक्षय वृक्ष की छाहीं ॥
 भृंग मता होइ जाके पासा ❀ सोई गुरु साधू भ्रमदासा ॥

छंद—रहित घर बतलावहीं जग सोई गुरु सब जानिये ।
 तीनि तजि मिलि जाय चौथे तासु बचन प्रमानिये ॥
 पाँच तीनि अधीन पावा न्यारा शब्द बिदेह हो ।
 देह माँह बिदेह दरशै गुरुमतो सुनि एह हो ॥ ३६ ॥
 सो०—ध्यान बिदेह समाय, देह धरे को फल यही ।
 नहिं आवै नहिं जाय, मिलै बिदेहि बिदेह है ॥ ३८ ॥

धर्मदासवचन ।

हे प्रभु मोहिं कृतारथ कीन्हा ❀ पुण्यभाग मोहिं दरशनदीन्हा ॥
 तुम्हरो गुण मोहिं बरणि न जाई ❀ मोहिं अचेतहि लियो जगाई ॥
 सुधाबचन तुम मुहिं प्रिय लागो ❀ सुनतहि सुधा मोहिं मद भागो ॥
 अब वह कथा कहो मुहि पाहीं ❀ प्रथमै युग आवै की छाहीं ॥

सतगुरुवचन ।

सुनो धर्म निज पूछहु मोहीं ❀ युग युग कथा कहों मैं तोहीं ॥
 जबहिं चलयो जीवन के काजा ❀ पुरुष प्रताप शीश पर छाजा ॥

सतयुग नाम अचिन्त कहाये ❀ आज्ञा पुरुष जीव पहुँ आये ॥
आवत मिल्यो धर्म अन्याई ❀ तिन्ह पुनि हमसों रारि बढाई ॥

कालवर्णन ।

कहैं धर्म सुनिये युग ज्ञानी ❀ बिनती एक करों बल ठानी ॥
तीनों लोक पुरुष मोहि दीन्हा ❀ तुम कहँ चलेहु काहमत कीन्हा ॥
तासों कह्यो सुनो अन्याई ❀ तुम बहु कीन्ह कपट चतुराई ॥
जीवन कहँ तुम बहुत भुलावा ❀ बार बार जीवन संतावा ॥
पुरुषभेद तुम गोपित राखा ❀ आपन महिमा परगट भाखा ॥
तप्तशिला पर जिवन्ह जरावहु ❀ जारि बारि निज स्वादकरावहु ॥
ताते मोकहँ पुरुष पठाऊ ❀ जीवन्ह शब्द चेतावन जाऊ ॥
यह सुनि काल भयङ्कर भयऊ ❀ हमकहँ त्रास देखावन लयऊ ॥
तब हम कहा सुनो अन्याई ❀ तोरे डर हम ताहि डेराई ॥
हमकहँ तेज पुरुष बल आहीं ❀ अरे कालतव डर मोहिंनहीं ॥
पुरुष प्रताप सुमिरि तेहि बारा ❀ शब्द अंग ते कालहि मारा ॥
श्याम ललाट भयो तेहिबारा ❀ लोचन ललित हेरु तेहिबारा ॥
जरे क्रोधवश कछु न बसाई ❀ तब पुनि परचो चरणतर आई ॥

छंद—कहैं निरञ्जन सुनो ज्ञानी करों बिनती तोहिं सों ।

कन्यकामैं त्रास कीन्हो घाटि भइ अब मोहिं सों ॥

पुरुष सम अब तोहिं जानो नाहिं दूजी भावना ।

तुम बड़ सर्वज्ञ साहेब छिमाछत तुम नावना ॥ ३७ ॥

सो०—तुमहु करहु बखशीश, पुरुष दीन जस हारिकै ।

षोडश महँ तुम ईश, ज्ञानी पूरुष एकसम ॥ ३६ ॥

चौपाई ।

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन ❀ तुम तो भयहु बंशमहँ अंजन ॥
जीवब कहँ मैं आनब जाई ❀ सत्य शब्द शत नाम दृढ़ाई ॥
कहैं धर्म सुनु ज्ञानी ताता ❀ दृढ़ कै जानु हमारी बाता ॥

कहा तुम्हार जीवनहिं मानिहिं ❀ हमरीदिशि है बाद बखानिहिं ॥
 दृढ़ फन्दा में रचा बनाई ❀ जिहि महुँ जीव रहै अरुभाई ॥
 वेद शास्त्र अमृत गुण नाना ❀ पुत्र तीनि देवन परधाना ॥
 तिनहुँ बहु बीजी रचि राखा ❀ हमरी डोरि ज्ञान सुखि भाखा ॥
 देवल देव पषान पुजाई ❀ राख्यो जिवन्ह भर्म अरुभाई ॥
 पुजा विश्व बलि देव अराधी ❀ यह मत जिवन्ह राख्यो बाँधी ॥
 और अनेक फन्द है मोरा ❀ जीव शब्द किमि मनिहै तोरा ॥
 कह ज्ञानी सुनु काल अन्याई ❀ कहाँ फन्द तुम रचा बनाई ॥
 जितिक फन्द तुम रचेउ बिचारी ❀ सहस बदन ते सभै बिडारी ॥
 जेहि जिवन्ह में शब्द दृढ़ाउब ❀ फन्दा तोरि सबै मुक्ताउब ॥
 जब जिव चिन्हिहै शब्द हमारा ❀ तजिहि भर्म सब तोर पसारा ॥
 सत्य नाम जिवन्ह समुभाइव ❀ हंस उबारि लोक लै आइव ॥

छंद—सत्य शब्द दृढ़ाई हैं सहिदया शील क्षमा धनी ।
 सहज शील संतोष सारा आत्मपूजा गुनधनी ॥
 पुरुष सुमिरन सार बीरा नाम अबिचल गाइहैं ।
 शीश तो हरिचरन दै कै सत्यलोकहि आइहैं ॥ ३८ ॥
 सो०—अमी नाम बिस्तार हंसन देव चेताइ हैं ।
 मर्दहिं मान तोहार, धर्मराय सुनु चित्त दै ॥ ४० ॥

चौपाई ।

धर्मराय कहैं सुनो हो ज्ञानी ❀ कवन नाम परगट सहिदानी ॥
 जो कोई हंसा होय तुम्हारा ❀ ताहि न रोको बचन हमारा ॥
 नाम निशान कहों समुभाई ❀ नाम सुनो तेहि निकट न जाई ॥
 सुनो धर्म यह प्रकट सुभाखा ❀ गुप्त अंक बीरामहँ राखा ॥
 नाम अचिन्त सुकृत सत गाई ❀ सतयुग इहै नाम लौ लाई ॥
 ध्यान अंक तो गुप्तहि आहा ❀ बीरा अंक न पैहो थाहा ॥

घाट घाट चौकी रखवारी ❀ जाते दूटै भर्म केवारी ॥
 अपने जीवन कहँ चेतवाई ❀ नाम प्रताप हंस घर जाई ॥
 कहँ धर्म तुम जाहु संसारा ❀ आनहु जीवन नाम अधारा ॥
 जो जीवन तुम्हार गुणगाइब ❀ ताके निकट तो हम नहिं जाइब ॥
 देख्यो जीवहि धर्म सकाना ❀ तबहिं तहाँते कीन पयाना ॥
 आयो चतुरानन के पासा ❀ तासों कीन शब्द परकासा ॥
 ब्रह्मा चित दै सुनबै लीन्हा ❀ पूछै बहुत पुरुष को चीन्हा ॥
 तबहिं निरंजन कीन उपाई ❀ जेठ पुत्र ब्रह्म में जाई ॥
 नीरंजन मन घंट बिराजै ❀ ब्रह्मा बुद्धि फेरि उर राजै ॥
 निरंकार निर्गुण अविनासी ❀ ज्योतिस्वरूप शून्य के बासी ॥
 ताहि पुरुष कहँ वेद बखानै ❀ आज्ञा वेद ताहि हम जानै ॥
 जब देखा तेहि काल दृढ़ाये ❀ तहँ ते उठे विष्णुपहँ आये ॥
 विष्णुते कह्यो पुरुषउपदेशा ❀ काल बश्य नहिं गहै सँदेशा ॥
 कहँ विष्णु मोहिं सम को आही ❀ चारि पदार्थ हमरे पाही ॥
 काम मोक्ष धर्मार्थ माही ❀ चाहै जौन देहुँ मैं ताही ॥
 सुनहु सोविष्णुमोक्ष कसतोई ❀ मोक्ष अक्षर परलैतक होई ॥
 तुम नाहीं थिर मुनिकस करहु ❀ मिथ्या साखि कवनगुण भरहु ॥
 रहे सकुचि सुनि निर्भयबानी ❀ निजहियविष्णुअंशभयआनी ॥
 तबपुनिनागलोक चलि गयऊ ❀ तासे कछु कछु कहबे लयऊ ॥
 पुरुष भेद कोउ जानत नाहीं ❀ लागे सभय काल की छाहीं ॥
 राखनिहार तुम चीन्हों भाई ❀ यमसों को तोहिं लिहै छुड़ाई ॥
 ब्रह्मा विष्णु रुद्र जेहि ध्यावै ❀ वेद जासुगुण निशिदिन गावै ॥
 सोइ पुरुष मोहिं राखनिहारा ❀ सोई तुमहिं लै करि है गारा ॥
 राखनिहार और कोउ आही ❀ करु विश्वास मिलावों ताही ॥
 शेष खानि विष तेज सुभाऊ ❀ बचन प्रतीति हृदय नहिं आऊ ॥
 तब आगे मृतमण्डल माहीं ❀ पुरुष जीव कोउ देख्यो नाहीं ॥

कहा तुम्हार जीवनहिं मानिहिं ❀ हमरीदिशि हौ बाद बखानिहिं ॥
 दृढ़ फन्दा में रचा बनाई ❀ जिहि महँ जीव रहै अरुम्भाई ॥
 वेद शास्त्र अमृत गुण नाना ❀ पुत्र तीनि देवन परधाना ॥
 तिनहूँ बहु बीजी रचि राखा ❀ हमरी डोरि ज्ञान सुखि भाखा ॥
 देवल देव पषान पुजाई ❀ राख्यो जिवन्ह भर्म अरुम्भाई ॥
 पुजा विश्व बलि देव अराधी ❀ यह मत जीवन्ह राख्यो बाँधी ॥
 और अनेक फन्द है मोरा ❀ जीव शब्द किमि मनिहै तोरा ॥
 कह ज्ञानी सुनु काल अन्याई ❀ कहाँ फन्द तुम रचा बनाई ॥
 जितिक फन्द तुम रचेउ बिचारी ❀ सहस बदन ते सभै बिडारी ॥
 जेहि जीवन्ह में शब्द दृढ़ाउब ❀ फन्दा तोरि सबै मुकताउब ॥
 जब जिव चिन्हिहै शब्द हमारा ❀ तजिहि भर्म सब तोर पसारा ॥
 सत्य नाम जीवन्ह समुम्भाइव ❀ हंस उबारि लोक लै आइब ॥

छंद—सत्य शब्द दृढ़ाइ हैं सहिदया शील क्षमा धनी ।

सहज शील संतोष सारा आत्मपूजा गुनधनी ॥

पुरुष सुमिरन सार बीरा नाम अबिचल गाइहैं ।

शीश तो हरिचरन दै कै सत्यलोकहि आइहैं ॥ ३८ ॥

सो०—अमी नाम बिस्तार हंसन देव चेताइ हैं ।

मर्दाहिं मान तोहार, धर्मराय सुनु चित्त दै ॥ ४० ॥

चोपाई ।

धर्मराय कहैं सुनो हो ज्ञानी ❀ कवन नाम परगट सहिदानी ॥
 जो कोई हंसा होय तुम्हारा ❀ ताहि न रोको बचन हमारा ॥
 नाम निशान कहौ समुम्भाई ❀ नाम सुनो तेहि निकट न जाई ॥
 सुनो धर्म यह प्रकट सुभाखा ❀ गुप्त अंक बीरामहँ राखा ॥
 नाम अचिन्त सुकृत सत गाई ❀ सतयुग इहै नाम लौ लाई ॥
 ध्यान अंक तो गुप्तहि आहा ❀ बीरा अंक न पैहो थाहा ॥

घाट घाट चौकी रखवारी ❀ जाते दूटै भर्म केवारी ॥
 अपने जीवन कहँ चेतवाई ❀ नाम प्रताप हंस घर जाई ॥
 कहँ धर्म तुम जाहु संसारा ❀ आनहु जीवन नाम अधारा ॥
 जो जीवन तुम्हार गुणगाइब ❀ ताके निकटतोहम नहिं जाइब ॥
 देख्यो जीवहि धर्म सकाना ❀ तबहिं तहाँते कीन पयाना ॥
 आयो चतुरानन के पासा ❀ तासों कीन शब्द परकासा ॥
 ब्रह्मा चित दै सुनबै लीन्हा ❀ पूछै बहुत पुरुष को चीन्हा ॥
 तबहिं निरंजन कीन उपाई ❀ जेठ पुत्र ब्रह्म में जाई ॥
 नीरंजन मन घंट बिराजै ❀ ब्रह्मा बुद्धि फेरि उर राजै ॥
 निरंकार निर्गुण अविनासी ❀ ज्योतिस्वरूप शून्य के बासी ॥
 ताहि पुरुष कहँ वेद बखानै ❀ आज्ञा वेद ताहि हम जानै ॥
 जब देखा तेहि काल दृढ़ाये ❀ तहँ ते उठे विष्णुपहँ आये ॥
 विष्णुते कहाँ पुरुषउपदेशा ❀ काल बश्य नहिं गहै सँदेशा ॥
 कहँ विष्णु मोहिं सम को आही ❀ चारि पदारथ हमरे पाही ॥
 काम मोक्ष धर्मारथ माही ❀ चाहै जौन देहुँ में ताही ॥
 सुनहु सोविष्णुमोक्ष कसतोई ❀ मोक्ष अक्षर परलैतक होई ॥
 तुम नाहीं थिर मुनिकस करहु ❀ मिथ्या साखि कवनगुण भरहु ॥
 रहे सकुचि सुनि निर्भयबानी ❀ निजहियविष्णु अंशभयआनी ॥
 तबपुनिनागलोक चलि गयऊ ❀ तासे कछु कछु कहबे लयऊ ॥
 पुरुष भेद कोउ जानत नाहीं ❀ लागे सभय काल की छाहीं ॥
 रखनिहार तुम चीन्हों भाई ❀ यमसों को तोहिं लिहै छुड़ाई ॥
 ब्रह्मा विष्णु रुद्र जेहि ध्यावै ❀ वेद जासुगुण निशिदिन गावै ॥
 सोइ पुरुष मोहिं राखनिहारा ❀ सोई तुमहिं लै करि है गारा ॥
 राखनिहार और कोउ आही ❀ करु विश्वास मिलावों ताही ॥
 शेष खानि विष तेज सुभाऊ ❀ बचन प्रतीति हृदय नहिं आऊ ॥
 तब आगे मृतमण्डल माहीं ❀ पुरुष जीव कोउ देख्यो नाहीं ॥

कहाविष्णुऋषिह्याँ कहँ आयहु ❀ गुरुबिहीन तप तेज भुलायहु ॥
 गुरु बिहीन नर मोहिं न भावै ❀ फिरि फिरि जोइन सङ्कट पावै ॥
 पलटि जाहु गुरु करहु सयाना ❀ तब पैहो इहवाँ असथाना ॥
 शुकदेव मुनि बेगि सिधाये ❀ गुरु बिहीन तहँ रहै न पाये ॥
 जनक बिदेह कीन गुरु ज्ञानी ❀ हरषि मिले तब शारँग पानी ॥
 नारद ब्रह्मासुत बड़ ज्ञानी ❀ यह सबकथा जगत सब जानी ॥
 और देवऋषि मुनिवर जेते ❀ बिन गुरु ठौर न पावहिं तेते ॥
 जो गुरु मिले तो पन्थ बतावै ❀ सार असार परखि दिखलावै ॥
 गुरु सोई जो छाँड़ै भर्मा ❀ कृत्रिम तजै भजै निहकर्मा ॥
 सत्य पुरुष को कहै सँदेशा ❀ सत्य शब्द मिलि करै प्रवेशा ॥
 पाप पुण्य की आशा नाहीं ❀ बैठे अक्षय वृक्ष की छाहीं ॥
 भृंग मता होइ जाके पासा ❀ सोई गुरु साधू भ्रमदासा ॥

छंद—रहित घर बतलावहीं जग सोई गुरु सब जानिये ।

तीनितजि मिलि जाय चौथे तासु बचन प्रमानिये ॥

पाँच तीनि अधीन पावा न्यारा शब्द बिदेह हो ।

देह माँह बिदेह दरशै गुरुमतो सुनि एह हो ॥ ३६ ॥

सो०—ध्यान बिदेह समाय, देह धरे को फल यही ।

नहिं आवै नहिं जाय, मिलै बिदेहि बिदेह है ॥ ३८ ॥

धर्मदासवचन ।

हे प्रभु मोहिं कृतारथ कीन्हा ❀ पुण्यभाग मोहिं दरशनदीन्हा ॥
 तुम्हरोगुण मोहिं बरणि न जाई ❀ मोहिं अचेतहि लियो जगाई ॥
 सुधाबचन तुम मुहिं प्रिय लागो ❀ सुनतहि सुधा मोहिं मद भागो ॥
 अब वह कथा कहो मुहि पाहीं ❀ प्रथमै युग आवै की छाहीं ॥

सतगुरुवचन ।

सुनो धर्म निज पूछहु मोहीं ❀ युगयुग कथा कहों मैं तोहीं ॥
 जबहिं चलयो जीवन के काजा ❀ पुरुष प्रताप शीश पर छाजा ॥

सतयुग नाम अचिन्त कहाये ❀ आज्ञा पुरुष जीव पहुँ आये ॥
आवत मिल्यो धर्म अन्याई ❀ तिन्ह पुनि हमसों रारि बढाई ॥

कालवर्णन ।

कहैं धर्म सुनिये युग ज्ञानी ❀ बिनती एक करों बल ठानी ॥
तीनों लोक पुरुष मोहि दीन्हा ❀ तुम कहँ चलेहु काहमत कीन्हा ॥
तासों कह्यो सुनो अन्याई ❀ तुम बहु कीन्ह कपट चतुराई ॥
जीवन कहँ तुम बहुत भुलावा ❀ बार बार जीवन संतावा ॥
पुरुषभेद तुम गोपित राखा ❀ आपन महिमा परगट भाखा ॥
तप्तशिला पर जिवन्ह जरावहु ❀ जारि बारि निज स्वादकरावहु ॥
ताते मोकहँ पुरुष पठाऊ ❀ जीवन्ह शब्द चेतावन जाऊ ॥
यह सुनि काल भयङ्कर भयऊ ❀ हमकहँ त्रास देखावन लयऊ ॥
तब हम कहा सुनो अन्याई ❀ तोरे डर हम ताहि डेराई ॥
हमकहँ तेज पुरुष बल आहीं ❀ अरे काल तव डर मोहिंनहीं ॥
पुरुष प्रताप सुमिरि तेहि बारा ❀ शब्द अंग ते कालहि मारा ॥
श्याम ललाट भयो तेहिबारा ❀ लोचन ललित हेरु तेहिबारा ॥
जरे क्रोधवश कछु न बसाई ❀ तब पुनि परचो चरणतर आई ॥

छंद—कहैं निरञ्जन सुनो ज्ञानी करों बिनती तोहिं सों ।

कन्यकामैं त्रास कीन्हो घाटि भइ अब मोहिं सों ॥

पुरुष सम अब तोहिं जानो नाहिं दूजी भावना ।

तुम बड़ सर्वज्ञ साहेब विमाळत तुम नावना ॥ ३७ ॥

सो०—तुमहु करहु बखशीश, पुरुष दीन जस हारिकै ।

षोडश महँ तुम ईश, ज्ञानी पूरुष एकसम ॥ ३८ ॥

चौपाई ।

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन ❀ तुम तो भयहु बंशमहँ अंजन ॥
जीवक कहँ मैं आनब जाई ❀ सत्य शब्द शत नाम दृढ़ाई ॥
कहैं धर्म सुनु ज्ञानी ताता ❀ दृढ़ कै जानु हमारी बाता ॥

कहा तुम्हार जीवनहिं मानिहिं ❀ हमरीदिशि ह्वै बाद बखानिहिं ॥
 दृढ़ फन्दा में रचा बनाई ❀ जिहि महुँ जीव रहै अरुभाई ॥
 वेद शास्त्र अमृत गुण नाना ❀ पुत्र तीनि देवन परधाना ॥
 तिनहुँ बहु बीजी रचि राखा ❀ हमरी डोरि ज्ञान सुखि भाखा ॥
 देवल देव पषान पुजाई ❀ राख्यो जिवन्ह भर्म अरुभाई ॥
 पुजा विश्व बलि देव अराधी ❀ यह मत जिवन्ह राख्यो बाँधी ॥
 और अनेक फन्द है मोरा ❀ जीव शब्द किमि मनिहै तोरा ॥
 कह ज्ञानी सुनु काल अन्याई ❀ कहाँ फन्द तुम रचा बनाई ॥
 जितिक फन्द तुम रचेउ बिचारी ❀ सहस बदन ते सभै बिडारी ॥
 जेहि जिवन्ह में शब्द दृढ़ाउब ❀ फन्दा तोरि सबै मुकताउब ॥
 जब जिव चिन्हिहै शब्द हमारा ❀ तजिहि भर्म सब तोर पसारा ॥
 सत्य नाम जिवन्ह समुभाइव ❀ हंस उबारि लोक लै आइव ॥

छंद—सत्य शब्द दृढ़ाई हैं सहिदया शील क्षमा धनी ।

सहज शील संतोष सारा आत्मपूजा गुनधनी ॥

पुरुष सुमिरन सार बीरा नाम अबिचल गाइहैं ।

शीश तो हरिचरन दै कै सत्यलोकहि आइहैं ॥ ३८ ॥

सो०—अमी नाम बिस्तार हंसन देव चेताइ हैं ।

मर्दाहिं मान तोहार, धर्मराय सुनु चित्त दै ॥ ४० ॥

चौपाई ।

धर्मराय कहैं सुनो हो ज्ञानी ❀ कवन नाम परगट सहिदानी ॥
 जो कोई हंसा होय तुम्हारा ❀ ताहि न रोको बचन हमारा ॥
 नाम निशान कहौ समुभाई ❀ नाम सुनो तेहि निकट न जाई ॥
 सुनो धर्म यह प्रकट सुभाखा ❀ गुप्त अंक बीरामहुँ राखा ॥
 नाम अचिन्त सुकृत सत गाई ❀ सतयुग इहै नाम लौ लाई ॥
 ध्यान अंक तो गुप्तहि आहा ❀ बीरा अंक न पैहो थाहा ॥

घाट घाट चौकी रखवारी ❀ जाते दूटै भर्म केवारी ॥
 अपने जीवन कहँ चेतवाई ❀ नाम प्रताप हंस घर जाई ॥
 कहँ धर्म तुम जाहु संसारा ❀ आनहु जीवन नाम अधारा ॥
 जो जीवन तुम्हार गुणगाइब ❀ ताके निकट तो हम नहिं जाइब ॥
 देख्यो जीवहि धर्म सकाना ❀ तबहिं तहाँते कीन पयाना ॥
 आयो चतुरानन के पासा ❀ तासों कीन शब्द परकासा ॥
 ब्रह्मा चित दै सुनवै लीन्हा ❀ पूछै बहुत पुरुष को चीन्हा ॥
 तबहिं निरंजन कीन उपाई ❀ जेठ पुत्र ब्रह्म में जाई ॥
 नीरंजन मन घंट बिराजै ❀ ब्रह्मा बुद्धि फेरि उर राजै ॥
 निरंकार निर्गुण अविनासी ❀ ज्योतिस्वरूप शून्य के बासी ॥
 ताहि पुरुष कहँ वेद बखानै ❀ आज्ञा वेद ताहि हम जानै ॥
 जब देखौ तेहि काल दृढ़ाये ❀ तहँ ते उठे विष्णुपहँ आये ॥
 विष्णुते कह्यो पुरुष उपदेशा ❀ काल बश्य नहिं गहै सँदेशा ॥
 कहँ विष्णु मोहिं सम को आही ❀ चारि पदारथ हमरे पाही ॥
 काम मोक्ष धर्मार्थ माही ❀ चाहै जौन देहुँ मैं ताही ॥
 सुनहु सोविष्णु मोक्ष कस तोई ❀ मोक्ष अक्षर परलैतक होई ॥
 तुम नाहीं थिर मुनिकस करहु ❀ मिथ्या साखि कवन गुण भरहु ॥
 रहे सकुचि सुनि निर्भय बानी ❀ निजहिय विष्णु अंश भय आनी ॥
 तब पुनि नागलोक चलि गयऊ ❀ तासे कछु कछु कहबे लयऊ ॥
 पुरुष भेद कोउ जानत नाहीं ❀ लागे सभय काल की छाहीं ॥
 रखनिहार तुम चीन्हों भाई ❀ यमसों को तोहिं लिहै छुड़ाई ॥
 ब्रह्मा विष्णु रुद्र जेहि ध्यावै ❀ वेद जासु गुण निशिदिन गावै ॥
 सोई पुरुष मोहिं राखनिहारा ❀ सोई तुमहिं लै करि है गारा ॥
 राखनिहार और कोउ आही ❀ करु विश्वास मिलावों ताही ॥
 शेष खानि विष तेज सुभाऊ ❀ बचन प्रतीति हृदय नहिं आऊ ॥
 तब आगे मृतमण्डल माहीं ❀ पुरुष जीव कोउ देख्यो नाहीं ॥

काकहँ कहिय पुरुष उपदेशा ❀ सो तौ अधिको यम को भेशा ॥
 जो घाती ताको विश्वासा ❀ जो रक्षक तेहि बोलिउदासा ॥
 जाहि जपै सोइ जिव धरि खाई ❀ तब मम शब्द चेत चित आई ॥
 जीव मोहवश चीन्है नाहीं ❀ तब अस भाव बहुत हियमाहीं ॥

छंद—मेटि डारों काल शाखा प्रकट काल दिखावऊँ ।

लेउँ जीवन छोरि यम सों अमरलोक सिधावऊँ ॥

जाहि कारण रटत डोलों सों न मोकहँ चीन्हई ।

काल के वश परे जिव सब तजि सुधा विषपीवई ॥ ३६ ॥

सो०—पुरुषवचन अस नाहिं, इहै शोच पुनि सहज की ।

लेइ मिसावो ताहि, ज्ञान परखि जो मोहिं गह ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

पुनि जस चरित भयो ध्रमदासा ❀ सो सब अंग कहौ तोहिं पासा ॥
 ब्रह्मा विष्णु शम्भु सनकादी ❀ सब मिलिकीन्हों शून्य समाधी ॥
 कवन नाम सुमिरों करतारा ❀ कवनहि नाम ध्यान अनुसारा ॥
 सबहि शून्य महँ ध्यान लगाये ❀ स्वाति सनेह सीप ज्यों लाये ॥
 तबहिं निरञ्जन युक्ति बिचारा ❀ शून्य गुफाते शब्द उचारा ॥
 ररा सुशब्द उठा बहु बारा ❀ मा अक्षर माया संचारा ॥
 दोउ अक्षर कहँ समकै राखा ❀ राम नाम सहिइन अभिलाखा ॥
 राम नाम लै जगहि दृढ़ायो ❀ कालफन्द कोउ चीन्हि न पायो ॥
 इहि विधि राम नाम उतपानी ❀ धर्मनि परखि लेहु यह बानी ॥
 कहैं धर्म तुम सतगुरु मोरा ❀ छूट्यो तिमिरि ज्ञान भा पूरा ॥
 मोह धर्म तम घोर अंधारा ❀ तामहँ जीव परे बिकरारा ॥
 जब तुम ज्ञान प्रकट है भाना ❀ छुटै मोह तम शब्द प्रवाना ॥
 अब वह कथा कहो समझाई ❀ सतयुग केतिक हंसचलाई ॥
 धर्मदास सुनु सत जो भाऊ ❀ जेहि जीवन्ह कहँ नाम दिखाऊ ॥

घोंघिल नाम नृपति परधारी ❀ चीन्हेसि मोहिं प्रेम उर धारी ॥
ताकहँ दीन नाम परवाना ❀ सत्य बचन तिन मेरो माना ॥

छंद—राय घोंघिल सन्त सज्जन शब्द मम दृढ़ कै गहो ।

सार शीत प्रसाद लीन्हों चरण जल परसै लहो ॥

प्रेम ते गदगद भयो सुठि सुरति निरखत रहत सो ।

वहसार शब्दहि चीन्हि लीन्हों चरण ध्यान लगायसो ॥ ४० ॥

सो०—घोंघिल शब्द चैताय, तब आयो मथुरा नगर ।

खसम शरीरहि आय, नारि वृद्ध वा बारि सो ॥ ४२ ॥

चौपाई ।

कहे खेम सुनु पुरुष पुराना ❀ कहँवाँ ते तुम कीन पयाना ॥
तासों कह्यो शब्द उपदेशा ❀ पुरुषभाव अरु जन्मको भेशा ॥
सुनु खेमसरिचित उपजा भाऊ ❀ जब चीन्हेसि सब यमकादाऊ ॥
पै धोखा वह एक रहाई ❀ देखि लोक तब मन पतिआई ॥
राखे देह हंस लै धायउ ❀ क्षण्यक माहँ लोक पहुँचायउ ॥
लोक देखाय हंस लै आयो ❀ देह में पाय खेम पछितायो ॥
हे साहेब लै चलु वहि देशा ❀ इहाँ बहुत हैं काल कलेशा ॥
तासों कह्यो सुनो हित बानी ❀ जो मैं कहों लेहु सो मानी ॥
जौ लगि टीका पूजै आई ❀ तौ लगि रहों नाम लौलाई ॥
तुम तौ देखेहु लोक हमारा ❀ जीवन को उपदेशहु सारा ॥
एको जिय जो शरन ले आवो ❀ सो सुनि सत्य पुरुष को भावो ॥
जैसे परे बाध मुख भाई ❀ कपिलहि कोउ छुड़ावै धाई ॥
तेहि नरको सब सुयश बखानै ❀ गऊ छुड़ाय बाध से आनै ॥
जैसे कपिलहि बाध तरासा ❀ ऐसहि काल जिवन कहँ ग्रासा ॥
एक जिवहि जे भक्ति दृढ़ावै ❀ कोटिक गऊ सहाय सो पावै ॥
खमसरि परी चरणतर आई ❀ हे साहेब मोहिं लेहु बचाई ॥

मोहिंपर दया करहु परकाशा ❀ अब जनि परो काल के पाशा ॥
 सुनु खेमसरि यह यम के देशा ❀ नाम बिना नहिं मिटहिं कलेशा ॥
 पुरुष नाम बीरा जो पावै ❀ फेरि नाहिं भवसागर आवै ॥
 पान प्रवान पुरुष की डोरी ❀ लहै जीव यम तिनुका तोरी ॥
 दीया सुमिरण नाम सँधाना ❀ नाम प्रताप काल भय माना ॥
 कह खेमसरि परवाना दीजै ❀ यम सों छोरि अपन करि लीजै ॥
 और जीव हमरे गृह आही ❀ साहब नाम प्राण देहु ताही ॥
 मोरे घर अब धारिय पाऊँ ❀ मुक्ति सँदेश जिवन समुझाऊँ ॥
 गये ताहि गृह भाव समागम ❀ परयो चरणतर नारि सुधासम ॥
 खेमसरी सब कहि समुझाई ❀ जन्म सुफल निज करु रे भाई ॥
 जीव मुक्ति चाहै जो कोई ❀ सतगुरु शब्दहि गहे बिलोई ॥
 यम से यही छोड़ावनिहारा ❀ निश्चय मानो कहा हमारा ॥
 सबजीवन परतीत दृढ़ानी ❀ मानि सिखावन खेमसरिवानी ॥
 सबनिआनि गहे चरण हमारा ❀ साहब मोर करो निस्तारा ॥
 जामें यम नहिं मोहिं सतावै ❀ जन्म मरण दुख दुसह नशावै ॥
 देख्यो अति अधीन नर नारी ❀ कियो सुखी निज शब्द उचारी ॥
 मेटयो ताकर काल कलेशा ❀ जो जिय मान्यो मम उपदेशा ॥
 जो जिय मनिहै शब्दहमारा ❀ ताको कोइ न रोकनिहारा ॥
 पुरुष अंश परवाना पावै ❀ यम राजा तेहि निकट न आवै ॥
 आनहु साज आरती केरा ❀ काल कष्ट मेटौ जियकेरा ॥
 कह खेमसरि प्रभुकहोबिलोई ❀ कवन बस्तु लै आरति होई ॥
 छंद-भाव आरति सुनो खेमसरि कहों तोहिं बुझाई कै ।

मिष्टान्न पान कपूर केरा अष्ट मेवा स्वाँग कै ॥
 श्वेत बसन नवान उत्तम कदलि पत्र अछेदना ।

नारियर औ पुहुप श्वेतै श्वेत चौका चन्दना ॥ ४१ ॥

सो०—यह आरति अनुमान, आनहु खेमसरि साज सब ।
पूगीफल परवान, शब्द अंग चौका कहों ॥ ४३ ॥
चौपाई ।

और वस्तु आनहु शुधपावन ❀ गोघृत उत्तम रुचिर सुहावन ॥
जेकछु खेमसरि सुन्योसिखाई ❀ सहित सनेह भाव अधिकाई ॥
सबै वस्तु आन्यो सुखमानी ❀ आरति किया युक्तिविधि ठानी ॥
पाँव साधु इच्छा उपराजा ❀ भक्ति भजन गुणज्ञान बिराजा ॥
भजन अखण्ड शब्दध्वनिहोई ❀ द्वितिय न चापिसकत तहँकोई ॥
सत्य समय ले चौका साजा ❀ ज्योतिअखण्ड प्रकाशबिराजा ॥
शब्द आँग चौका अनुमाना ❀ मारत नरियर काल बराना ॥
जबनरियर है शिलासँयोगा ❀ काल शीशपुनि चम्पै रोगा ॥
मोरि नारियर आरति कीन्हा ❀ तृण तोराय पान जिय दीन्हा ॥
प्रथम खेमसरि लीन्हों पाना ❀ पाछे और जीव सतमाना ॥
दीन्हों ध्यान अंग समुझाई ❀ ध्यान नाम ते जीव बचाई ॥
रहनि गहनि गुण दीनददाई ❀ सुमिरत नाम हंस घर जाई ॥

छंद—हंस नींदवश बोधि सतयुग गयो सुखसागर करी ।
सतपूरु चरण सरोज परसे बिहँसिकै अंकम धरी ॥
पूछि कुशल प्रसन्न बहुविधि मूल जीवन के धनी ।
और बन्धुन हरषिमिलि सब सकल शोभापावनी ॥ ४२ ॥
सो०—शोभा बरणि न जाय, धर्मनिअंशन कान्तिकर ।
बिधु कोटिक शरमाय, एक अंश उजियार तन ॥ ४४ ॥
चौपाई ।

कछुदिन कीन्हो निकट निवासा ❀ देख्यो आय बहुरि निजदासा ॥
सब दिन रहों गुप्त जगमाहीं ❀ मोहवश्य जिव चीन्है नाहीं ॥
जो जीवन परबोध्यो आई ❀ ता कहँ दीन्हों लोक पठाई ॥
सत्यलोक हंसन सुख बासा ❀ सदा बसन्त पुरुष के पासा ॥

सो देखे जो पहुँचे जाई ❀ जिन यह रचा सो कहहिं चेताई ॥
 सतयुग तो भा त्रेता आये ❀ नाम मुनीन्द्र जिवन समुभाये ॥
 जबजब आय जिवन उपदेशा ❀ नाम एक सो अवर न देशा ॥
 धर्मराय जीवन समभाये ❀ नाम अखण्डित सो मनभाये ॥
 इन भवसागर मोर उजारा ❀ जिव लै जाहि पुरुष दरबारा ॥
 केतौ छल बल करै उपाई ❀ ज्ञानी डर तिहि नाहिं डराई ॥
 पुरुष प्रताप गया के पासा ❀ ताते मोर न लागै पासा ॥
 रिसै काल कछु काँपै नाहीं ❀ नाम प्रताप हंस घर जाहीं ॥

छंद-सन्त नाम प्रताप धर्मनि हंस निज घर को चलै ।

यम देखिके हरित्रसित गा है कम्पि कर धरनीरलै ॥

पुरुष नाम प्रताप केहरि काल गज सम जानिये ।

सतनाम गहि सतलोक पहुँचै गिरा मम फुर मानिये ॥ ४३ ॥

सो०-सतगुरु शब्द समाय, गुरु आज्ञा निरखत रहै ।

रहै नाम लौ लाय, कर्म भर्म मन मत तजै ॥ ४५ ॥

चौपाई ।

त्रेता युग जब पावउधारा ❀ मृतलोकहि कीन्हा पैसारा ॥
 जीव अनेकन पूछा जाई ❀ यम सों को तोहिं लेइ छुड़ाई ॥
 कहै भर्म वश जीव अयाना ❀ हम करते पुरुष का ध्याना ॥
 विष्णु सदा हमरो सुसहाई ❀ यम सों मोहिं लेइ मुकुताई ॥
 कोई महेश को सेवा लावै ❀ कोई चण्डी देविहि शिर नावै ॥
 कहा करों जिव भयो बेगाना ❀ तेजिखसम कर जार बिकाना ॥
 भर्म कोठरी जीवन डारेसि ❀ धोखा दै सब जीवन मारेसि ॥
 सत्य पुरुष आयसु नहिं देही ❀ कालहिमेटि छोरि जिव लेही ॥
 जोर करो तब बचन नशाई ❀ सहजहि जीवन लेउ चेताई ॥
 जो ग्रासै जिव सेवै ताही ❀ अनचीन्हे जिव यम मुख जाही ॥

भागत भागत पहुँच्यो लङ्का ❀ भाट विचित्र मिल्यो निशङ्का ॥
 तिन पर पूछ मुक्ति संदेशा ❀ तासों कह्यो ज्ञान उपदेशा ॥
 सुनत शब्दविधितेहि भ्रम भागा ❀ अति अधीन है चरणन लागा ॥
 कहैं शरण मोहि दीजै स्वामी ❀ तुम प्रभु अहौ सुखा के धामी ॥
 कीजै मोहि कृतार्थ आजू ❀ मोरे जिवकर कीजै काजू ॥
 कह्यो ताहि आरति को लेखा ❀ खेमसरिहि जे भाख्यो रेखा ॥
 आनेसि भाव सहित सब साजा ❀ आयसुदीन शब्द गुण गाजा ॥
 तरी न तोरि बिरादिये ताही ❀ ताके गृह जिय चेत नही ॥
 सुमिरण ध्यान अंग तेहि भाखा ❀ पूरुषडोरि गोय नहिं राखा ॥

छंद—चित्र वनिता गई नृपटिग जाय रानिहि सब कही ।
 यहाँ आये सुघर योगी महामुनि महिमा लही ॥
 श्वेत कला अपार उत्तम और नहिं अस देखेऊ ।
 मोर पति तिहि शरण गहि मन जन्म शुभ निज लेखेऊ ॥ ४४ ॥
 सो०—सुनत मदोदरिचाव, दरशन लगि अकुलानेऊ ।
 बिलखि संग ले आव, कनकरतन लै पगु धरचो ॥ ४६ ॥

चौपाई ।

चरण टेकि पुनि नायो माथा ❀ ये समरथ मोहिं करहु सनाथा ॥
 जिव कारज मम हो जेहि भाँती ❀ सो मोहिं कहो तजो कुल जाती ॥
 अब अति प्रिय मोहीं तुम लागे ❀ तुम दयालु सकलो भ्रम भागे ॥
 सुनहु बधू प्रिय रावण केरी ❀ नाम प्रताप कटै यम बेरी ॥
 ज्ञानदृष्टि सो परिखहु भाई ❀ खरा खोट तेहि देउ चिन्हार्ई ॥
 पुरुष अमान अजर मनिसारा ❀ सो तोतीनि लोक ते न्यारा ॥
 तेहि साहेब कहँ सुमिरै कोई ❀ आवागमन रहित सो होई ॥
 सुनतहि शब्द तासु भ्रम भागा ❀ शब्द गहे के मन अनुरागा ॥
 ये साहेब मोहिं लीजै शरणा ❀ भेटहु मोर जन्म औ मरणा ॥
 दीन्हो ताहि नाम परवाना ❀ पुरुष टेरि सौँप्यों सहिदाना ॥

गदगद भई पाइ घर डोरी ❀ मिलरंकहि जिमि द्रव्य करोरी ॥
चित्र बन्धु रानी समुझावा ❀ गहो शरण है जिव मुक्तावा ॥
चित्रनारिगहु रानि सिखावन ❀ लीन्हे सिपानतजेसि भ्रम आपन ॥

छं०—तीनि जीव प्रबोधिलंका अवध कहँ फिरि आयऊ ।
बिप्र मधुकर मिल्यो मारग दरश तिन मम पायऊ ॥
मिल्यो सादर चरण गहि महि शीश राखि अधीनता ।
बिनयकरि लै गयो मन्दिर गिरा कहि अति दीनता ॥ ४५ ॥

सो०—रंक बिप्र धितज्ञान, बहुत प्रेम मोते कियो ।
सार शब्द परवान, दीन्हों सुधा सुशब्द तब ॥ ४७ ॥
चोपाई ।

देख्यो ताहि बहुत लौ लीन्हा ❀ तासों कह्यो ज्ञान को चीन्हा ॥
पुरुष सँदेश कह्यो तेहि पाही ❀ सुनत बचन प्रियलाग्यो ताही ॥
जसअंकूर तवै बिनु वारी ❀ पून उदक तेहि मिल्यो खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकूर सुखमाना ❀ तैसहि मधुकर शब्द समाना ॥
पुरुष प्रभाव सुनत हरषन्ता ❀ कहँ लोक देखलावहु कन्ता ॥
कह्यो ताहि सुनि बिप्रसयानो ❀ मेरो बचन प्रीति करि मानो ॥
चलहु तोहिँ लै लोक देखावों ❀ लोक देखाय बहुरि लै आवों ॥
राख्यो देह हंस लै धायो ❀ अमर लोक लै तेहि पहुँचायो ॥
शोभा लोक देखि हरषाना ❀ तब मधुकर को मन पतियाना ॥
परयो चरण मधुकर अकुलाई ❀ हे साहेब भवतृषा नशाई ॥
अब मोहिँ लेइ चलहु जगमार्ही ❀ और जीव उपदेशो तार्ही ॥
हंसहि लै आवा संसारा ❀ पैठि देह जाग्यो द्विज बारा ॥
मधुकर घर षोडश जिव रहई ❀ पुरुष सँदेश सबनि सो कहई ॥
गहहु शरण समरथ के आई ❀ यहै रहै यम सों मुक्ताई ॥
मधुकर बचन सबहि मिलि माना ❀ मुक्ति जानि लीन्हों परवाना ॥
कह मधुकर बिनती सुनि लीजै ❀ लोक निवास जिवन कहँ दीजै ॥

यहि यम देश बहुत दुख होई ❀ जीव अम्बु बूझै नहिं कोई ॥
 मोहिं सब जीवन लै चल स्वामी ❀ करहु कृपा प्रभु अन्तरयामी ॥
 छंद-यहि देश है प्रभु महाकाल कराल जीव सतावई ।
 कष्ट नाना दुःख व्यापै मरण जीवन लावई ॥
 काम क्रोध कठोर तृष्णा लोभ मोह महा वली ।
 देव मुनि गण सबहिं व्यापै कीट जीवन दलमली ॥ ४६ ॥
 सो०-तिहुँपुर यम को देश, सुख जीवन कहँ तनिक नहिं ।
 भेटहु काल कलेश, लेइ चलहु निज देश कहँ ॥ ४८ ॥

चौपाई ।

देख्यो ताहि बहुत आधीना ❀ तब लै जिवन्ह पयाना कीन्हा ॥
 यम के दूत देखि सब ठाढ़े ❀ चितवहिं जे जन ऊर्द्ध अखाढ़े ॥
 पहुँचे जाय पुरुष दरबारा ❀ अंसन हंसन हर्ष अपारा ॥
 परसे चरण पुरुष को हंसा ❀ लीन मिलाय जीव के बंसा ॥
 हंसन कुशल पूछि बहु बारा ❀ अब भा कुशल कहै द्विजवारा ॥
 धर्म्मनि यह है अचरज बानी ❀ गुप्त प्रकट कोउ चीन्है ज्ञानी ॥
 हंसन अमर चीर पहिराये ❀ देह हिरम्बल रचि सुख पाये ॥
 षोड़स शशि प्रकाश यक हंसा ❀ मिटिगो जन्म मरण की संसा ॥
 पुहुप द्वीप मह बैठक पाई ❀ अमृत भोजन कीन अघाई ॥
 अगर बासना तृषित शरीरा ❀ पुरुष दरश गदगद मति धीरा ॥
 यहि विधि त्रेतायुग को भाऊ ❀ हंस मुक्ति भव नाम प्रभाऊ ॥

कबीरसाहब के प्रकट होने की कथा ।

झापर युग प्रवेश किहु जबहीं ❀ पुरुष अवाज कीन्ह पुनि तबहीं ॥
 योग सँतायन जाहु संसारा ❀ यम सों जीवन करहु उबारा ॥
 तब हम कहा पुरुष सों बानी ❀ आज्ञा करहु शब्द परवानी ॥
 कालहि भेटि जीव लै आवो ❀ बार बार का जगहि सिधावो ॥
 कहा पुरुष सुनु योग सँतायन ❀ शब्द चेताय जीव मुक्तायन ॥

गदगद भई पाइ घर डोरी ❀ मिलरंकहि जिमि द्रव्य करोरी ॥
चित्र बन्धु रानी समुझावा ❀ गहो शरण है जिव मुक्तावा ॥
चित्रनारिगहु रानि सिखावन ❀ लीन्हे सिपानतजेसि भ्रम आपन ॥

छं०—तीनि जीव प्रबोधि लंका अवध कहँ फिरि आयऊ ।

॥ बिप्र मधुकर मिल्यो मारग दरश तिन मम पायऊ ॥

॥ मिल्यो सादर चरण गहि महि शीश राखि अधीनता ।

॥ विनयकरि लै गयो मन्दिर गिरा कहि अति दीनता ॥ ४५ ॥

सो०—रंक बिप्र धितज्ञान, बहुत प्रेम मोते कियो ।

॥ सार शब्द परवान, दीन्हों सुधा सुशब्द तब ॥ ४७ ॥

चौपाई ।

देख्यो ताहि बहुत लौ लीन्हा ❀ तासों कह्यो ज्ञान को चीन्हा ॥
पुरुष सँदेश कह्यो तेहि पाही ❀ सुनत बचन प्रियलाग्यो ताही ॥
जसअंकुर तवै बिनु वारी ❀ पून उदक तेहि मिल्यो खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकुर सुखमाना ❀ तैसहि मधुकर शब्द समाना ॥
पुरुष प्रभाव सुनत हरषन्ता ❀ कहँ लोक देखलावहु कन्ता ॥
कह्यो ताहि सुनि बिप्रसयानो ❀ मेरो बचन प्रीति करि मानो ॥
चलहु तोहिं लै लोक देखावों ❀ लोक देखाय बहुरि लै आवों ॥
राख्यो देह हंस लै धायो ❀ अमर लोक लै तेहि पहुँचायो ॥
शोभा लोक देखि हरषाना ❀ तब मधुकर को मन पतियाना ॥
परचो चरण मधुकर अकुलाई ❀ हे साहेब भवतृषा नशाई ॥
अब मोहिं लेइ चलहु जगमाहीं ❀ और जीव उपदेशो ताहीं ॥
हंसहि लै आवा संसारा ❀ पैठि देह जाग्यो द्विज बारा ॥
मधुकर घर षोडश जिव रहई ❀ पुरुष संदेश सबनि सो कहई ॥
गहहु शरण समरथ के आई ❀ यहै रहै यम सों मुकताई ॥
मधुकर बचन सबहि मिलि माना ❀ मुक्ति जानि लीन्हों परवाना ॥
कह मधुकर विनती सुनि लीजै ❀ लोक निवास जिवन कहँ दीजै ॥

यहि यम देश बहुत दुख होई ❀ जीव अम्बु बूझै नहिं कोई ॥
 मोहिं सब जीवन लै चल स्वामी ❀ करहु कृपा प्रभु अन्तरयामी ॥
 छंद-यहि देश है प्रभु महाकाल कराल जीव सतावई ।
 कष्ट नाना दुःख व्यापै मरण जीवन लावई ॥
 काम क्रोध कठोर तृष्णा लोभ मोह महा वली ।
 देव मुनि गण सबहिं व्यापै कीट जीवन दलमली ॥ ४६ ॥
 सो०-तिहुँपुर यम को देश, सुख जीवन कहँ तनिक नहिं ।
 मेटहु काल कलेश, लेइ चलहु निज देश कहँ ॥ ४८ ॥
 चौपाई ।

देख्यो ताहि बहुत आधीना ❀ तब लै जिवन्ह पयाना कीन्हा ॥
 यम के दूत देखि सब ठाढ़े ❀ चितवहिं जे जन ऊर्द्ध अखाढ़े ॥
 पहुँचे जाय पुरुष दरबारा ❀ अंसन हंसन हर्ष अपारा ॥
 परसे चरण पुरुष को हंसा ❀ लीन मिलाय जीव के बंसा ॥
 हंसन कुशल पूछि बहु बारा ❀ अब भा कुशल कहै द्विजवारा ॥
 धर्म्मनि यह है अचरज बानी ❀ गुप्त प्रकट कोउ चीन्है ज्ञानी ॥
 हंसन अमर चीर पहिराये ❀ देह हिरम्बल रचि सुख पाये ॥
 षोडस शशि प्रकाश यक हंसा ❀ मिटिगो जन्म मरण की संसा ॥
 पुहुप द्वीप मह बैठक पाई ❀ अमृत भोजन कीन अघाई ॥
 अगर बासना तृषित शरीरा ❀ पुरुष दरश गदगद मति धीरा ॥
 यहि विधि त्रेतायुग को भाऊ ❀ हंस मुक्ति भव नाम प्रभाऊ ॥
 कबीरसाहब के प्रकट होने की कथा ।

द्वापर युग प्रवेश किहु जबहीं ❀ पुरुष अवाज कीन्ह पुनि तबहीं ॥
 योग सँतायन जाहु संसारा ❀ यम सों जीवन करहु उबारा ॥
 तब हम कहा पुरुष सों बानी ❀ आज्ञा करहु शब्द परवानी ॥
 कालहि मेटि जीव लै आवो ❀ बार बार का जगहि सिधावो ॥
 कहा पुरुष सुनु योग सँतायन ❀ शब्द चेताय जीव मुक्तायन ॥

जौ अब काल कीन्ह अन्याई ❀ हे सुत तौ मम बचन नशाई ॥
 अब तौ परे जीव यम फन्दा ❀ जुगुतहि आनहु परम अनन्दा ॥
 जौ ललना धरि प्रकटै जाई ❀ तब सब जीव चरण गहे आई ॥
 ज्ञान अज्ञान चीन्हि नहिं जाई ❀ जाय प्रकट है जिवन चेताई ॥
 सहस भाव जग प्रकटहु जाई ❀ देखहु भाव जिवन को भाई ॥
 तोहिं गहै सो जिव मोहिं पैहै ❀ तव प्रतीति बिरलै यम खैहै ॥
 जेहि करिहो जीवन कउहारा ❀ तापर आहि प्रताप हमारा ॥
 हमसे तुमसे अन्तर नाहीं ❀ जिव तरंग जल जलहिसमाहीं ॥
 हमहिं तुमहिं जो दुइकरिजानै ❀ तेहि घट यम दृढ़ करिहै थानै ॥
 पुरुष अवाज लेव संसारा ❀ चरण टेकु मम धर्म लबारा ॥

छंद—तब धर्मराय अधीन है बहु भाँति बिनती कीन्हेऊ ।

केहि कारणै अब जग सिधारेहु मोहिं सो मत दीन्हेऊ ॥

अस करहु जनि सब जग चेतावहु इहै बिनती में करों ।

तुम बन्धु जेठे छोट में करजोरि तुम पायँन परों ॥ ४७ ॥

सो०—कह्यो धर्म सुनु बात, बिरल जीव मोहिं चीन्हि है ।

शब्द न कोउ पतियात, तुम अस कै जीवन ठग्यो ॥ ४८ ॥

चोपाई ।

यह कहि आय जगत् पगु धारा ❀ पुनि परमारथ शब्द पुकारा ॥
 कोई न बूझै हेरा मेरी ❀ बाँधेसि काल विषम भ्रम बेरी ॥
 गढ़ गिरिनार नगर इकनाऊँ ❀ चन्द्र विजय नृप तहाँ रहाऊँ ॥
 नृपति बधू इक रहै सयानी ❀ पूजे साधु महातम जानी ॥
 चढ़ी अटारी बाट निहारै ❀ सन्तदरश कहँ काया गारै ॥
 तब धर्मनि यह जानि सिधाये ❀ नगर निकट मारग चलि आये ॥
 चढ़ी अटारी देखेसि रानी ❀ वृषली रसना कह यह बानी ॥
 धाय तहाँ जंगल के माहीं ❀ देखेसि साधु अनुग्रह ताहीं ॥
 वृषली चरण आय लपटानी ❀ नव बनिता मुख भाषेसिबानी ॥

कहै वृषली रानी अस भाखो ❀ कृपानिधान मनोरथ राखो ॥
 देहु दरश मोहिं दीनदयाला ❀ तुम्हरे दरश मिटहि सब शाला ॥
 विनय बचन सुनि चले तुरन्ता ❀ पहुँचे नृप दरबार सुसन्ता ॥
 रानी आय गहे पुनि चरणा ❀ जन्मसुफलनिज जानेसि बरना ॥
 कह रानी चलु मन्दिर मोरे ❀ भइउँ सुखी दरशन लहि तोरे ॥
 प्रीति देखि तेहि भवन सिधारे ❀ दीन्ह सिंहासन चरण पखारे ॥
 चरण धोय पुनि चाखेसि रानी ❀ पटपद पोंछि जन्म शुभ जानी ॥
 पुनि प्रसाद को आज्ञा माँगी ❀ हे प्रभु मोकहँ करहु सुभागी ॥
 जूठन परु मोरे गृह माहीं ❀ सित प्रसाद लै महुँ अघाहीं ॥
 सुनु रानी मोहिं क्षुधा न होई ❀ पंचतत्त्व जेहि पावै सोई ॥
 प्राण अहार अहै सुनु मोरा ❀ सुनु रानी यह भाष्यों थोरा ॥
 देहु हमारि तत्त्व गुण न्यारी ❀ तत्त्व प्रकृतिहि काल रचु बारी ॥
 असी पंच किहु काल समीरा ❀ पंचतत्त्व की देह खमीरा ॥
 तामहुँआदि पवन इक आही ❀ जीव सोहंग बोलिये ताही ॥
 यह जिव चही पुरुष को अंशा ❀ रोकेसि काल ताहि दै संशा ॥
 जिवतारन हम यहि जग आये ❀ जो जिव चीन्ह ताहि मुकुताये ॥
 धर्मराय अस बाजी कीन्हा ❀ धोख अनेक जीव कहँ दीन्हा ॥
 नीर पवन कृत्तिम किहुकाला ❀ बिनशिजाय बहुकरै बिहाला ॥
 तन हमार यहि साज ते न्यारा ❀ मम तननहिं सिरज्यो करतारा ॥
 शब्द सरूपि देह है मोरा ❀ परस्विगहहु भाख्यो कछु थोरा ॥
 हे प्रभु यह अचरज मोहिं होई ❀ अससुभाव दूजा नहिं कोई ॥

छंद-इन्द्रमति आधीन हूँ कह दया करहु दयानिधी ।

एक एक बिलोय मोते बचन प्रभु तुम्हरो सिधी ॥

विष्णु सम नहिं अहै जग कोइ इन्द्र चतुरानन मुनी ।

पंचतत्त्व खमीर तन तेहि तत्त्ववश अहिगण मुनी ॥ ४८ ॥

सो०—तुम प्रभु अगम अपार, बरणो मोते कित भये ।

मेटहु तृषा हमार, अपनी परचै कहो मोहिं ॥ ५० ॥

चौपाई ।

कवन अहौ कहवाँ ते आये ❀ तन अचिन्त प्रभु कहवाँ पाये ॥
हे प्रभु कौन मता तव आही ❀ यह सब बरणि कहौ मोहिं पाही ॥
हम का जानहिं भेद तुम्हारा ❀ ताते पूँछौ यह व्यवहारा ॥
इन्द्रमती सुनु कथा सुहावन ❀ तोहिं बुझाय कहौ सुनु पावन ॥
देश हमार न्यार तिहुँपुर ते ❀ अहिपुर नरपुर औ सुरपुर ते ॥
तहाँ नहीं प्रवेश यम केरा ❀ आदि पुरुष को तहवाँ डेरा ॥
सत्य लोक तहँ देश सुहेला ❀ सत्य नाम गहि कीजै मेला ॥
अद्भुत ज्योति पुरुष की काया ❀ अंशन शोभा अधिक सुहाया ॥
दीप की शोभा नहिं अधिकारी ❀ पटतर देउँ काहि संसारी ॥
यहि तिहुँपुरमहँ अस नहिं कोई ❀ पटतर जाकहँ देउँ बिलोई ॥
चन्द्र सूर्य इहि देश मँझारा ❀ इनसम और पिण्ड उजियारा ॥
सत्य लोक की ऐसी बाता ❀ कोटिक विधु इकरोम लजाता ॥
एक रोम की शोभा ऐसी ❀ और बदन की बरणै कैसी ॥
पुरुषकांति की अस उजियारी ❀ समुझत गुनत मोरि मतिहारी ॥
तहवाँ तक वह यामिनि होई ❀ संघ अजोर पुरुषतन सोई ॥
षोडश भानु हंस उजियारा ❀ अग्र बासना अमिय अहारा ॥
कहा कहौ मोहिं कहत न आवै ❀ धन्य भाग जे हंसहि ध्यावै ॥
ताहि देश से हम चलिआये ❀ करुणामय निजनाम धराये ॥
सतयुग त्रेता औरै नामा ❀ युग युगनाम पृथक जसकामा ॥
हे प्रभु औरो युग तुम आये ❀ कौन नाम उन युगन धराये ॥
धर्मदास तोहिं कहौ बुझाई ❀ सतयुग त्रेता भाव बताई ॥
सोसुनि अधिक चावतेहि भयऊ ❀ और बात तब पूँछत भयऊ ॥

उतपति परलै आवहु भाऊ ❀ यमचरत्रि सब बरणि सुनाऊ ॥
 जेहिबिधि षोडश सुत प्रकटाना ❀ सो सब भाषि सुनाओ ज्ञाना ॥
 कर्म बिदारि देवि उत्पानी ❀ सो सब तोहिं कहौ सहिदानी ॥
 असि अष्टंगी और बिकासा ❀ जेहिबिधि भयो मही आकासा ॥
 जेहि बिध जीवन यम गहिराखा ❀ सो सब तोहिं सुनावौ भाखा ॥
 सिन्धु मथन त्रय सुत उतपानी ❀ सबै कह्यो पाछिल सहिदानी ॥
 सुने ज्ञान ताको भ्रम भागा ❀ हरषि चरण गहु अति अनुरागा ॥
 जोरि पाणि सो कह बिलखाई ❀ हे प्रभु यम से लेहु छुड़ाई ॥
 राज पाट सब आहै तोहीं ❀ धन सम्पति जस आहै मोहीं ॥
 देहु शरण मोहिं दीनदयाला ❀ बन्दिछोरि मोहिं करहुनिहाला ॥
 सुनु रानी यह बचन हमारी ❀ छोरब निश्चय बन्दि तुम्हारी ॥
 चीन्ह्यो मोहिं प्रतीति दृढ़ाना ❀ अब दै तोहिं नाम परवाना ॥
 आनहु जे कछु आरति साजा ❀ राजा पाट को मोहिं न काजा ॥
 धनसम्पति कर काज न आना ❀ यह लै करहु संत सनमाना ॥
 सकल जीव है साहब केरा ❀ मोह बिबश जिव परे अँधेरा ॥
 सब घट पुरुष अंश कियो बासा ❀ कहीं प्रकट कहिं गुप्त निवासा ॥

छंद—जीव सब सत्यपुरुष को बश मोह भये बिगानई ।

यमराज को यह सब भ्रमजाल जग परधानई ॥

काल दिशि है लरहि मोते छाँड़ि घृत अँचवै मही ।

जिवनकी लखि पतित गति कछु जातनहिं मोते कही ॥ ४६ ॥

सो०—कोटि में विरला जीव, परखि शब्द मोहिं चीन्हई ।

धाय मिलै निज पीव, तेजिजरा को आसरा ॥ ५१ ॥

चोपाई ।

इन्द्रमती सुनि बचन अधीनी ❀ बोली मधुर ज्ञान गुण भीनी ॥
 मोहिं अधम को तुम सुख दीन्हा ❀ तुम प्रसाद आगमगमिकीन्हा ॥

निश्चय सत्य पुरुष तुम अहहू ❀ दुतिया पुरुष जीव बदि कहहू ॥
 सत्यपुरुष जिन्हलोक सँवारा ❀ करेहु कृपा सो मोहिं उदारा ॥
 सो तुमहीं मोहिं पाहँ छपावा ❀ भइउँ सनाथ दरश तव पावा ॥
 मोरे जिय निश्चय यह होई ❀ तुमते अधिक और नहिं कोई ॥
 अब भाषहु प्रभु आरति भाऊ ❀ जो चाही सो बरणि सुनाऊ ॥
 हे धर्मणि सो बरणि सुनायो ❀ जौन साज खेमसरि लै आयो ॥
 आनेउ साज नृपति पटरानी ❀ चौका कीन शब्द बिधि ठानी ॥
 आरति कै दीन्हा परवाना ❀ सुमिरण ध्यान कहा सहिदाना ॥
 पुनि रानी राजहि समुझाऊ ❀ हे नृप बहुरि न ऐसा दाऊ ॥
 गहो शरण जो कारज चाहो ❀ इतना बचन मोर निरबाहो ॥
 मान्यो नृपति सिखावन बाला ❀ रानी के उर गत भव शाला ॥
 आयो काल ब्याल के भाऊ ❀ सो चरित्र तोहिं प्रथम लखाऊ ॥
 दीन्हों शब्द बिरहुली ताहीं ❀ काल गरल तेहि ब्यापत नाहीं ॥
 पुनि यमदश सहस्र बुधि ठानी ❀ सो चरित्र तोहिं प्रथम बखानी ॥
 देह चीन्हि सब ताहि बतावा ❀ ताते चीन्हेसि यम को भावा ॥
 पुनि रानी बहु बिनती ठानी ❀ हे प्रभु लै चलु द्वीप अपानी ॥
 यह तो देश अहै यम केरा ❀ लै चलु देश मिटै भकभरा ॥
 तब रानी कहँ कहा बुझाई ❀ बचन हमार सुनो चितलाई ॥
 अब मैं तोहिं सों तिनका तोरा ❀ बचन सत्य तुम मानहुँ मोरा ॥
 परचै भयो सकल भ्रम छूटा ❀ नाम प्रताप हिये महँ लूटा ॥
 निशिदिन सुमिरो नाम अधारा ❀ काह करै यम धर्म लबारा ॥
 जब लगि टीका पूजै आई ❀ तौ लौ रहो नाम लौलाई ॥
 पुनि कह इन्द्रमती कर जोरी ❀ हे प्रभु सुनु बिनती इक मोरी ॥
 चीन्हिपरी मोहिं यमकी छाहीं ❀ अब इहि देश रहब हम नाहीं ॥
 हे साहब लै चलु निज देशा ❀ इहाँ बहुत है काल कलेशा ॥
 इन्द्रमती कह यशी उदासा ❀ बरु लै चलो पुरुष के पासा ॥

प्रथमहि रानी लीन्हों संगी ❀ मेढ्यो काल कठिन परसंगा ॥
 लोकदुआर ठाढ़ जेहि कीन्हा ❀ परस पुरुषपद आयसु दीन्हा ॥
 पुरुष घ्राण से हंस अघाना ❀ जगमगज्योति देखि सुखमाना ॥
 हंसन्ह धाय परछि पुनि लीना ❀ करत सुमंगल गान प्रबीना ॥
 लै चलु हंस करत गुण गाना ❀ करहि निछावर शब्द प्रबाना ॥
 पुरुष कांति जब देख्यो रानी ❀ अद्भुत अमित सुधाकी खानी ॥
 गदगद होय चरण लपटानी ❀ हंस सुबुद्धि सुजन गुणज्ञानी ॥
 दीन्हों शीश हाथ जिव मूला ❀ रवि प्रकाश जिमि पंकज फूला ॥
 कह रानी तुम धनि करुणामय ❀ जिन्हअम मेटआनि यहिठामय ॥
 कहा पुरुष रानी समुझाई ❀ करुणामय कहँ आनु बोलाई ॥
 नारि धाय आई मोहिं पासा ❀ कुदरत देखि चकित भइ दासा ॥
 कह रानी यह अचरज आही ❀ भिन्न भाव कछु देखौं नाही ॥
 जेइ केहु करुणामय कहँ देखा ❀ करुणामय तन एक बिशेखा ॥
 धाय चरण गहु हंस सुजाना ❀ हे प्रभु तुव चरित्र सब जाना ॥
 तुम सतपुरुष दास कहलाये ❀ यह शोभा कस उहाँ छपाये ॥
 मोरे चित यह निश्चय आई ❀ तुम सुपुरुष दूजा नहिं भाई ॥
 सो मैं आय देखि यह ठाई ❀ धनि समरथमोहिं लिया जगाई ॥

छंद—तुम धन्य हौ दायानिधान सुजान नाम अचिन्तयं ।

अकथ अबिचल अमर अस्थित अनाअघ सुअनादियं ॥

असंशय निःकाम धाम अमान अटल अखंडितं ।

आदि सबके तुमहि प्रभु हौ सर्वभूत समीपतं ॥ ५० ॥

सो०—मोपर भयो दयाल, लियहु जगाई जानि निज ।

काटेहु यम को जाल, दीन्ह्यो सुख सागरकरी ॥ ५२ ॥

चोपाई ।

धर्मणि पुनि आये जग माहीं ❀ रानिपतिहि निज लै गै ताहीं ॥

राख्यो ता कहँ लोक मँझारा ❀ ततक्षण पुनि आयो संसारा ॥

जागत बाग तहाँ चलि आये ❀ तहाँ दरश भव सुपच जगाये ॥
 शब्द विवेकी सन्त सुहेला ❀ चीन्हेसि मोहिं शब्द के मेला ॥
 निश्चय बचन मानुतिन्ह मोरा ❀ लखि परितीत बन्दि तेहि ब्योरा ॥
 नाम पानिदियोबूझि सँदेशा ❀ मिटै जाहि सों काल कलेशा ॥
 सुरति ध्यान तेहि दीन दृढ़ाई ❀ हरषि नाम सुमिरै चित लाई ॥
 तात मातु तेहि हर्ष अपारा ❀ महा प्रेम अति हित चित धारा ॥
 धर्मणि यह संसार अँधेरा ❀ बिनु परचै जिव यम को चेरा ॥
 प्रकट चीन्ह नहिं परखै मूढ़ा ❀ परे काल के फन्द अगूढ़ा ॥
 नृपति युधिष्ठिर द्वापर राजा ❀ तिन्ह पुनि कीन यज्ञकोसाजा ॥
 संन्यासी बैरागी आये ❀ ब्राह्मण सकलो भेष जो आये ॥
 तबहुँ न बाज्यो घण्टअकाशा ❀ चकित भयो सकलो बुधिनाशा ॥
 कृष्ण सारथी नृप के रहिया ❀ काहे न घण्ट बाजु दुखसहिया ॥
 जबहिं सुदर्शन ग्रास उठावा ❀ बाज्यो घण्ट नाम परभावा ॥
 तबहुँ न चीन्है सतगुरु बानी ❀ बुद्धि नाश यम पारस प्रानी ॥
 भक्ति त्यागि जिवपार न पावा ❀ भक्त होय यमलोक सिधावा ॥
 कृष्ण बुद्धि पांडव कहँ दीन्हा ❀ बन्धुघात तब पांडव कीन्हा ॥
 पुनि पाण्डव कहँ दोष लगावा ❀ दोष लाय तेहि यज्ञ करावा ॥
 ताहू पर तेहि अधिक दुखावा ❀ डारि हिमाचल ताहि गलावा ॥
 चारिबन्धु द्रोपदि गलियगऊ ❀ उबरे सत्य युधिष्ठिर ठयऊ ॥
 अर्जुन सम तेहि पाव न कोई ❀ ताकरि ऐसनि गञ्जनि होई ॥
 बलि हरिचन्द करण बड़दानी ❀ कालकीन पुनि ताकरि हानी ॥
 जिय अचेत तेहि आशालावै ❀ खसम बिचारि ताहि पगुध्यावै ॥
 कला अनेक देखावै काला ❀ पाछे जीवन्ह करै बिहाला ॥
 मुक्ति जानि जिव पासा लावै ❀ आशा बन्धु जिवन्ह संतावै ॥
 कर अहार जस जिवन्ह जराई ❀ भक्त अभक्त सबन्ह कै खाई ॥
 जे रक्षक तेहि खोजहिं नाहीं ❀ अनचीन्हे यम के मुख जाहीं ॥

हे धर्मणि तोहिं केतिक बुझावों ❀ परमारथ बदिजिवन्ह छोड़ावों ॥
 अस यम बुद्धि हते सबकेरा ❀ परखत नाहिं शब्द कोइ मेरा ॥
 यम के दिशि है मोसे लरई ❀ अन्तहु जाय काल मुख परई ॥
 जबलगि पुरुष नाम नहिं भेंटै ❀ तबलगि जन्म मरण नहिंमेटै ॥
 नाम डोरि आहे भ्रमदासा ❀ शब्द बिलाय गहो बिश्वासा ॥
 पुरुष प्रभाव पुरुष पहुँ जाहीं ❀ कृत्रिम नाम ते यम लै खाहीं ॥
 पुरुष नाम परवाना पावै ❀ कालहि जीति अमर घर आवै ॥

छंद—पुरुष नाम प्रताप धर्मणि हंस लोक सिधावही ।
 महा दुख अरु कष्ट मेटै फिरि न जोइनि आवही ॥
 पुरुष की छवि हंस निरखहिं लहैं अति आनँद घना ।
 अंश हंसमिलिकर कुतूहल चन्द कुमुदिनि संग बना ॥ ५१ ॥

सो०—यह जग कुमुदिनिभाव, हर्ष शोक दोउ व्यापई ।
 चन्द्र उदय सुख पाव, अस्त होत दुख पावही ॥ ५३ ॥
 कबहुँ नमलिन सुभाव, एक प्रभाव सदा उदित ।
 हंस सदा सुख पाव, शोक मोहदुख क्षण कनहिं ॥ ५४ ॥

चौपाई ।

संत के दरशन मिटै कलेशा ❀ तेहि लै राखे अविचल देशा ॥
 द्वापर गत कलियुग परवेशा ❀ पुनि हम चलि जीवन्ह उपदेशा ॥
 धर्मराय कहँ देख्यो आई ❀ मोहिं देखि यम गो मुखआई ॥
 कहैं धर्म कस मोहिं दुखायहु ❀ भक्ष्य हमार लोक पहुँचायहु ॥
 तीनिउ युग तुम गमिसंसारा ❀ भवसागर तुम मोर उजारा ॥
 हारि बचन पुरुष मोहिं दीना ❀ तुम कस जीव छुड़ावै लीना ॥
 और बन्धु जो आवत कोई ❀ क्षण महँ ता कहँ खाब विलोई ॥
 तुमते कछु नहिं मोर बसाई ❀ तुम्हरे बल हंसा घर जाई ॥
 अब तुम जाहु फेर जग माहीं ❀ शब्द तुम्हार सुनिहि केउनाहीं ॥
 कर्म धर्म मम अस कै ठाटा ❀ ताते कोइ नहिं पावै बाटा ॥

जागत बाग तहाँ चलि आये ❀ तहाँ दरश भव सुपच जगाये ॥
 शब्द विवेकी सन्त सुहेला ❀ चीन्हेसि मोहिं शब्द के मेला ॥
 निश्चय बचन मानुतिन्ह मोरा ❀ लखि परितीत बन्दि तेहि छोरा ॥
 नाम पानिदियोबूझि सँदेशा ❀ मिटै जाहि सों काल कलेशा ॥
 सुरति ध्यान तेहि दीन दृढ़ाई ❀ हरषि नाम सुमिरै चित लाई ॥
 तात मातु तेहि हर्ष अपारा ❀ महा प्रेम अति हित चित धारा ॥
 धर्मणि यह संसार अँधेरा ❀ बिनु परचै जिव यम को चेरा ॥
 प्रकट चीन्ह नहिं परखै मूढ़ा ❀ परे काल के फन्द अगूढ़ा ॥
 नृपति युधिष्ठिर द्वापर राजा ❀ तिन्ह पुनि कीन यज्ञकोसाजा ॥
 संन्यासी बैरागी आये ❀ ब्राह्मण सकलो भेष जो आये ॥
 तबहुँ न बाज्यो घण्टाकाशा ❀ चकित भयोसकलोबुधिनाशा ॥
 कृष्ण सारथी नृप के रहिया ❀ काहे न घण्ट बाजु दुखसहिया ॥
 जबहिं सुदर्शन ग्रास उठावा ❀ बाज्यो घण्ट नाम परभावा ॥
 तबहुँ न चीन्है सतगुरु बानी ❀ बुद्धि नाश यम पारस प्रानी ॥
 भक्ति त्यागि जिवपार न पावा ❀ भक्त होय यमलोक सिधावा ॥
 कृष्ण बुद्धि पांडव कहँ दीन्हा ❀ बन्धुघात तब पांडव कीन्हा ॥
 पुनि पाण्डव कहँ दोष लगावा ❀ दोष लाय तेहि यज्ञ करावा ॥
 ताहु पर तेहि अधिक दुखावा ❀ डारि हिमाचल ताहि गलावा ॥
 चारिबन्धु द्रोपदि गलिगयऊ ❀ उबरे सत्य युधिष्ठिर ठयऊ ॥
 अर्जुन सम तेहि पाव न कोई ❀ ताकरि ऐसनि गञ्जनि होई ॥
 बलि हरिचन्द करण बड़दानी ❀ कालकीन पुनि ताकरि हानी ॥
 जिय अचेत तेहि आशालावै ❀ खसम बिचारि ताहि पगुध्यावै ॥
 कला अनेक देखावै काला ❀ पाछे जीवन्ह करै बिहाला ॥
 मुक्ति जानि जिव पासा लावै ❀ आशा बन्धु जिवन्ह संतावै ॥
 कर अहार जस जिवन्ह जराई ❀ भक्त अभक्त सबन्ह कै खाई ॥
 जे रक्षक तेहि खोजहिं नाहीं ❀ अनचीन्हे यम के मुख जाहीं ॥

हे धर्मणि तोहिं केतिक बुझावों ❀ परमारथ बदिजिवन्ह छोड़ावों ॥
 अस यम बुद्धि हते सबकेरा ❀ परस्वत नाहिं शब्द कोइ मेरा ॥
 यम के दिशि है मोसे लरई ❀ अन्तहु जाय काल मुख परई ॥
 जबलगि पुरुष नाम नहिं भेंटै ❀ तबलगि जन्म मरण नहिंमेटै ॥
 नाम डोरि आहे ध्रमदासा ❀ शब्द बिलाय गहो बिश्वासा ॥
 पुरुष प्रभाव पुरुष पहुँ जाहीं ❀ कृत्रिम नाम ते यम लै स्वाहीं ॥
 पुरुष नाम परवाना पावै ❀ कालहि जीति अमर घर आवै ॥

छंद—पुरुष नाम प्रताप धर्मणि हंस लोक सिधावही ।

महा दुख अरु कष्ट मेटै फिरि न जोइनि आवही ॥

पुरुष की छवि हंस निरखहिं लहैं अति आनंद घना ।

अंश हंसमिलिकर कुतूहल चन्दकुमुदिनि संग बना ॥ ५१ ॥

सो०—यह जग कुमुदिनिभाव, हर्ष शोक दोउ व्यापई ।

चन्द्र उदय सुख पाव, अस्त होत दुख पावही ॥ ५३ ॥

कबहुँ नमलिन सुभाव, एक प्रभाव सदा उदित ।

हंस सदा सुख पाव, शोक मोहदुख क्षण कनहिं ॥ ५४ ॥

चौपाई ।

संत के दरशन मिटै कलेशा ❀ तेहि लै राखे अबिचल देशा ॥
 द्वापर गत कलियुग परवेशा ❀ पुनि हम चलि जिवन्ह उपदेशा ॥
 धर्मराय कहँ देख्यो आई ❀ मोहिं देखि यम गो मुरछाई ॥
 कहैं धर्म कस मोहिं दुखायहु ❀ भक्ष्य हमार लोक पहुँचायहु ॥
 तीनिउ युग तुम गमिसंसारा ❀ भवसागर तुम मोर उजारा ॥
 हारि बचन पुरुष मोहिं दीना ❀ तुम कस जीव छुड़ावै लीना ॥
 ओर बन्धु जो आवत कोई ❀ क्षण महँ ता कहँ खाब बिलोई ॥
 तुमते कछु नहिं मोर बसाई ❀ तुम्हरे बल हंसा घर जाई ॥
 अब तुम जाहु फेर जग माहीं ❀ शब्द तुम्हार सुनिहि केउनाहीं ॥
 कर्म धर्म मम अस कै ठाटा ❀ ताते कोइ नहिं पावै बाटा ॥

घर घर भर्म भूत उपजावा ❀ धोखा दै जीवन्ह भुलवावा ॥
 भर्म भूत है सबकहँ लागै ❀ जेहि चीन्है ताको भ्रम भागै ॥
 मद अरु मांस भक्ष्य नरलोई ❀ सर्व मांस प्रिय नर कहँ होई ॥
 आपन पथ में कीन प्रकासा ❀ सर्व मांस मद मांस गरासा ॥
 चंडी योगिनि देवि पुजावो ❀ यही भर्म महँ जग जहँ डावो ॥
 बँधि बहु फन्दहि फन्द फदायो ❀ अन्तकाल की सुधि बिसरायो ॥
 तुम्हरी भक्ति कठिन है भाई ❀ कोइ न मनिहै कहौं बुझाई ॥
 धर्मराय तैं बड़ छल कीन्हा ❀ छल तुम्हार सकलो हमचीन्हा ॥
 पुरुष बचन दूसर नहिं होई ❀ ताते तुम जीवन्ह कहँ खोई ॥
 पुरुष मोहि जो आज्ञा देही ❀ तौ अब जिय है नाम सनेही ॥
 ताते सहजहि जिय लै जाई ❀ सत्यलोक दे जिव पहुँचाई ॥
 कोटि फन्द जे तुम रचिराखा ❀ वेद शास्त्र निज महिमा भाखा ॥
 प्रकट कला जो धरि जगजाई ❀ तौ सब जीवन्ह कहँ मुकुताई ॥
 जो अस करो बचन तब डोलै ❀ बचन अडिग अडोल अमोलै ॥
 जो जियरा अंकुरी होई ❀ शब्द हमार मानि है सोई ॥
 यह अंकुरि जीवन्ह मुकुताइव ❀ फन्दा काटि लोक लै आइव ॥
 काटि भर्म जो देहौ ताही ❀ भर्म तुम्हार मानि है नाही ॥

छंद—सत्य शब्द दृढ़ाइ सबही भर्म तव सब टारऊँ ।

छल तुम्हारा सब चिन्हावों नाम बल जिवतारऊँ ॥

मन बचन जो मोहिं सुमिरै एक तत्त्व लय लाइहैं ।

सो शीश तुम्हरे पांवदै जिव अमर लोकहि आइहैं ॥ ५२ ॥

सो०—मर्दहि तुम्हरो मान, सूरुा हंस सो सुजन कोइ ।

सत्य शब्द सहिदान, चिन्है हंस तेहि हरष अति ॥ ५५ ॥

चोपाई ।

कहै धर्म जीवहि सुखदाई ❀ बात एक मोहिं कहो बुझाई ॥
 जो जिव रहै तुम्हें लौ लाई ❀ ताके निकट काल नहिं जाई ॥

दूत हमार ताहि नहिं पावै ❀ मूर्च्छित दूत मोहिं पहुँ आवै ॥
 यह नहिं बूझिपरै मोहिं भाई ❀ तौन भेद मोहिं कहौ बुझाई ॥
 सुनो धर्म तुम सुत सहिदानी ❀ सत्य शब्द आहै निर्बानी ॥
 पुरुष नाम है गुप्त प्रवाना ❀ प्रकट नाम सत हंस बखाना ॥
 नाम हमार हंस जो गहिहैं ❀ भवसागर सो सो निर्बहिहैं ॥
 दूत तुम्हार होइ बल थोरा ❀ जब मम हंस नाम लै मोरा ॥
 कहैं धर्म सुनु अन्तर्यामी ❀ कृपा करहु अब मोपर स्वामी ॥
 यहि युग कवन नाम तुम आही ❀ सोई बताइ देहु मन माही ॥
 तौन नाम राखहु जनि गोई ❀ बीरा अंक गुप्त मत सोई ॥
 अष्टादशहु जाहु संसारा ❀ सौंपहु मोहिं भेद गुण न्यारा ॥
 हमहिं जिवन कहँ शब्द चेताई ❀ आन अंग सब मोहिं बुझाई ॥
 किमि कारण तुम पुरुष कहाई ❀ पुरुष लोक जीवन्ह बैठाई ॥
 मोहिं दास आपन कै लीजै ❀ शब्दसार प्रभु मोकहँ दीजै ॥
 सुनहु धर्म तुम कस छल करहु ❀ प्रकट सुदास गुप्त छल धरहु ॥
 गुप्त भेद नहिं देवै तोहीं ❀ पुरुष अवाज कहा नहिं मोहीं ॥
 नाम कबीर मोर कलि माहीं ❀ कहे कबीर यम निकट न जाहीं ॥
 कहैं धर्म जो मोहिं दुरैहो ❀ खेल एक पुनि हमहुँ खेलैहो ॥
 अस कहि छल बुधिरचा बनाई ❀ हंस अनेक लेव संग लाई ॥
 तुही नाम लै पंथ चलाइव ❀ यहि बिधि जीवन्ह धोख देखाइव ॥
 अरे काल में जानों तोहीं ❀ छल मत कहा सुनावहु मोहीं ॥
 जो जिव हैहै शब्द सनेही ❀ छल तुम्हार नहिं लगिहै तेही ॥
 जो हरि हंस लेइ पहिंचानी ❀ परखिहि ज्ञान ग्रंथ मम बानी ॥
 जहि जीवहि में थापव जाई ❀ छल तुम्हार में देव चिन्हाई ॥
 धर्मणि कठिन काल गतिगंदा ❀ छलबुधि कै जीवहि दै फन्दा ॥
 कहै धर्म प्रभु मोहिं बुझावो ❀ यम चरित्र सब मोहिं सुनावो ॥
 केहि बिधि छल करिहै यमराई ❀ तवन भेद मोहिं कहहु चेताई ॥

कलियुग चरित कहो मोहिंपाहीं ✽ यम के छल हम बहुत डर
सतयुग त्रेता द्वापर भयऊ ✽ ताकर भेद हमहिं सन कत
तीनों युग को भयो निबेरा ✽ सो अब साहब करो न वे
कलियुग केर कहौ परभाऊ ✽ और हंस परबोधेहु क
सुनहु सन्त यह ज्ञान अनूपा ✽ गज थलदेश प्रबोध्यो भ
रायबंक यम नाम सो आही ✽ दीन्ह्यो सार शब्द पुनि त
कीन्यो ताहि जीव कडहारा ✽ सो जीवन्ह कै करिहि उब
मिलमिल दीननैं न नि सरो ✽ ज्ञान कोह

ताकहँ मैं कडहारी दीन्हा * जब उन्हमो कहँ निजक
 तहाँ ते चलि आये भ्रमदासा * राय चतुर्भुज नृपति
 ताकर देश आहि दरभङ्गा * परखेसि मोहिं सन्त
 दृढ़ता देखि ताहि समुभावा * ज्ञान भक्ति बिधिता
 मिलामोहिं छांडेसि भ्रममाया * अमर नाम सो ता
 ताहू कहँ कडहारी दीना * चतुर्भुज शब्द हेतु
 छंद-हंस निरमल बिमल बाणी रहनि गहन उज्ज
 कुलखानि सकल बिसारि बिषया जोहरी गुण न
 चतुर्भुज बद्धेश जिसते जिओ तुम चौथे
 तुम चारिहों कडहार जिवके गिरा निश्चल ए
 सो०-जम्बुद्वीप के जीव, तुमरि बाँह हमको मि
 गहे बचन दृढ़पीव, ताहि काल पावै
 धनिसतगुरुतुममोहिं धर्मदास वचन-चौपाई ।

धनिसतगुरुतुममोहिं
मैं किङ्कर तुव दास
मोरे चित अति हर्ष
भागहि शब्द तुम्हारो
मैं अधकरमी कुटिल
हृदपाव, ताहि काल पाव
धर्मदास वचन-जोपाई ।
चेतावा * काल फन्द ते मोहि
के दासा * लीन्हों मोर काटि
समाना * तुम गुणमोहिं न ज
मानै * पुण्य भाग जो तु
कठोरा * रह्यो अचेत भर्मि

कहाजानि तुम लियहु जगाई ❀ कवने तप में दरशन पाई ॥
 सो समुझाय कहौ जिय मूला ❀ रवि तव गिरा कमल मनफूला ॥
 धर्मणि सुनहु पीछली बाता ❀ तोहिं बुझाय कहौं बिख्याता ॥
 सन्त सुदरशन द्वापर भयऊ ❀ सो प्रसंग तोहिं प्रथम सुनयऊ ॥
 तेहि लैगयो देश निज जबहीं ❀ बिनती बहुत कीनितिन्हतबहीं ॥
 कहैं श्वपचसतगुरु सुनिलीजै ❀ मोरे मातु पितहि गतिदीजै ॥
 बन्दी छोर करहु प्रभुताई ❀ यम के देश बहुत दुख पाई ॥
 मैं बहुभाँति कहा समुझाई ❀ मातु पितहि परतीत न आई ॥
 बालकबदि नहिं मानु सिखावा ❀ भक्ति करत नहिं मोहिं दुखावा ॥
 भक्ति तुम्हारि करन जब लागे ❀ कबहुँ न द्रोह कीन मम आगे ॥
 अधिकौ हर्ष ताहि चित होई ❀ ताते मम बिनती प्रभु सोई ॥
 आनहुँ तेहि सत शब्द दृढ़ाई ❀ बन्दी छोर करिय प्रभु जाई ॥
 बिनती बहुत सन्त जब कीन्हा ❀ ताकरि बचन मानि पुनि लीन्हा ॥
 ताके बिनय बहुरि जग आये ❀ कलियुग बिनय कबीर कहाये ॥
 और द्वीप हंसन उपदेशा ❀ जम्बु द्वीप पुनि कीन प्रवेशा ॥
 सन्त सुदरशन के पितुमाता ❀ लक्षिमान रहि नाम सोहाता ॥
 श्वपचशरीर छोड़ि तेहि भाई ❀ मानुष बहुरि धरा तन आई ॥
 सन्त सुदरशन के परतापा ❀ मानुष देह बिप्र कै छापा ॥
 दूनहुँ जन्म ठाम दुइ लीन्हा ❀ पुनि बिधि मिरैताहिकहँ दीन्हा ॥
 कुलयत नाम बिप्र को तहिया ❀ नारी नाम महेशरि लहिया ॥
 कालरूप ह्वै भेंट्यो ओही ❀ बिप्रबधू गृह लागै मोही ॥
 बहुत दिवस रहु ताके पासा ❀ ज्ञान गम्य बहुत प्रकासा ॥
 ताके हृदय न ज्ञान समाई ❀ बालक जान प्रतीत न आई ॥
 ताहू देह न चीन्हेसि मोही ❀ गुप्त भयों नहिं भेंट्यो ओही ॥
 कछु दिन अन्तदुहुँ नतनु त्यागा ❀ दरश प्रभाव मनुज तनु जागा ॥
 पुनि दूनहुँ ते भयो मिराऊ ❀ रहहि नगर चन्द्रावलि नाऊ ॥

कलियुग चरित कहो मोहिंपाहीं ❀ यम के छल हम बहुत डराहीं ॥
 सतयुग त्रेता द्वापर भयऊ ❀ ताकर भेद हमहिं सन कह्यऊ ॥
 तीनों युग को भयो निबेरा ❀ सो अब साहब करो न बेरा ॥
 कलियुग केर कहौ परभाऊ ❀ और हंस परबोधेहु काऊ ॥
 सुनहु सन्त यह ज्ञान अनूपा ❀ गज थलदेश प्रबोध्यो भूपा ॥
 रायबंक यम नाम सो आही ❀ दीन्ह्यो सार शब्द पुनि ताही ॥
 कीन्यो ताहि जीव कडहारा ❀ सो जीवन्ह कै करिहि उबारा ॥
 सिलमिल दीपतहाँ चलि आये ❀ सहजहिं जीवन काहँ चेताये ॥
 ताकहँ मैं कडहारी दीन्हा ❀ जब उन्हमो कहँ निजकरि चीन्हा ॥
 तहाँ ते चलि आये भ्रमदासा ❀ राय चतुर्भुज नृपति सुबासा ॥
 ताकर देश आहि दरभङ्गा ❀ परखेसि मोहिं सन्त परसङ्गा ॥
 दृढ़ता देखि ताहि समुझावा ❀ ज्ञान भक्ति बिधि ताहि दृढ़ावा ॥
 मिलामोहिं छाँड़ेसि भ्रममाया ❀ अमर नाम सो ताही पाया ॥
 ताहु कहँ कडहारी दीना ❀ चतुर्भुज शब्द हेतु कै लीन्हा ॥

छंद—हंस निरमल बिमल बाणी रहनि गहन उजागरा ।

कुलखानि सकल बिसारि बिषया जोहरी गुण नागरा ॥

चतुर्भुज बङ्केश जिसते जिऔ तुम चौथे सही ।

तुम चारिहों कडहार जिवके गिरा निश्चल एकही ॥ ५३ ॥

सो०—जम्बुद्वीप के जीव, तुमरि बाँह हमको मिलै ॥

गहे बचन दृढ़पीव, ताहि काल पावै नहीं ॥ ५४ ॥

धर्मदास वचन—चोपाई ।

धनिसतगुरुतुममोहिं चेतावा ❀ काल फन्द ते मोहिं मुकुतावा ॥
 मैं किङ्कर तुव दास के दासा ❀ लीन्हों मोर काटि यम फाँसा ॥
 मोरे चित अति हर्ष समाना ❀ तुम गुणमोहिं न जाय बखाना ॥
 भागहि शब्द तुम्हारो मानै ❀ पुण्य भाग जो तुव ब्रत ठानै ॥
 मैं अघकरमी कुटिल कठोरा ❀ रह्यो अचेत भर्मि चित मोरा ॥

कहाजानि तुम लियहु जगाई ❀ कवने तप में दरशन पाई ॥
 सो समुझाय कहौ जिय मूला ❀ रवितव गिरा कमल मनफूला ॥
 धर्मणि सुनहु पीछली बाता ❀ तोहिं बुझाय कहौ बिरुयाता ॥
 सन्त सुदरशन द्वापर भयऊ ❀ सो प्रसंग तोहिं प्रथम सुनयऊ ॥
 तेहि लैगयो देश निज जबहीं ❀ बिनती बहुत कीनितिन्हतबहीं ॥
 कहैं श्वपचसतगुरु सुनिलीजै ❀ मोरे मातु पितहि गतिदीजै ॥
 बन्दी छोर करहु प्रभुताई ❀ यम के देश बहुत दुख पाई ॥
 में बहुभाँति कहा समुझाई ❀ मातु पितहि परतीत न आई ॥
 बालकबदि नहिं मानु सिखावा ❀ भक्ति करत नहिं मोहिं दुखावा ॥
 भक्ति तुम्हारि करन जब लागे ❀ कबहुँ न द्रोह कीन मम आगे ॥
 अधिकौ हर्ष ताहि चित होई ❀ ताते मम विनती प्रभु सोई ॥
 आनहुँ तेहि सत शब्द दृढ़ाई ❀ बन्दी छोर करिय प्रभु जाई ॥
 बिनती बहुत सन्त जब कीन्हा ❀ ताकरि बचन मानि पुनि लीन्हा ॥
 ताके विनय बहुरि जग आये ❀ कलियुग विनय कबीर कहाये ॥
 और द्वीप हंसन उपदेशा ❀ जम्बु द्वीप पुनि कीन प्रवेशा ॥
 सन्त सुदरशन के पितुमाता ❀ लक्षिमान रहि नाम सोहाता ॥
 श्वपचशरीर छोड़ि तेहि भाई ❀ मानुष बहुरि धरा तन आई ॥
 संत सुदरशन के परतापा ❀ मानुष देह बिप्र कै छापा ॥
 दूनहुँ जन्म ठाम दुइ लीन्हा ❀ पुनि बिधि मिरैताहिकहुँ दीन्हा ॥
 कुलयत नाम बिप्र को तहिया ❀ नारी नाम महेशरि लहिया ॥
 कालरूप ह्वे भेंट्यो ओही ❀ बिप्रबधू गृह लागे मोही ॥
 बहुत दिवस रहु ताके पासा ❀ ज्ञान गम्य बहुत प्रकासा ॥
 ताके हृदय न ज्ञान समाई ❀ बालक जान प्रतीत न आई ॥
 ताहु देह न चीन्हेसि मोही ❀ गुप्त भयों नहिं भेंट्यो ओही ॥
 कछु दिन अन्तदुहुँ नतनु त्यागा ❀ दरश प्रभाव मनुज तनु जागा ॥
 पुनि दूनहुँ ते भयो मिराऊ ❀ रहहि नगर चन्द्रावलि नाऊ ॥

कलियुग चरित कहो मोहिंपाहीं ❀ यम के छल हम बहुत डराहीं ।
 सतयुग त्रेता द्वापर भयऊ ❀ ताकर भेद हमहिं सन कहाऊ ।
 तीनों युग को भयो निबेरा ❀ सो अब साहब करो न बेरा ।
 कलियुग केर कहौ परभाऊ ❀ और हंस परबोधेहु काऊ ।
 सुनहु सन्त यह ज्ञान अनूपा ❀ गज थलदेश प्रबोध्यो भूपा ।
 रायबंक यम नाम सो आही ❀ दीन्ह्यो सार शब्द पुनि ताही ।
 कीन्यो ताहि जीव कडहारा ❀ सो जीवन्ह कै करिहि उवारा ।
 सिलमिल दीपतहाँ चलि आये ❀ सहजहिं जीवन काहँ चेताये ।
 ताकहँ मैं कडहारी दीन्हा ❀ जब उन्हमो कहँ निजकरि चीन्हा ।
 तहाँ ते चलि आये भ्रमदासा ❀ राय चतुर्भुज नृपति सुबासा ।
 ताकर देश आहि दरभङ्गा ❀ परखेसि मोहिं सन्त परसङ्गा ।
 दृढ़ता देखि ताहि समुझावा ❀ ज्ञान भक्ति बिधि ताहि दृढ़ावा ।
 मिलामोहिं छाँड़ेसि भ्रममाया ❀ अमर नाम सो ताही पाया ।
 ताहु कहँ कडहारी दीना ❀ चतुर्भुज शब्द हेतु कै लीन्हा ।

छंद—हंस निरमल बिमल बाणी रहनि गहन उजागरा ।

कुलखानि सकल बिसारि बिषया जोहरी गुण नागरा ॥

चतुर्भुज बङ्गेश जिसते जिओ तुम चौथे सही ।

तुम चारिहों कडहार जिवके गिरा निश्चल एकही ॥ ५३ ॥

सो०—जम्बुद्वीप के जीव, तुमरि बाँह हमको मिलै ॥

गहै बचन दृढ़पीव, ताहि काल पावे नहीं ॥ ५४ ॥

धर्मदास बचन—चोपाई ।

धनिसतगुरुतुममोहिं चेतावा ❀ काल फन्द ते मोहिं मुकुतावा ।
 मैं किङ्कर तुव दास के दासा ❀ लीन्हों मोर काटि यम फाँसा ।
 मोरे चित अति हर्ष समाना ❀ तुम गुणमोहिं न जाय बखाना ।
 भागहि शब्द तुम्हारो मानै ❀ पुण्य भाग जो तुव ब्रत ठानै ।
 मैं अघकरमी कुटिल कठोरा ❀ रह्यो अचेत भर्मि चित मोरा ।

कहाजानि तुम लियहु जगाई ❀ कवने तप में दरशन पाई ॥
 सो समुझाय कहौ जिय मूला ❀ रवि तव गिरा कमल मनफूला ॥
 धर्मणि सुनहु पीछली बाता ❀ तोहिं बुझाय कहौं बिरुयाता ॥
 सन्त सुदरशन द्वापर भयऊ ❀ सो प्रसंग तोहिं प्रथम सुनयऊ ॥
 तेहि लैगयो देश निज जबहीं ❀ बिनती बहुत कीनितिन्हतबहीं ॥
 कहैं श्वपचसतगुरु सुनिलीजै ❀ मोरे मातु पितहि गतिदीजै ॥
 बन्दी छोर करहु प्रभुताई ❀ यम के देश बहुत दुख पाई ॥
 में बहुभाँति कहा समुझाई ❀ मातु पितहि परतीत न आई ॥
 बालकबदि नहिं मानु सिखावा ❀ भक्ति करत नहिं मोहिं दुखावा ॥
 भक्ति तुम्हारि करन जब लागे ❀ कबहुँ न द्रोह कीन मम आगे ॥
 अधिकौ हर्ष ताहि चित होई ❀ ताते मम बिनती प्रभु सोई ॥
 आनहुँ तेहि सत शब्द दृढ़ाई ❀ बन्दी छोर करिय प्रभु जाई ॥
 बिनती बहुत सन्त जब कीन्हा ❀ ताकरि बचन मानि पुनि लीन्हा ॥
 ताके बिनय बहुरि जग आये ❀ कलियुग बिनय कबीर कहाये ॥
 और द्वीप हंसन उपदेशा ❀ जम्बु द्वीप पुनि कीन प्रवेशा ॥
 सन्त सुदरशन के पितुमाता ❀ लक्षिमान रहि नाम सोहाता ॥
 श्वपचशरीर छोड़ि तेहि भाई ❀ मानुष बहुरि धरा तन आई ॥
 संत सुदरशन के परतापा ❀ मानुष देह बिप्र कै छापा ॥
 दूनहुँ जन्म ठाम दुइ लीन्हा ❀ पुनि बिधि मिरैताहिकहँ दीन्हा ॥
 कुलयत नाम बिप्र को तहिया ❀ नारी नाम महेशरि लहिया ॥
 कालरूप है भेंट्यो ओही ❀ बिप्रबधू गृह लागै मोही ॥
 बहुत दिवस रहु ताके पासा ❀ ज्ञान गम्य बहुत प्रकासा ॥
 ताके हृदय न ज्ञान समाई ❀ बालक जान प्रतीत न आई ॥
 ताहु देह न चीन्हेसि मोही ❀ गुप्त भयों नहिं भेंट्यो ओही ॥
 कछु दिन अन्तदुहुँ नतनु त्यागा ❀ दरश प्रभाव मनुज तनु जागा ॥
 पुनि दूनहुँ ते भयो मिराऊ ❀ रहहि नगर चन्द्रावलि नाऊ ॥

कलियुग चरित कहो मोहिंपाहीं ❀ यम के छल हम बहुत डराहीं ॥
 सतयुग त्रेता द्वापर भयऊ ❀ ताकर भेद हमहिं सन कह्यऊ ॥
 तीनों युग को भयो निबेरा ❀ सो अब साहब करो न बेरा ॥
 कलियुग केर कहौ परभाऊ ❀ और हंस परबोधेहु काऊ ॥
 सुनहु सन्त यह ज्ञान अनूपा ❀ गज थलदेश प्रबोध्यो भूपा ॥
 रायबंक यम नाम सो आही ❀ दीन्ह्यो सार शब्द पुनि ताही ॥
 कीन्यो ताहि जीव कडहारा ❀ सो जीवन्ह कै करिहि उबारा ॥
 सिलमिल दीपतहाँ चलि आये ❀ सहजहिं जीवन काहँ चेताये ॥
 ताकहँ मैं कडहारी दीन्हा ❀ जब उन्हमो कहँ निजकरि चीन्हा ॥
 तहाँ ते चलि आये भ्रमदासा ❀ राय चतुर्भुज नृपति सुबासा ॥
 ताकर देश आहि दरभङ्गा ❀ परखेसि मोहिं सन्त परसङ्गा ॥
 दृढ़ता देखि ताहि समुझावा ❀ ज्ञान भक्ति विधि ताहि दृढ़ावा ॥
 मिला मोहिं छाँड़ेसि भ्रममाया ❀ अमर नाम सो ताही पाया ॥
 ताहु कहँ कडहारी दीना ❀ चतुर्भुज शब्द हेतु कै लीन्हा ॥

छंद—हंस निरमल विमल बाणी रहनि गहन उजागरा ।

कुलखानि सकल बिसारि विषया जोहरी गुण नागरा ॥

चतुर्भुज बङ्गेश जिसते जिओ तुम चौथे सही ।

तुम चारिहों कडहार जिवके गिरा निश्चल एकही ॥ ५३ ॥

सो०—जम्बुद्वीप के जीव, तुमरि बाँह हमको मिलै ॥

गहे बचन दृढ़पीव, ताहि काल पावै नहीं ॥ ५६ ॥

धर्मदास बचन—चोपाई ।

धनिसतगुरुतुममोहिं चेतावा ❀ काल फन्द ते मोहिं मुकुतावा ॥
 मैं किङ्कर तुव दास के दासा ❀ लीन्हों मोर काटि यम फाँसा ॥
 मोरे चित अति हर्ष समाना ❀ तुम गुणमोहिं न जाय बखाना ॥
 भागहि शब्द तुम्हारो मानै ❀ पुण्य भाग जो तुव ब्रत ठानै ॥
 मैं अधकरमी कुटिल कठोरा ❀ रह्यो अचेत भर्मि चित मोरा ॥

कहाजानि तुम लियहु जगाई ❀ कवने तप में दरशन पाई ॥
 सो समुझाय कहौ जिय मूला ❀ रवि तव गिरा कमल मनफूला ॥
 धर्मणि सुनहु पीछली बाता ❀ तोहिं बुझाय कहौ बिख्याता ॥
 सन्त सुदरशन द्वापर भयऊ ❀ सो प्रसंग तोहिं प्रथम सुनयऊ ॥
 तेहि लैगयो देश निज जबहीं ❀ बिनती बहुत कीनितिन्हतबहीं ॥
 कहैं श्वपचसतगुरु सुनिलीजै ❀ मोरे मातु पितहि गतिदीजै ॥
 बन्दी छोर करहु प्रभुताई ❀ यम के देश बहुत दुख पाई ॥
 में बहुभाँति कहा समुझाई ❀ मातु पितहि परतीत न आई ॥
 बालकबदि नहिं मानु सिखावा ❀ भक्ति करत नहिं मोहिं दुखावा ॥
 भक्ति तुम्हारि करन जब लागे ❀ कबहुँ न द्रोह कीन मम आगे ॥
 अधिकौ हर्ष ताहि चित होई ❀ ताते मम बिनती प्रभु सोई ॥
 आनहुँ तेहि सत शब्द दृढ़ाई ❀ बन्दी छोर करिय प्रभु जाई ॥
 बिनती बहुत सन्त जब कीन्हा ❀ ताकरि बचन मानि पुनि लीन्हा ॥
 ताके बिनय बहुरि जग आये ❀ कलियुग बिनय कबीर कहाये ॥
 और द्वीप हंसन उपदेशा ❀ जम्बु द्वीप पुनि कीन प्रवेशा ॥
 सन्त सुदरशन के पितुमाता ❀ लक्षिमान रहि नाम सोहाता ॥
 श्वपचशरीर छोड़ि तेहि भाई ❀ मानुष बहुरि धरा तन आई ॥
 संत सुदरशन के परतापा ❀ मानुष देह बिप्र कै छापा ॥
 दूनहुँ जन्म ठाम दुइ लीन्हा ❀ पुनि बिधि मिरैताहिकहँ दीन्हा ॥
 कुलयत नाम बिप्र को तहिया ❀ नारी नाम महेशरि लहिया ॥
 कालरूप ह्वै भेंट्यो ओही ❀ बिप्रबधू गृह लागै मोही ॥
 बहुत दिवस रहु ताके पासा ❀ ज्ञान गम्य बहुत प्रकासा ॥
 ताके हृदय न ज्ञान समाई ❀ बालक जान प्रतीत न आई ॥
 ताहु देह न चीन्हेसि मोही ❀ गुप्त भयों नहिं भेंट्यो ओही ॥
 कछु दिन अन्तदुहुँ नतनु त्यागा ❀ दरश प्रभाव मनुज तनु जागा ॥
 पुनि दूनहुँ ते भयो मिराऊ ❀ रहहि नगर चन्द्रावलि नाऊ ॥

ऊदा नाम नारि कर भयऊ ❀ पुरुष नाम चंदा धरि लयऊ ॥
 दरशदीन तेहि शिशु तनधारी ❀ लै गइ बालक निजगृह नारी ॥
 बालक देखि नारि पति कहई ❀ यह बालक कहु काकर अहई ॥
 कहेउ नारि जलमहँ यहिपावा ❀ सुंदर देखि मोहिं मन भावा ॥
 कह चन्दन तैं मूरख नारी ❀ बेगि आउ तैं बालक डारी ॥
 ऊदा त्रास पुरुष कै माना ❀ चंदन शाहु जबै रिसिआना ॥
 चलि भय मोहिं पवारै जबहीं ❀ अन्तरधान भयों में तबहीं ॥
 भयो गुप्त तेहि कर से ताही ❀ रोदन करें दुवो बिलखाही ॥
 विकल भई बन दूँदत डोलै ❀ मुग्धज्ञान कछु मुख नहिं बोलै ॥

काशी में कबीर साहब का नोरु से मिलना ।

इहिबिधिकछुक दिवसचलिगयऊ ❀ तजितन बहुरिजन्मतब लयऊ ॥
 मानुष तन जोलहाकुल चीन्हा ❀ दुहुँ संयोगबहुरिबिधि कीन्हा ॥
 काशी नगर रहे पुनि सोई ❀ नीरु नाम जोलाहा होई ॥
 नारि लिआइ आउ पथ माहीं ❀ जलअचवन गइ बनिता ताही ॥
 ताल माहँ पुरइनि पनवारा ❀ शिशु ह्वै हम तापर पगु धारा ॥
 करहि कुतूहल बालक नाई ❀ नीमा दृष्टि परी तहँ जाई ॥
 पाइ गहेसि धन रङ्ग समाना ❀ लेइ गई सो पुरुष ठेकाना ॥
 जोलहै रोष कीन तेहि बारी ❀ बेगि देहि तैं बालक डारी ॥
 नारी मानु त्रास तेहिकेरा ❀ रङ्ग धनद सम लै चलु डेरा ॥

जोलहै देखि नारि लौ लीना ❀ लेइ चलहु अस आयसु दीना ॥
 दिवस अनेक रह्यो तेहि ठाई ❀ कैसेहुँ ताहि प्रतीत न आई ॥
 बिनु पातीत काज नहिं होई ❀ दूदके गहहु प्रतीत बिलोई ॥
 तजि मोहिं न चीन्हा ❀ जानिपुत्र मोहिं आनंदकीन्हा ॥
 तजि मोहिं न चीन्हा ❀ देह धरेन्हि सो देउ चिन्हाई ॥
 तजि मोहिं न चीन्हा ❀ कबीरसाहब का धर्मदास को चैताबनी ।
 तजि मोहिं न चीन्हा ❀ अवतारा ❀ अमिनी रुमा प्रकट बिचारा ॥

धर्मणि त

यह सँयोग तोहिं दरशन दीन्हा ❀ धर्मणि अवकी तुममोहिंचीन्हा ॥
 धाड़ परे चरणन भ्रमदासा ❀ नयन बारि भरि प्रकटप्र कासा ॥
 धरहि न धीरज बहु परबोधा ❀ बिछुरि जननिजि मिलै अबोधा ॥
 युग पद गह्यो शीश भुँइ लाये ❀ निपट अधीर न उठत उठाये ॥
 निरखि बदन बहुरो पद गहई ❀ गदगद हृदय गिरा नहिं कहई ॥
 विलखति बदन श्वासनहिंबोले ❀ उनमुन दशापलक नहिंखोलै ॥
 बहुरि चरण गहि रोवहिभारी ❀ धरि धीरज पुनिखोलु सँभारी ॥
 हे प्रभु मोहिं तारनताधारा ❀ मोहि कृपा प्रभु कीन अपारा ॥
 अब यह दया करहु प्रभु मोहीं ❀ एकौ पलक न बिसरौ तोहीं ॥
 निशिदिन रहौ चरणतव राता ❀ यह वर देहु मोहिं जनत्राता ॥
 धर्मदास निस्संशय रहहु ❀ प्रेम प्रतीत नाम गुण गहहु ॥
 चीन्हेहु मोहिं तोर भ्रमभागा ❀ रहहु सदा तुम दिन अनुरागा ॥
 मन बच कर्म जाहि जो गहई ❀ सो तेहितजि अनतै कस रहई ॥
 अपनी गहनि बिनादुख पावै ❀ मिथ्या दोष गुरू को लावै ॥
 पंथ सुपंथ गुरू समझावै ❀ शिष्य अचेत न हृदय समावै ॥
 तुम तौ अंश हमारो आही ❀ तुमते हंस न दूसर आही ॥
 चारि माहँतुम अधिक पियारा ❀ केहि कारण तुम शोचबिचारा ॥
 मोहिं तोहिं कछु अंतर नाहीं ❀ परखि शब्द देखो हिय माहीं ॥
 मनबचक्रम तुम मोहिं लिआये ❀ द्वैत भाव तुम दूरि बहाये ॥
 तुम्हरे उर हम बासा कीन्हा ❀ निश्चयतुहिआपन करिलीन्हा ॥
 छंद—तोहिं आपन कीन धर्मणि रहो निस्संशय हिये ।
 करहु जीव उबार दृढ़ है नाम अविचल तोहिं दिये ॥
 ध्यान धारन नाश कारण पुरुष सुमिरण सार हो ।
 सुरति बीरा अंश धीरा जिवन्ह को निस्तार हो ॥ ५४ ॥
 सो०—तुम बहिता भ्रमदास, जम्बुद्वीप कडहार जिव ।
 पावै लोक निवास, तोहिं समेत मोहिं जो जपै ॥ ५७ ॥

ऊदा नाम नारि कर भयऊ ❀ पुरुष नाम चंदा धरि लयऊ ॥
 दरशदीन तेहि शिशु तनधारी ❀ लै गइ बालक निजगृह नारी ॥
 बालक देखि नारि पति कहई ❀ यह बालक कहु काकर अहई ॥
 कहेउ नारि जलमहँ यहिपावा ❀ सुंदर देखि मोहिं मन भावा ॥
 कह चन्दन तैं मूरख नारी ❀ बेगि आउ तैं बालक डारी ॥
 ऊदा त्रास पुरुष कै माना ❀ चंदन शाहु जबै रिसिआना ॥
 चलि भय मोहिं पवारै जबहीं ❀ अन्तरधान भयों मैं तबहीं ॥
 भयो गुप्त तेहि कर से ताहीं ❀ रोदन करें दुवो बिलखाहीं ॥
 बिकल भई बन दूँदुत डोलै ❀ मुग्धज्ञान कछु मुख नहिं बोलै ॥

काशी में कबीर साहब का नीरू से मिलना ।

इहिबिधिकछुक दिवसचलियगयऊ ❀ तजितन बहुरिजन्मतब लयऊ ॥
 मानुष तन जोलहाकुल चीन्हा ❀ दुहुँ संयोगबहुरिविधि कीन्हा ॥
 काशी नगर रहे पुनि सोई ❀ नीरू नाम जोलाहा होई ॥
 नारि लिआइ आउ पथ माहीं ❀ जलअचवन गइ बनिता ताहीं ॥
 ताल माहँ पुरइनि पनवारा ❀ शिशु है हम तापर पगु धारा ॥
 करहि कुतूहल बालक नाई ❀ नीमा दृष्टि परी तहँ जाई ॥
 पाइ गहेसि धन रङ्ग समाना ❀ लेइ गई सो पुरुष ठेकाना ॥
 जोलहै रोष कीन तेहि डारी ❀ बेगि देहि तैं बालक डारी ॥
 नारी मानु त्रास तेहिकेरा ❀ रङ्ग धनद सम लै चलु डेरा ॥
 जोलहै देखि नारि लौ लीना ❀ लेइ चलहु अस आयसु दीना ॥
 दिवस अनेक रह्यो तेहि ठाई ❀ कैसेहुँ ताहि प्रतीत न आई ॥
 बिनु परतीत काज नहिं होई ❀ दृढ़कै गहहु प्रतीत बिलोई ॥
 ताहुदेह पुनि मोहिं न चीन्हा ❀ जानिपुत्र मोहिं आनँदकीन्हा ॥
 तजि सो देह बहुरि सो भाई ❀ देह धरेन्हि सो देउ चिन्हाई ॥

कबीरसाहब का धर्मदास को चेतावनी ।

धर्मणि तू नीरू अवतारा ❀ अमिनी रूमा प्रकट बिचारा ॥

यह सँयोग तोहिं दरशन दीन्हा ❀ धर्मणि अबकी तुममोहिंचीन्हा ॥
 धाड़ परे चरणन भ्रमदासा ❀ नयन बारि भरि प्रकटप्र कासा ॥
 धरहि न धीरज बहु परबोधा ❀ बिछुरि जननिजि मिलै अबोधा ॥
 युग पद गह्यो शीश भुँइ लाये ❀ निपट अधीर न उठत उठाये ॥
 निरखि बदन बहुरो पद गहई ❀ गदगद हृदय गिरा नहिं कहई ॥
 विलखति बदन श्वासनहिंबोले ❀ उनमुन दशापलक नहिंखोलै ॥
 बहुरि चरण गहि रोवहिभारी ❀ धरि धीरज पुनिखोलु सँभारी ॥
 हे प्रभु मोहिं तारनताधारा ❀ मोहिं कृपा प्रभु कीन अपारा ॥
 अब यह दया करहु प्रभु मोहीं ❀ एकौ पलक न बिसरौ तोहीं ॥
 निशिदिन रहौ चरणतव राता ❀ यह वर देहु मोहिं जनत्राता ॥
 धर्मदास निस्संशय रहहु ❀ प्रेम प्रतीत नाम गुण गहहु ॥
 चीन्हेहु मोहिं तोर भ्रमभागा ❀ रहहु सदा तुम दिन अनुरागा ॥
 मन बच कर्म जाहि जो गहई ❀ सो तेहितजि अनतै कस रहई ॥
 अपनी गहनि बिनादुख पावै ❀ मिथ्या दोष गुरु को लावै ॥
 पंथ सुपंथ गुरु समभावे ❀ शिष्य अचेत न हृदय समावे ॥
 तुम तौ अंश हमारो आही ❀ तुमते हंस न दूसर आही ॥
 चारि माहँतुम अधिक पियारा ❀ केहि कारण तुम शोचबिचारा ॥
 मोहिं तोहिं कछु अंतर नाहीं ❀ परखि शब्द देखो हिय माहीं ॥
 मनबचक्रम तुम मोहिं लिआये ❀ द्वैत भाव तुम दूरि बहाये ॥
 तुम्हरे उर हम बासा कीन्हा ❀ निश्चयतुहिआपन करिलीन्हा ॥

छंद—तोहिं आपन कीन धर्मणि रहो निस्संशय हिये ।

करहु जीव उबार दृढ़ है नाम अविचल तोहिं दिये ॥

ध्यान धारन नाश कारण पुरुष सुमिरण सार हो ।

सुरति बीरा अंश धीरा जिवन्ह को निस्तार हो ॥ ५४ ॥

सो०—तुम बहिता भ्रमदास, जम्बुद्वीप कडहार जिव ।

पावै लोक निवास, तोहिं समेत मोहिं जो जपै ॥ ५७ ॥

चोपाई ।

हे प्रभु तुमहिं जीव के मूला ❀ मेढ्यो मोर सकल दुख भूला ॥
 यह नारायण पुत्र हमारा ❀ सौंपहु ताहि शब्द ततु सारा ॥
 जेहिते होइ पन्थ परकासा ❀ दया करहु बिनवै भ्रमदासा ॥
 औरो एक बचन तुमहारो ❀ आमिनि कहँ जो है है पारो ॥
 जो प्रभु कहो तो सौंपहुताही ❀ देव बालक महँ आज्ञा काही ॥
 आगे जेहिते पंथ चलाई ❀ ताते यह बिनती प्रभुराई ॥
 धर्मदास सुनुशब्द सिखापन ❀ कहौ सँदेश जानि हितआपन ॥
 बस्तु भँडार दीन तोहिं पाहीं ❀ सोधो बंश बतावो जाहीं ॥
 बंश भँडार आप तेहि देहू ❀ ताकर भार आपु शिर लेहू ॥
 अंश हमार प्रकट यह होई ❀ नाद सुपुत्र जागु जग होई ॥
 हंसो कहँ सो मिलि है आई ❀ हंसो पाहँ बस्तु तिन्ह पाई ॥
 सो पुनि पन्थ जगाइहि मोरा ❀ गाइहि सुयश बहुत वहिओरा ॥
 तिन्हते पन्थ होय परकासा ❀ नाम तुम्हार जपिहि भ्रमदासा ॥
 नाद पुत्र जबहीं प्रकटाइहि ❀ परम ताहि जग भक्ति दृढ़ाइहि ॥
 बिन्द ते होय न पन्थ उजागर ❀ परखि न देखहु धर्मणि नागर ॥
 चारों युग देखहु सम्बादा ❀ पन्थ उजागर कीन्हों नादा ॥
 का निर्गुण का सर्गुण भाई ❀ नाद बिना नहिं चलै पथाई ॥
 बिंद पुत्र आ संग नहिं छाँड़ै ❀ नातो देह नेह गुण माँड़ै ॥
 धर्मणि नाद पुत्र तुम मोरा ❀ ताते दीन्ह पुरुष का डीरा ॥
 तुमहूँ नाद पुत्र कहँ देहू ❀ शब्द हमार मानि शिर लेहू ॥
 नाद पुत्र सों बंश हमारा ❀ तिन्ह ते होय पंथ उजियारा ॥
 जो गुण नाम तुम्हारो गेहू ❀ हम तुम लैके पन्थ चलैहै ॥
 बिन्द तोहार न मनिहै ताही ❀ आप बसी नहिं शब्द समाही ॥
 शब्द की चाल नाद कहै होई ❀ बिन्द हँकारहि जाय बिगोई ॥
 कहाँ नाद कहँ वेर रे भाई ❀ नाम भक्ति बिन लोक न जाई ॥

गुरु ते अधिक काहु नहिं पेखै ❀ सबते श्रेष्ठ गुरु कहँ लेखै ॥
 सबते श्रेष्ठ गुरु कहँ मानै ❀ गुरु सिखापन सत कै आनै ॥
 नाम कबीर अजर मणि सारा ❀ यही नाम तुम हंस उबारा ॥
 जो जिव नाम हमारो गहिहै ❀ ताके हृदय धोख नहिं रहिहै ॥
 कोटिन दगा काल जो करिहै ❀ कहहि कबीर नाम तेहितरिहै ॥

छंद—कलि यही नाम प्रताप धर्मणि हंस छूटहिं कालते ।

जो दृढ़ गहै मग कर्म बच सो निस्तरै यम जालते ॥

यम तासु निकट न आइहै जेहि नाम की परतीत है ।

काल के शिर पांव दै जिव चलै भव भय अभय है ॥ ५५ ॥

सो०—परदा दिये उधारि, धर्मदास चित परखियो ।

जीवहि लेव उबारि, मनबचकर्म जोमोहिंजपै ॥ ५६ ॥

धर्मदासवचन चौपाई ।

हे प्रभु विनय करौं कर जोरी ❀ इतनी बात मानु प्रभु मोरी ॥
 तरै मोरि बंशावलि स्वामी ❀ कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
 अंक मोहर हंसा कहँ देवै ❀ ताकर भार आपु शिर लेवै ॥
 और काहु हम जानो नाहीं ❀ हम निरला प्रभु तुम्हरे आहीं ॥
 सोई करहु तरै मोर बंशा ❀ मोरे चित को मेटहु संशा ॥
 धर्मणि चित संशय जनि मानो ❀ तरिहै बंश धीर्य मन ठानो ॥
 तरिहि बयालिस बंश तुम्हारा ❀ मिथ्या बचन न होय हमारा ॥
 बिना नाम को बंश कहावै ❀ नाम गहै सो लोक सिधावै ॥
 आगे अस होइहै भ्रमदासा ❀ धर्मराय कस करिहि तमासा ॥
 कलिमहँपन्थ कीन परकासा ❀ थाप्यो चारिअंश निज दासा ॥
 तीनों युग यम लीन्ह हराई ❀ कलियुग मोहिं दीन बगराई ॥
 पापपुण्य कलियुग कहँ जानी ❀ कहेसि चलाव पन्थ हो ब्रह्मानी ॥
 पुरुष प्रताप कीन परकासा ❀ जानि प्रमार्थ होई भ्रमदासा ॥
 जब हम कीन चारि कडहारा ❀ धर्मराय कृत छल बिस्तारा ॥

चौपाई ।

हे प्रभु तुमहिं जीव के मूला ❀ मेढ्यो मोर सकल दुख भूला ॥
 यह नारायण पुत्र हमारा ❀ सौंपहु ताहि शब्द ततु सारा ॥
 जेहिते होइ पन्थ परकासा ❀ दया करहु बिनवै भ्रमदासा ॥
 ओरो एक बचन तुमहारो ❀ आमिनि कहँ जो है है पारो ॥
 जो प्रभु कहो तो सौंपहुताही ❀ देव बालक महँ आज्ञा काही ॥
 आगे जेहिते पंथ चलाई ❀ ताते यह बिनती प्रभुराई ॥
 धर्मदास सुनुशब्द सिखापन ❀ कहौ सँदेश जानि हितआपन ॥
 वस्तु भँडार दीन तोहिं पाहीं ❀ सोधो बंश बतावो जाहीं ॥
 बंश भँडार आप तेहि देहू ❀ ताकर भार आपु शिर लेहू ॥
 अंश हमार प्रकट यह होई ❀ नाद सुपुत्र जागु जग होई ॥
 हंसो कहँ सो मिलि है आई ❀ हंसो पाहं वस्तु तिन्ह पाई ॥
 सो पुनि पन्थ जगाइहि मोरा ❀ गाइहि सुयश बहुत वहिओरा ॥
 तिन्हते पन्थ होय परकासा ❀ नाम तुम्हार जपिहि भ्रमदासा ॥
 नाद पुत्र जबहीं प्रकटाइहि ❀ परम ताहि जग भक्ति ददाइहि ॥
 बिन्द ते होय न पन्थ उजागर ❀ परखि न देखहु धर्मणि नागर ॥
 चारों युग देखहु सम्बादा ❀ पन्थ उजागर कीन्हों नादा ॥
 का निर्गुण का सर्गुण भाई ❀ नाद बिना नहिं चलै पथाई ॥
 बिंद पुत्र आ सँग नहिं छाँड़ै ❀ नातो देह नेह गुण माडै ॥
 धर्मणि नाद पुत्र तुम मोरा ❀ ताते दीन्ह पुरुष का डोरा ॥
 तुमहूँ नाद पुत्र कहँ देहू ❀ शब्द हमार मानि शिर लेहू ॥
 नाद पुत्र सों बंश हमारा ❀ तिन्ह ते होय पंथ उजियारा ॥
 जो गुण नाम तुम्हारो गैहै ❀ हम तुम लैके पन्थ चलैहै ॥
 बिन्द तोहार न मनिहै ताही ❀ आप बसी नहिं शब्द समाही ॥
 शब्द की चाल नाद कहै होई ❀ बिन्द हँकारहि जाय बिगोई ॥
 कहाँ नाद कहँ वेर रे भाई ❀ नाम भक्ति बिन लोक न जाई ॥

गुरु ते अधिक काहु नहिं पेखै ❀ सबते श्रेष्ठ गुरु कहँ लेखै ॥
 सबते श्रेष्ठ गुरु कहँ मानै ❀ गुरु सिखापन सत कै आनै ॥
 नाम कबीर अजर मणि सारा ❀ यही नाम तुम हंस उबारा ॥
 जो जिव नाम हमारो गहिहै ❀ ताके हृदय धोख नहिं रहिहै ॥
 कोटिन दगा काल जो करिहै ❀ कहहि कबीर नाम तेहितरिहै ॥

छंद—कलि यही नाम प्रताप धर्मणि हंस छूटहिं कालते ।

जो दृढ़ गहै मग कर्म बच सो निस्तरै यम जालते ॥

यम तासु निकट न आइहै जेहि नाम की परतीत है ।

काल के शिर पांव दै जिव चलै भव भय अभय है ॥ ५५ ॥

सो०—परदा दिये उधारि, धर्मदास चित परखियो ।

जीवहि लेव उबारि, मनबचकर्म जोमोहिंजपै ॥ ५६ ॥

धर्मदासबचन चौपाई ।

हे प्रभु विनय करौं कर जोरी ❀ इतनी बात मानु प्रभु मोरी ॥
 तरै मोरि बंशावलि स्वामी ❀ कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
 अंक मोहर हंसा कहँ देवै ❀ ताकर भार आपु शिर लेवै ॥
 और काहु हम जानो नाहीं ❀ हम निरला प्रभु तुम्हरे आहीं ॥
 सोई करहु तरै मोर बंशा ❀ मोरे चित को मेटहु संशा ॥
 धर्मणि चित संशय जनि मानो ❀ तरिहै बंश धीर्य मन ठानो ॥
 तरिहि बयालिस बंश तुम्हारा ❀ मिथ्या बचन न होय हमारा ॥
 बिना नाम को बंश कहावै ❀ नाम गहै सो लोक सिधावै ॥
 आगे अस होइहै भ्रमदासा ❀ धर्मराय कस करिहितमासा ॥
 कलिमहँपन्थ कीन परकासा ❀ थाप्यो चारिअंश निज दासा ॥
 तीनों युग यम लीन्ह हराई ❀ कलियुग मोहिं दीन बगराई ॥
 पापपुण्य कलियुग कहँ जानी ❀ कहेसि चलाव पन्थ हो ब्रह्मानी ॥
 पुरुष प्रताप कीन परकासा ❀ जानि प्रमार्थ होई भ्रमदासा ॥
 जब हम कीन चारि कडहारा ❀ धर्मराय कृत बल बिस्तारा ॥

यह चरित्र सो बूझै भाई ❀ जासु हृदय निज नाम सहाई ॥
 आपनअंश निरञ्जन कीन्हा ❀ रम्भ कुरंभजय विजयी चीन्हा ॥
 चारिहु से अस कहा बुझाई ❀ कहि कबीर मरवावहु जाई ॥
 जानि कबीर तहाँ जिवऐहै ❀ यही युक्ति जीवन धरि खैहै ॥
 चारिहु चारि भाव धरि जाहु ❀ ऊँच नीच छाँड़हु जनि काहु ॥
 अस कहि फानफनहु तुम भाई ❀ तेहिते मोर अहार न जाई ॥
 अस छल कीन काल अन्याई ❀ धर्मदास चित चेतहु भाई ॥
 यमकर छल बलतोहिं देखावों ❀ अगिल हंसन बाट चिन्हावों ॥
 धर्मदास कहै सुनहु गोसाई ❀ मोरे चित संशय यह आई ॥
 मोहिं प्रताप तुम्हारो आहीं ❀ यम के फन्द परब हम नाहीं ॥
 जीव काज बदि पूँछों तोहीं ❀ यम के चरित सुनावहु मोहीं ॥
 चारि दूत कर वेष बनाऊ ❀ कहो चीन्ह ताको परभाऊ ॥
 कौन देश वै प्रकटहिं आई ❀ हे साहेब मोहिं कहो बुझाई ॥
 सुनु धर्मणि यम चीन्ह बतावों ❀ चारो यम को चरित सुनावों ॥
 रम्भ दूत को करों बखाना ❀ कालिञ्जर वह रोपिहै थाना ॥
 भगवत भक्त नाम धरवैहै ❀ बहुतक जीव काल अपनैहै ॥
 जो जियरा द्वैहै अंकूरी ❀ सो भजिहै यम फन्दा तूरी ॥
 रम्भ जोरावर यम बड़ द्रोही ❀ तुमहिं खंडि पुनि खंडिहिमोही ॥
 खंडिहि लोक द्वीप सब झारी ❀ आरति नरियर चौका झारी ॥
 ज्ञान ग्रंथ औ खंडिहि बीरा ❀ थकिहि रमैनि काल गम्भीरा ॥
 चारो धार थकिहि असरारा ❀ मोर नाम लै करि पैसारा ॥
 आपुहि आप कबीर कहैहैं ❀ पञ्चतत्त्व बश मोहिं ठहरैहैं ॥
 थपिहैं जीवहि पुरुष समाना ❀ खंडहि पुरुषहि जीव जलाना ॥
 हंस कबीर इष्ट ठहराई ❀ करताहु कबीर गोहराई ॥
 करता काल जिवन्ह दुखदाई ❀ तेहि सरीख मोहिं कहि यमराई ॥
 कर्मी जिवहि पुरुष ठहराईहि ❀ पुरुषहि गोइ आपु प्रकटाईहि ॥

जो यह जीव आपुही होई ❀ नानादुख किमि भुक्तै सोई ॥
 पाँचतत्त्व बश जीव दुखावै ❀ जीव पुरुष कहँ सम ठहरावै ॥
 अजरअमरसत पुरुष कि काया ❀ कला अनन्त निरूपनि छाया ॥
 अस यमदूत खंडि दै चाही ❀ थापै जिवहि पुरुष यह आही ॥
 तिल सागर भारी निज देखी ❀ धोख गहै निःअक्षर लेखी ॥
 बिन दर्पण दरशै निज रूपा ❀ धर्मणि यह गुरुगम्य अनूपा ॥

छंद—अस काल पर्वल सुनहु धर्मणि करिहि छलमत आई कै ।

मम शब्द दीपक गहै दृढ़ मैं कहौ तोहिं चेताइ कै ॥

अंश बंशहि तुम चितै हौ शब्द के सहिदानते ।

परखि शब्दहि यमहि चीन्है रहो दृढ़ गुरुज्ञानते ॥५६॥

सो०—चित चेतहु भ्रमदास, यमराजा अस छल करहिं ।

गहि रहो दृढ़ विश्वास, हंसन शब्द चेताइहो ॥५६॥

चौपाई ।

रम्भकथातोहिं कहिसमुझावा ❀ अब परिखहु कूरमके भावा ॥
 मगध देश वह प्रकटिहि भाई ❀ धनीदास वह नाम धराई ॥
 ज्ञानी जीवन्ह कहँ भटकैहै ❀ कूर्म दूत बहु जालखिडैहै ॥
 पुष्ट ज्ञान गुरु दाव लगैहै ❀ यहि बिधि जीवन कहँ भरमैहै ॥
 कूर्मदूत नहिं पैहै तोही ❀ नाम प्रताप जाहि हिय सोही ॥
 जो जिव कूर्म को ज्ञान भुलोई ❀ धोखा दै यम ताहि बिगोई ॥
 हे साहब मोहिं कहो बुझाई ❀ कबन ज्ञान वह कथिहै आई ॥
 धर्मणि सुनहु कर्म की बाजी ❀ कथि टकसार फंद दृढ़ साजी ॥
 चन्द्र सूर्य ततु लगन पसारा ❀ राहु केतु कथिहै अस रारा ॥
 पाँच तत्त्व मतसार बखानी ❀ जीव अचेत भर्म नहिं मानी ॥
 ज्योतिष मत टकसार पसरिहै ❀ ग्रह गोचर बश प्रभुहिं बिसरिहै ॥
 तीर पवन कहि कथिहै ज्ञाना ❀ पवन पवन को नाम बखाना ॥
 आरति चौका बहु अरथैहै ❀ धोख जीवन दै भरमैहै ॥

करि जहँ शूद्र शिष्यको लेखा ❀ अंग अंग कै निरखहिं रेखा ॥
 नखशिख सकल निरखिहैं भाई ❀ निरखि देहि जिव कर्म लखाई ॥
 कर्मज लाय जिवन भरमैहैं ❀ कनक दक्षिणा सो नर पैहैं ॥
 गठिबन्धन करिहैं यम चेरा ❀ कर्मजराय भाँवरी फेरा ॥
 पवन पचासि कालकी आही ❀ लोक कर्म सो ताहि बताही ॥
 पवन नाम लिखि प्राण खवैहैं ❀ पवन सृष्टि मत जगत चलैहैं ॥
 जाहिखानि कै जो जिव ऐहैं ❀ तेहि तस पवन पान विलगैहैं ॥
 नीर पवन कथि करै पसारा ❀ पवन नाम गृह आरति बारा ॥
 पवन पचासि केरि अनुहारी ❀ आरति चौका करहिं बिचारी ॥
 क्या नारी क्या पुरुषरे भाई ❀ तिल माशा निरखहिं सब ठाई ॥
 शङ्ख चक्र औसिप कर धरिहैं ❀ नख शिख रेखा सबै परखिहैं ॥
 जौन काल दुर्मति सँग लाई ❀ जीवन दै संशय उपजाई ॥
 संशय जाइ गसिहैं काला ❀ करिहैं जीवन बहुत बिहाला ॥
 शिखनशेन रेखा अरपाइहि ❀ धोखा पारस दै भरमाइहि ॥
 औरौ सुनो तासु व्यवहारा ❀ जस कछु कथिहै काल लबारा ॥
 साठि समै बारह चौपाई ❀ दिहैं उठाइ भर्म उपजाई ॥
 पञ्चाअमी अकोतर नामा ❀ सुमिरण सार शब्द गुणधामा ॥
 जिव का द्रव्यजदे कछु भाखा ❀ ता महँकाल धोख अति राखा ॥
 पाँचो तत्त्व केर उपचारा ❀ कथिहैं इहै मता है सारा ॥
 पांच तत्त्व प्रकृति पञ्चीशा ❀ तीनों गुण चौदह यम ईशा ॥
 यहि फन्दे जिव फन्दा भाई ❀ सत्य नाम को सुधि बिसराई ॥
 तन धरि सुरति तत्त्व महँ लाई ❀ तन छूटे कहु कहाँ समाई ॥
 जहँ आशा तहँ बाशा पावै ❀ तत्त्वमगे गमि तत्त्व समावै ॥
 सुमिरण ध्यान विदेह छुड़ाई ❀ राखहिं तत्त्वअंश अरुआई ॥
 धर्मणि कहँलगि करौं बखाना ❀ कोउन समुझत कालबिताना ॥
 पाँचों तत्त्व काल को अंगा ❀ नाम के मते काल को भंगा ॥

छंद—सुनहु धर्मणि काल बाजी करिहि बहुत फनावली ।
 अमित जीवन लै गरासिहि काल कर्म को भावली ॥
 जीवनि रखै शब्द मम सो निसरिहै यम फन्द ते ।
 गहे नाम अमोल अबिचल जांय लोक अनन्दते ॥ ५७ ॥
 सो०—पुरुष शब्द है सार, सुमिरण अमी अमोल गुण ।
 सो होई भव पार, मन बच क्रम जे दृढ़ गहैं ॥ ६० ॥

चोपाई ।

रम्भ कूर्म दुइ कह्यो बखानी ❀ अब परखहु तुम जयकी बानी ॥
 यह यमदूत कठिन असरारा ❀ मूल मूल वह कथिहि लबारा ॥
 गांव भुरुकुड़ी प्रकटिहि आई ❀ गढ़ बाँधो के निकटहि भाई ॥
 कुल चमार के सो प्रकटिहै ❀ ऊँचे कुलन जाति धरिखइहै ॥
 साहब दास कहैहैं दूता ❀ गणपति है ताकर जिन पूता ॥
 दोऊ काल स्वल्प दुखदाई ❀ तोर बंश वह दुखिहैं आई ॥
 कथिहैं मूल है हमरे पासा ❀ तोहिं उठाइ दिहैं भ्रमदासा ॥
 अनुभव कथि वह ग्रन्थ बनाई ❀ ज्ञानी पुरुष समान सुनाई ॥
 कथिहै मूलपुरुष मोहिं दीन्हा ❀ धर्मदास निज मूल न चीन्हा ॥
 अस वह काल जोरावर होई ❀ दै भरमाय बंश कहँ सोई ॥
 बंशहि निज मति देइ सिखाई ❀ पारस थाका मूल चलाई ॥
 मूल छाप दै बंश बिगोई ❀ पारस दहै काल मत सोई ॥
 भंगहंग वह कथिहै भाई ❀ काँचे जीवहि देइ भुलाई ॥
 जाहि नीरसे काया होई ❀ थपिहै काल मूल निज सोई ॥
 काया मूल बीज है कामा ❀ रखिहैं ताकर गुप्त नामा ॥
 प्रथमै थापि गुप्त ही रखिहैं ❀ शिष्यहि साधिसन्धितब भखिहैं ॥
 नारि अंग कहँ पारस देही ❀ आज्ञा मानि शिष्य तब लेही ॥
 प्रथमहि ज्ञान शब्द समुझैहैं ❀ तेहि पाछे फिरि मूल पियैहैं ॥
 नरक खानि तेहि मूल बखानी ❀ यम पालक अस छलमतठानी ॥

भूँभरि दीप कथिहैं अरथाई ❀ भूंगनाल को ध्यान धराई ॥
 अनहद बाजा यम को थाना ❀ पाँचौ तत्त्व करै घमसाना ॥
 पाँचौ तत्त्व गुफा महुँ जाई ❀ नाना रंग करैं तहुँ भाई ॥
 पाँचौ तत्त्व करैं औ जारी ❀ उठिहै भूंग गुफा महुँ भारी ॥
 जबहीं सोहं जिवतन छाड़ै ❀ तबकहो भूंगकवनिविधि आड़ै ॥
 भूँभरि दीप काल रचिराखा ❀ भूंगहंग दोउ यम को शाखा ॥
 कथहि अबीहर काल अन्याई ❀ अबिहर शेष काल को भाई ॥
 आरति चौका कथहि अपारा ❀ द्वैहैं तासु बहुत कडहारा ॥
 कालके नांव परसजेहि बीरा ❀ परखहु धर्मदास मति धीरा ॥
 ठाम ठाम घटि काम करैहैं ❀ मोर नाम लै मोहिं हँसैहैं ॥
 जनिहैं जगसबइहिबिधिआही ❀ बुझिहैं भेद भेद तब जाही ॥
 कहँलगि कहौ कालको टेका ❀ ज्ञानी होइ सो करें बिवेका ॥

छंद-ज्ञान दीपक जाहि हियसों चीन्हि हैं यमराय हो ।

जे तजा काल जँजाल हंसा धाड़ै निज काज हो ॥

रहनि गहनि बिबेक बानी परखि हैं जन जौहरी ।

गहै सार असार परिहरि गिरा मम जेहि पहुँ परी ॥ ५८ ॥

सो०-कहकबीर भ्रमदास, लेहु जानि यमछल मतो ।

हंसनकहँ परकास, जाते यम रोकै नहीं ॥ ६१ ॥

चोपाई ।

धर्मणि तुम वश और न आना ❀ चीन्हीं नाहिं काल सहिदाना ॥

छेदि मूल बंशान महुँ लगिहैं ❀ ओ टकसार धोखते पगिहैं ॥

मम सुचाल सब बंश उठैहैं ❀ तिहि टकसार भेद अरुमैहैं ॥

नाद पुत्र सों न्यारे रहिहैं ❀ मम बानी दृढ़ कै ते गहिहैं ॥

जा गुरु अंश हमारो आही ❀ कालधोख नहिं लगिहै ताही ॥

रहहि उजागर शब्द अधारा ❀ रहनिगहनि गुरुज्ञान बिचारा ॥

अब तुम सुनो विजय को भाऊ ❀ एक एक तोहिं बरणि सुनाऊ ॥
 खण्ड बुँ देलहि प्रकटिहि आई ❀ ज्ञानि जीव सो नाम धराई ॥
 सखी भाव सों भक्ति ददैं है ❀ रासरचिहि औ मुरलि बजै है ॥
 सखी अनेक संग लै आई ❀ आपुहि दूसर कृष्ण कहाई ॥
 धोखा दै जीवन कहँ सोई ❀ बिनु परिचै कछु जनिहै लोई ॥
 चक्षु अग्र रहु मन की छाया ❀ नासा अर्द्ध अकाश बनाया ॥
 फूहि परें धोखा मन केरा ❀ श्याम श्वेत चितरंग चितेरा ॥
 क्षण क्षण चञ्चल स्थिर नाही ❀ चर्मदृष्टि सो देखिय ताही ॥
 मन की छाया काल ददावै ❀ मुक्ति मूल काया ठहरावै ॥
 धर्मणि तोहिं कहों समुझाई ❀ अस चरित्र करिहैं यमराई ॥
 चारों दूत करहिं घनघोरा ❀ यहि विधि जिवन चोरावै चोरा ॥
 दीपक ज्ञान धरो दृढ़ बारी ❀ जासों काल न करे उजारी ॥
 इन्द्रमती कहँ प्रथम चेतावा ❀ भइ सचेत तिहि काल न पावा ॥
 जस कछु आगे है है भाई ❀ सो चरित्र सब कहो बुझाई ॥
 जब तक तुम रहिहो तन माहीं ❀ तब लगि काल प्रकटिहै नाहीं ॥
 तब लों रहिहि ध्यान बकलाई ❀ जब तन तजहु काल तब आई ॥
 छेकिहि बिन्द बंश कहँ भाई ❀ धोखे काल बंश अरुभाई ॥
 बहु कडहार बंश को नादा ❀ पारस बंश तिनहुँ विष स्वादा ॥
 छेदिहि मूल और टकसारा ❀ होइ खँभीर बंश महँ भारा ॥
 बंशहि एक धोख बड़ है है ❀ हंग दूत तेहि हृदय समै है ॥
 आज्ञा हंग अधिक है ताही ❀ आपुस महँ सो भगर कराही ॥
 दास चुरामणि की औलादी ❀ चाली बहुत अधिक बकबादी ॥
 जैसे बक माया लै ऐहै ❀ अधिक ताहिसों प्रेम बढ़ै है ॥
 द्रव्यहीन जो सेवक होई ❀ ताकहँ भाव न दैहैं सोई ॥
 दास नरायण के सुत आही ❀ कछुक शब्द की चाल समाही ॥
 बिंदुसुभाव आश घन छोड़ै ❀ मन मत आपा दोनों भोड़ै ॥

अंश मोर जो पंथ चलैहैं ❀ ताहि देखि सो रारि बदैहैं ॥
 ताकर चाल देखि नहिं सकिहैं ❀ बंश ग्रंथ अनुभव कथि रखिहैं ॥
 दान पुत्र की निन्दा करिहैं ❀ निजसम नहिंकोइ औरहिं गनिहैं ॥
 पढ़िहैं ताहि बंश कडहारा ❀ ताहू है वह बहुत हँकारा ॥
 स्वारथ आपा चीन्हि न पैहैं ❀ जीव अनेकन कहँ भटकैहैं ॥
 ताते तोहिं कहों समुझाई ❀ अपने बंशहि कहो चेताई ॥
 नादपुत्र जे प्रकटा होई ❀ ताकहँ मिलै प्रेम लै सोई ॥
 तुमहूँ नादपुत्र मम आही ❀ यह समझावहु धर्मणि ताही ॥
 सुतकमाल जे मृतक जियावा ❀ ताके घट यमदूत समावा ॥
 पिता जानि तिन आसँधकीन्हा ❀ तबहम थापि तोहिं कहँ दीन्हा ॥
 हम हैं प्रेमभक्ति के साथी ❀ चाहैं नाहिं तुरंग धन हाथी ॥
 प्रेम हेतुसे जो मोहिं गैहैं ❀ सो हंसा मोरे मन भैहैं ॥
 हङ्कारहि जैहैं दोउ राजी ❀ ते थापिहि पण्डित औ काजी ॥
 देखि अधीन थापि तुहि दीन्हा ❀ जब देखा तोहि प्रेम अधीन्हा ॥
 ताते धर्मणि मानु सिखाई ❀ हंसहि थाती सो पहुँचाई ॥
 नाद पुत्र कहँ सौँपिहि सोई ❀ पंथ उजागर तासों होई ॥
 बंश करिहि सोही के बहूता ❀ हम हैं धर्मदास कुल पूता ॥
 जहाँ हंग तहँवाँ हम नाहीं ❀ धर्मणि शोचि देखु मन माहीं ॥

धर्मदासबचन ।

हे प्रभु मैं तुव दास अधीना ❀ तुव आज्ञा से कबहुँ न भीना ॥
 हो मोहिं थाती सौँप्यो स्वामी ❀ बंश तरै मोर अन्तर्यामी ॥
 धर्मदास ते है तुव बंशा ❀ याहि बात तुव छाँड़हु संशा ॥
 नामभक्ति जे जिव दृढ़करिहैं ❀ सुनु धर्मणि सो कस नहि तरिहैं ॥

छंद—नाम अमिय अमोल अविचल अंकबीरा पावई ।

तजि काग चाली विमल पथ गहि गुरु चरण लौ लावई ॥

और मार्ग अपन्थ है गुरु प्रीति सुपथ बतावई ।

प्रीति चहुँ युग सुपथ धर्मणि हंस लोक सिधावई ॥ ५६ ॥

सो०—गुरु पद कीजै नेह, कर्म भर्म जंजाल तजि ।

निज मत जानै येह, गुरु शब्द विश्वास दृढ़ ॥ ६२ ॥

चौपाई ।

बिनुविश्वास जीव नहि तरई ❀ गुरु प्रतीत बिनु कोटिन करई ॥
 गुरुसम और दानि नहिं भाई ❀ गुरु चरणन चित राखु समाई ॥
 ज्ञान अंग गुरु कहि समुझावै ❀ सार असार परखि समुझावै ॥
 अधम चालि सब देहि छुड़ाई ❀ हंस दशा की भक्ति दृढ़ाई ॥
 नाम पान दै मुक्ति सँदेशा ❀ सुमिरन ज्ञान ध्यान परवेशा ॥
 शत्रु मित्र सब देहि चिन्हवाई ❀ यम सों लेहि जीव मुकुताई ॥
 अस जिव काल दुर्मती आही ❀ गुरु प्रतीत नहिं हृदय समाही ॥
 सरगुन भाव पेखु भ्रमदासा ❀ प्रकृति दुहू नाम के आसा ॥
 कस दृढ़ गहै प्रीति दृढ़ताई ❀ नाम प्रताप मुक्ति गति पाई ॥
 आपुहि नर लै आवै माटी ❀ करता की मूरति गढ़ि ठाटी ॥
 तापर अक्षत पुहुप चढ़ावै ❀ प्रेम प्रतीत ध्यान मन लावै ॥
 कान्ति करी पुनि थापहिं ताहीं ❀ भंग प्रतीत होइ नहिं वाही ॥
 जस धोखे में प्रबल बसावै ❀ सोई जीव प्रेम सर लावै ॥
 ते जिव होय अमोल अपारा ❀ साहेब कहँ है हंस पियारा ॥
 वोही उनकर प्रेम बखाना ❀ कृश दिल है धोखे लपटाना ॥
 गुरु नाम है आप कहावा ❀ गुरु पुरुष नहिं भिन्न बतावा ॥
 अस जिव काल वश्य है रहई ❀ दृढ़प्रतीत नहिं गुरु कहँ गहई ॥
 सरजिव मूरति प्रतीत न आवै ❀ शून्य ध्यान धोखा मन लावै ॥
 जो जिव सबल गुरु व्रत धारी ❀ मुक्ति होय टारे नहिं टारी ॥
 अस जो जिव विश्वास दृढ़ावै ❀ गुरु तजिचित्त अनत नहिं ध्यावै ॥
 यहि रहनी को हंस अमोला ❀ प्रेम रंग जो रंगै चोला ॥

प्रेम नेम हिय शुद्ध गिरा गुरु ❀ अँचवत होत खानि दुर्मति दुरु ॥
धर्मदास हिय देखु बिचारी ❀ गुरु प्रतीत दृढ़ गहो सुधारी ॥

छंद—कै प्रतीत दृढ़ाय सतगुरु नेह अस्थिर लाइये ।

गुरु ज्ञान दीपक वारि निज उर सत्य नामहिं गाइये ॥

गुरु प्रताप प्रकाश ते अघपुंज निश्चय नाशई ।

मम गिरा विश्वास करि यह दास जो मन आनई ॥ ६० ॥

सो०—हे यह अगम अथाह, नाम शब्द दृढ़ कै गहै ।

लहै कृपा गुरु थाह, गुरु गिरा कडहार मिलि ॥ ६१ ॥

धर्मदास वचन—चोपाई ।

हे प्रभु तुम सुखसागर दाता ❀ मोहिं किङ्कर कहँकीन सनाथा ॥

हे प्रभु जब लगि तुम्हें न चीन्हा ❀ मन ते तब लगि रहूँ न भीना ॥

जब ते तुम आपन कै जाना ❀ तब ते मोहिं भयो दृढ़ज्ञाना ॥

अब नाहीं दुतिया मोहिं साँई ❀ निश्चय गह्यो चरण तुव आई ॥

जो मोहिं तुम तजि आनकि आसा ❀ तो मोहिं होउ नरक महँ बासा ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मणि तुम मोहिं निश्चय चीन्हा ❀ अब हम तुहिं सों होब न भीना ॥

जब शिष हृदय मुकुर मल नाहीं ❀ गुरु स्वरूप तब हृदय समाहीं ॥

जब शिष निज हिय गुरु पद राखा ❀ मेटै तबहिं काल को शाखा ॥

जौ लौं सात पांच की आसा ❀ तौ लौं गुरु नहिं निरखै दासा ॥

एक तत्त्व शिष गुरु पद लागै ❀ छूटै मोह ज्ञान तब जागै ॥

दीपक ज्ञान हिये जब आवा ❀ मोह भर्म तब सबे नशावा ॥

तिमिर मोह भ्रम जबहिं नशाना ❀ तब पुनि आप आप पहिंचाना ॥

आपुहि आप उलटि जब हेरा ❀ बुन्द सिन्धु को भया निवेरा ॥

सिन्धुहि बुन्द समाना जाई ❀ कहैं कबीर मिटो दुचिताई ॥

धर्मणि यह गुरु पद परतापा ❀ गुरु पद गहियत जिय मद आपा ॥

जाहि गहे सब दुःख नशाई ❀ बिन गुरु सिद्धि न काहू पाई ॥

छंद—मन कर्म नाना भावना महँ जगत यह लपटानेऊ ।

यम जिवन भ्रमजाल डारयो उलटि निजहि न जानेऊ ॥

बहुत हैं संसार में गुरु फंद कृत्रिम जाल हो ।

गुरु बिना नहिं भर्म मेटै अति अपर्बल काल हो ॥६१॥

सो०—सतगुरु को बलिहार, अजर सँदेशा जे कहैं ।

ते न परैं भवधार, जे कृत्रिमहि न ध्यावहीं ॥६४॥

चौपाई ।

धर्मदास निःसंशय रहहू ❀ मुक्ति सँदेश जिवन से कहहू ॥

देखेहु जाय बहुत लौ लीन्हा ❀ कहिहौ ताहि मुक्ति पथ चीन्हा ॥

दयाशील क्षमा सत जाही ❀ धर्मणि नाम पान देहु ताही ॥

ताकहँ पुरुष सँदेशा कहिहैं ❀ निशिदिननाम ध्यान दृढ़ गहिहैं ॥

दयाहीन जे शब्द न मानै ❀ काल दिशा द्वै बाद बखानै ॥

तेहिजनिदेहु पुरुष सहिदानी ❀ वह जिव करिहैं पंथ कि हानी ॥

काया-विचार धर्मदास वचन ।

हे प्रभु जन्म सफल मम कीन्हा ❀ यम सों छोरि अभय करि लीन्हा ॥

जो शत सहस नाम मुख होई ❀ तब तुव गुण बरणै नहिं कोई ॥

हे प्रभु हम बड़ भागी आहीं ❀ निजसम भाग्य कहौं मैं काहीं ॥

सोई जिव बड़ भागी होई ❀ जासु हृदय तुम नाम समोई ॥

यह विनती प्रभु सुनहु हमारी ❀ यह तन निर्णय कहो बिचारी ॥

कवन देव कहु कहँवाँ रहई ❀ नारी रोम रुधिर कत अहई ॥

जासु ठाम है जाकर थाना ❀ साहेब बरणि कहो सहिदाना ॥

रेनि दिवस कहु केतिक श्वासा ❀ कवन के बल कत जप परकासा ॥

कहवां ते वह शब्द उठाई ❀ कहौ कहां यह जाय समाई ॥

आँत पीत फकसा अरु भोरी ❀ साहेब कहो बिचारि बहोरी ॥

प्रेम नेम हिय शुद्ध गिरा गुरु ❀ अँचवत होत खानि दुर्मति दुरु ॥
धर्मदास हिय देखु बिचारी ❀ गुरु प्रतीत दृढ़ गहो सुधारी ॥

छंद—कै प्रतीत दृढ़ाय सतगुरु नेह अस्थिर लाइये ।

गुरु ज्ञान दीपक वारि निज उर सत्य नामहिं गाइये ॥

गुरु प्रताप प्रकाश ते अघपुंज निश्चय नाशई ।

मम गिरा विश्वास करि यह दास जो मन आनई ॥ ६० ॥

सो०—है यह अगम अथाह, नाम शब्द दृढ़ कै गहै ।

लहै कृपा गुरु थाह, गुरु गिरा कडहार मिलि ॥ ६१ ॥

धर्मदास वचन—चोपाई ।

हे प्रभु तुम सुखसागर दाता ❀ मोहिं किङ्कर कहँकीन सनाथा ॥

हे प्रभु जब लगि तुम्हें न चीन्हा ❀ मन ते तब लगि रहूँ न भीना ॥

जब ते तुम आपन कै जाना ❀ तब ते मोहिं भयो दृढ़ज्ञाना ॥

अब नाहीं दुतिया मोहिं साँई ❀ निश्चय गह्यो चरण तुव आई ॥

जो मोहिं तुम तजि आनकि आसा ❀ तो मोहिं होउ नरक महँ बासा ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मणि तुम मोहिं निश्चय चीन्हा ❀ अब हम तुहिं सों होब न भीना ॥

जब शिष हृदय मुकुर मल नाहीं ❀ गुरु स्वरूप तब हृदय समाहीं ॥

जब शिष निज हिय गुरु पद राखा ❀ मेटै तबहिं काल को शाखा ॥

जौ लौं सात पांच की आसा ❀ तौ लौं गुरु नहिं निरखै दासा ॥

एक तत्त्व शिष गुरु पद लागै ❀ छूटै मोह ज्ञान तब जागै ॥

दीपक ज्ञान हिये जब आवा ❀ मोह भर्म तब सबे नशावा ॥

तिमिर मोह भ्रम जबहिं नशाना ❀ तब पुनि आप आप पहिंचाना ॥

आपुहि आप उलटि जब हेरा ❀ बुन्द सिन्धु को भया निवेरा ॥

सिन्धुहि बुन्द समाना जाई ❀ कहँ कबीर मिटो दुचिताई ॥

धर्मणि यह गुरु पद परतापा ❀ गुरु पद गहियत जिय मद आपा ॥

जाहि गहे सब दुःख नशाई ❀ बिन गुरु सिद्धि न काहू पाई ॥

छंद—मन कर्म नाना भावना महुँ जगत यह लपटानेऊ ।
 यम जिवन भ्रमजाल डारयो उलटि निजहि न जानेऊ ॥
 बहुत हैं संसार में गुरु फंद कृत्रिम जाल हो ।
 गुरु बिना नहिं भर्म मेटै अति अपर्बल काल हो ॥६१॥

सो०—सतगुरु को बलिहार, अजर सँदेशा जे कहैं ।
 ते न परैं भवधार, जे कृत्रिमहि न ध्यावहीं ॥६४॥

चौपाई ।

धर्मदास निःसंशय रहहु ❀ मुक्ति सँदेश जिवन से कहहु ॥
 देखेहु जाय बहुत लौ लीन्हा ❀ कहिहौ ताहि मुक्ति पथचीन्हा ॥
 दयाशील क्षमा सत जाही ❀ धर्मणि नाम पान देहु ताही ॥
 ताकहँ पुरुष सँदेशा कहिहैं ❀ निशिदिननाम ध्यानदृढ़गहिहैं ॥
 दयाहीन जे शब्द न मानै ❀ काल दिशा है बाद बखानै ॥
 तेहिजनिदेहु पुरुष सहिदानी ❀ वह जिव करिहैं पंथ कि हानी ॥

काया-विचार धर्मदास वचन ।

हे प्रभु जन्म सफल मम कीन्हा ❀ यम सों छोरि अभय करिलीन्हा ॥
 जो शत सहस नाम मुख होई ❀ तब तुव गुण बरणै नहिं कोई ॥
 हे प्रभु हम बड़ भागी आहीं ❀ निजसम भाग्य कहौं मैं काहीं ॥
 सोई जिव बड़ भागी होई ❀ जासु हृदय तुम नाम समोई ॥
 यह विनती प्रभु सुनहु हमारी ❀ यह तन निर्णय कहो बिचारी ॥
 कवन देव कहु कहँवाँ रहई ❀ नारी रोम रुधिर कत अहई ॥
 जासु ठाम है जाकर थाना ❀ साहेब बरणि कहो सहिदाना ॥
 रैन दिवस कहु केतिक श्वासा ❀ कवन के बलकत जपपरकासा ॥
 कहवां ते वह शब्द उठाई ❀ कहौ कहां यह जाय समाई ॥
 आँत पीत फकसा अरु भोरी ❀ साहेब कहो बिचारि बहोरी ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मणिसुनहु शरीर बिचारा ❀ पुरुष भेद काया ते न्यारा ॥
 प्रथमहिं मूल कमल दल चारी ❀ रह गणेश तेहि देश मँभारी ॥
 मिथ्या गुणदायक तेहि कहिये ❀ तिनके ध्यान यही फल लहिये ॥
 मूल कमल के ऊर्ध्व अपारा ❀ अष्ट पत्र को कमल बिचारा ॥
 ब्रह्मा सावित्री तहँ सुरपति ❀ षटसहस्रअजपा जप नितप्रति ॥
 पद्म अष्ट दल नाभि स्थाना ❀ हरिलक्ष्मी तहँ बसहिं प्रधाना ॥
 यज्ञ तहाँ षट सहस सुहेला ❀ गुरु गमि ते कोइलखिहँ चेला ॥
 नाम ऊर्ध्व पङ्कज दल बारह ❀ रुद्र सरस्वति तहँ कमला रह ॥
 षट सहस्र अजपा तहँ होई ❀ गुरु गमि ज्ञानी लेहु बिलोई ॥
 षोडश पत्र पद्म जिव रहई ❀ सहस एक अजपा तहँ लहई ॥
 भवँर गुप दल दुर परमाना ❀ तहँवाँ मन राजा कर थाना ॥
 सहस एक अजपा तेहि ठाँई ❀ धर्मदास परिखहु चितलाई ॥
 सुरति कमल सतगुरु कै बासा ❀ तहँ एतिक अजपा परकासा ॥
 एक सहस षट शत औबीसा ❀ परिखहु धर्मणि हंसन ईसा ॥
 दुइदल ऊर्ध्व शून्यअस्थाना ❀ झिलिमिलिज्योतिनिरञ्जनजाना ॥

मन का व्यवहार ।

धर्मणि यह मन को व्यवहारा ❀ गुरुगमि ते परिखहु मत सारा ॥
 मनही शून्य ज्योति देखलावै ❀ नाना भर्म मनै उपजावै ॥
 निराकार मन दूजा नाही ❀ मन की माड तिहूँ पुर आही ॥
 छवो चक्र मणिजीवनकहिये ❀ सतगुरुमिलहिअगमतबलहिये ॥
 विविध ठाम सो जीवमथावै ❀ आपु न चीन्हें धोखे धावै ॥
 यह सब देव निरञ्जन अंशा ❀ सत्य नाम बिन मिटै न संशा ॥
 जस नट मर्कट कहँ दुख देई ❀ नाना नाच नचावै लेई ॥
 या विधि यह मन जीव नचावै ❀ कर्म भर्म भव फन्द दढावै ॥

सत्य शब्द मन देइ उछेदी ❀ मन चीन्हैं कोइ विरला भेदी ॥
 पुरुष सँदेश सुनत मन दहई ❀ अपनी दिशि जीवहि लैं बहई ॥
 सुनु धर्मणि मन को ब्योहारा ❀ मनक्रम चीन्हि गहो पदसारा ॥
 यहि तनतजिरहु और न कोई ❀ मन औ जीव रहैं सँग दोई ॥
 पाँच पचीस रहै निति भेला ❀ देवशबदै निरञ्जन चेला ॥
 पुरुष अंश जिव आइ समाना ❀ भूली सुधि निज घर सहिदाना ॥
 इन सब मिलिकैं जीवहि घेरा ❀ बिनु परचैजिव यम को चेरा ॥
 धर्म बश्य जिव आपन जानै ❀ जिव सोना ललनी फन्दानै ॥
 जिमि केहरि छाया जल देखै ❀ निज छाया जिमि दीपक पेखै ॥
 धाय परै जल प्राण गँवावै ❀ अस जिय धोखा चीन्हि न पावै ॥
 काँचमहलजिमि बोलै श्वाना ❀ निज अकार दुतिया कै जाना ॥
 दुतिय अवाज उठै तहँ भाई ❀ भूँकत श्वान देह तजु जाई ॥
 अस जिव धोखे लागहिं धाई ❀ ग्रासहि काल तबहिं पछिताई ॥
 सतगुरु शब्द प्रतीत न करई ❀ सतगुरु मिलिनीघर संचरई ॥
 सतगुरु से सब नाम दृढ़ावै ❀ नाम प्रताप काल नहिं पावै ॥
 कृत्रिम नाम निरञ्जन शाखा ❀ आदिनाम सतगुरु अभिलाखा ॥
 धर्मणि जिय सब भये बेगाने ❀ धोखे सुधा गरल लपटाने ॥
 अस कै फन्द रचा भ्रमराई ❀ भर्म बश्य जिव परा भुलाई ॥
 और सुनो मन कर्म पसारा ❀ चीन्हि दुष्ट जिवहोहिं नियारा ॥

छंद-अरि चीन्हिहोरहभिन्न धर्मणि गिरामम दीपक धरै ।

भिन्नदेवतहिं भाव जेहि नहिं तिनहिं यम जानौ परै ॥

गढ़ माहँ गढ़पति जागई नहिं सन्धि पावै तस्करा ।

जे रहत गाफिल भर्म वश नर तहाँ तस फल संचरा ॥ ६२ ॥

सो० जाग्रत कला अनूप, तहाँ दाँव पावै नहीं ।

भर्मि तिमिर अँधकूप, छल करि यम जीवन धरै ॥ ६५ ॥

चौपाई ।

मन को फन्द सुनो जन शूरा ❀ चोर शाह परिखहु गुरुपूरा ॥
 यहमन आहिकाल कोतवाला ❀ जिवन नचावै करै बिहाला ॥
 सुन्दरि नारि दृष्टि जब आवै ❀ मन उमंगि तन काम जगावै ॥
 प्रथम जीव परमान जे गावै ❀ कहै मनहिं को पाप कमावै ॥
 पुनि मन कहै जिवहिभरमाई ❀ इन्द्रिहि भोग देहु तुम भाई ॥
 भाइ जोर मन लै तेहि धाये ❀ ज्ञान हीन जीवन भटकाये ॥
 नारि भोग इन्द्री रस लीन्हा ❀ तापर पाप जीव शिर दीन्हा ॥
 द्रव्य पराय देखि मन हरषा ❀ कहैं लेहु अस व्यापै तिरषा ॥
 द्रव्य पराय अनीति सो आनै ❀ ताकर पाप जिवहि लै ठानै ॥
 मन को सखा भोगकर माया ❀ लेखा पाप पुण्य जिव लाया ॥
 कर्म कमावै यह मन चोरा ❀ शासति होय जीव को भोरा ॥
 जहँल गि अकरम अघपथ भारी ❀ सो सब याहि मनहिं की बारी ॥
 पर निन्दा पर द्रव्य गरासी ❀ सो सब आहि मनहिं की फांसी ॥
 सन्त द्रोह अरु गुरु की निन्दा ❀ यह मन करम कालमतिमन्दा ॥
 होय विरक्त तजहिं भग नाही ❀ जानिबूझि भगनरक भोगाहीं ॥
 गृही होय परनारी जोवै ❀ यह मन कर्म अन्ध बिष बौवै ॥
 जीव घात मन उमंगि करावै ❀ ताहि पाप जिव नरक भोगावै ॥
 तीरथ व्रत देवल औ देवा ❀ यह मन धोख लगावै सेवा ॥
 दाग द्वारका मनै दिआवै ❀ दाग दिवाय जिवहि बगरावै ॥
 एक जन्म राजा कै होई ❀ बहुरि नरक पुनि भुक्तै सोई ॥
 कर्म योग है मन को फन्दा ❀ है निहकर्म मिटै दुख द्रन्दा ॥

छंद—धर्मणि सुनो मन भावना कहँ लगि कहौं निरुवारिकै ।

देव तैंतिस कोटि फन्दे शेष सुर रहु हारि कै ॥

गुरु बिना जन लखि न पावै परे करता जाल ही ।

बिरल सन्त विवेक गावै चीन्हि छोड़्यो काल ही ॥ ६३ ॥

सो०-हंसराज भ्रमदास, तुम सतगुरु महिमा लही ।

करहुपन्थ परकास, अजर सनेसा तुहि दियो ॥ ६६ ॥

धर्मदास वचन चौपाई ।

मन को अंग जानि हम पावा ❀ धनिसतगुरुमोहिं आनिजगावा ॥
 अब भाषहु प्रभु आपनि डोरी ❀ कवनि रहनिमिलितृणयमतोरी ॥
 धर्मणि सुनहु पुरुष परभाऊ ❀ पुरुष डोरि तोहिं अजहुँ चिन्हाऊ ॥
 पुरुष शक्ति सुत षोडश आही ❀ शक्तिसंग जिवलोकहि जाही ॥
 बिना शक्ति नहिं पथचलिजाही ❀ शक्ति हीन जिवभव अरुभाही ॥
 ज्ञान बिबेक दया सन्तोषा ❀ क्षमा शील आनन्द सरोषा ॥
 सन्त प्रेम धीरज निहकामा ❀ इन मिलि लहै लोक विश्रामा ॥
 गुरु सेवा गुरु पद परतीती ❀ जेहि मन बसै चलै यम जीती ॥
 आत्म पूजा संत समागम ❀ महिमा सन्त कहतनिगमागम ॥
 गुरु पद बंदि सन्त आराधै ❀ ममता मोह क्रोध गुण साधै ॥
 अमृतवृक्ष पुरुष सतनामा ❀ नर तिहि ध्याय जाय परधामा ॥
 यह सब कह्यो पन्थ सहिदानी ❀ पूछ बिना घर जाय न प्रानी ॥
 पुरुष सुनाम चक्षु जब होई ❀ पूछहु बिना जाय घर सोई ॥
 वृक्ष अंक पावै परवाना ❀ लहै जीव तब जाय ठेकाना ॥
 धर्म चरित्र सुनहु भ्रमदासा ❀ बल बुधिकै जीवन तिन ग्रासा ॥
 धरि अवतार कथा तिन गाया ❀ अन्ध जीव तेहि गम्य न पाया ॥
 अजहुँ सेवक अति लौलीन्हा ❀ तासों कहेनि ज्ञान को चीन्हा ॥
 ज्ञान प्रवृत्ति निवृत्ति सुनावा ❀ तजि निवृत्ति प्रवृत्ति दृढ़ावा ॥
 दाया क्षमा प्रथम तिन भाषा ❀ ज्ञान विज्ञान कर्म अभिलाषा ॥
 अमृत धोखेविष तेहि दीन्हा ❀ तजि सत पंथ कर्म गहि लीन्हा ॥
 ज्ञान योग तजि कर्म दृढ़ाये ❀ कर्म वश्य अर्जुन दुख पाये ॥
 मीठ देखाय देह विष पाछे ❀ मीन खाहि जिमि बंशी आछे ॥

छंद—कहँ लगि कहौ छल बुद्धि यम को सन्तजन तेहि परखि है ।
 ज्ञान प्रेम दृढाय हिय लखि सन्त मारग हरषि है ॥
 तब चीन्हि है यम छल मतो जिय चीन्हि न्यारो है रहै ।
 सतगुरु चरण यम त्रास नाशै अटल सुख आनंद लहै ॥६४॥

सो०—सतगुरु को विश्वास, जनम मरण भय नाशई ।
 धर्मणि सो निज दास, सत्य नाम जिन दृढ़ गह्यो ॥६७॥

सतगुरुवचन—चोपाई ।

अब तुम सुनो शरीर बिचारा ❀ एक नाम गहि धरहु करारा ॥
 सेवा कुम्भतनरिहु रस मारा ❀ कोटि रोम तन पृथी सुधारा ॥
 निरी बहत्तरि नौ परधाना ❀ नौ महँ तीन प्रधान सुजाना ॥
 ते तिनमहँ इक रूप अनूपा ❀ सो लै रहै गहै सतरूपा ॥
 बत्तिस पत्र पद्म जेहि आही ❀ उठै शब्द परकट गुण ताही ॥
 शून्य माहँ जे शब्द समाई ❀ औरौ कहौ सुनो चितलाई ॥
 आंत हाथ इकइस मम माना ❀ सवा हाथ भोली परमाना ॥
 सवा हाथ नाभी फिर कहिया ❀ खिरकी सोत गुफा महँ रहिया ॥

छंद—पिता अँग लक्ष तीन जानो पाँच अंगुल दिल कही ।

सात अंगुल फेफसा है सात सिन्धु जामहँ रही ॥

पवन धारन साधि योगी ब्रह्म केवल ध्यावहीं ।

फाँस यम ते मुक्त है फिरि जीव लोक न आवहीं ॥६५॥

सो०—ज्ञान योग सुख राशि, नाम लहै निज घर चलै ।

अरि पर्वत को नाशि, जिवनमुक्त जिव है रहै ॥६८॥

चोपाई ।

प्रभु तुम हो सत पुरुष दयाला ❀ बचन तुम्हार सुमानि रसाला ॥
 अब बरणों प्रभुपद निज दासा ❀ गृही बिरागी रहनि प्रकासा ॥
 कवनि रहनि बैराग कमावै ❀ कवनी रहनि गृही गुण गावै ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास सुनु शब्द सँदेशा ❀ जीवन कहो मुक्ति उपदेशा ॥
वैरागी वैराग दृढ़े हौ ❀ गृही भाव भक्ती समुझै हौ ॥

वैरागी लक्षण ।

वैरागिहि अस चाल बताओ ❀ तजि अखाद्य तब हंस कहाओ ॥
जीव दया आनै दिल माहीं ❀ द्रोह घात किहु चितवै नाहीं ॥
चलै पान मुक्तिहि को छापा ❀ जाते मिटै कर्म भ्रम पापा ॥
हंस दशा लखि पंथ चलावै ❀ श्रवनी कंठी तिलक बनावै ॥
रूखा फीका करै अहारा ❀ निशिदिन सुमरै नाम हमारा ॥
ओ पुनि लेइ तुम्हारो नाऊँ ❀ पठवों ताहि अमरपुर गाऊँ ॥
कर्म भर्म सब देइ बहाई ❀ सार शब्द मों रहै समाई ॥
नारि न परसै बिन्दस जोवै ❀ क्रोधकपटनिशिदिनतेहि खोवै ॥
नरक खानि नारी कहँ त्यागै ❀ इक चित होय शब्द अनुरागै ॥
क्रोध कपट सब देइ बहाई ❀ गुरु गमि तेज रहै चित लाई ॥
बिकसितबदनभक्तिकोआगर ❀ शीतल दशा प्रेम सुखसागर ॥
रहै अयाँची यँचै न काहू ❀ का राजा का परजा शाहू ॥
पछिम लहरि जो गावै जानी ❀ अजपा जाप भजन धुनि ठानी ॥
रहिता रहै बहै नहिं कबहीं ❀ सो वैरागी जानै हमहीं ॥
हम कहँ भजै हमहिं अस होई ❀ आवागमन मिटै दुख सोई ॥
गुरु चरणन महँ रहै समाई ❀ आवागमन मिटै दुखदाई ॥
तजै काम मन दृढ़ चतुराई ❀ गुरु आज्ञा निरखै चितलाई ॥
ताकर खूँट काल नहिं गहई ❀ गुरु प्रतीत राखै जो रहई ॥
गुरु भक्ति उपजै दृढ़ जेही ❀ आवागमन मिटै पुनि तेही ॥
मोहिं समान गुरु कहँ भाखै ❀ नाम प्रताप सुदृढ़ कै राखै ॥
गुरु सेवन सों सब फल पावै ❀ गुरु बिमुखी नर पार न पावै ॥
जस चन्दा कुमुदिनि कै रीती ❀ गहै शिष्य अस गुरु पद प्रीती ॥

छंद—कहँ लगि कहौँ छल बुद्धि यम को सन्तजन तेहि परखि है ।
 ज्ञान प्रेम दृढ़ाय हिय लखि सन्त मारग हरषि है ॥
 तब चीन्हि है यम छल मतौ जिय चीन्हि न्यारो है रहै ।
 सतगुरु चरण यम त्रास नाशै अटल सुख आनंद लहै ॥६४॥
 सो०—सतगुरु को विश्वास, जनम मरण भय नाशई ।
 धर्मणि सो निज दास, सत्य नाम जिन दृढ़ गह्यो ॥६७॥
 सतगुरुवचन—चोपाई ।

अब तुम सुनो शरीर बिचारा ❀ एक नाम गहि धरहु करारा ॥
 सेवा कुम्भतनरिहु रस मारा ❀ कोटि रोम तन पृथी सुधारा ॥
 निरी बहत्तरि नौ परधाना ❀ नौ महँ तीन प्रधान सुजाना ॥
 ते तिनमहँ इक रूप अनूपा ❀ सो लै रहै गहै सतरूपा ॥
 बत्तिस पत्र पद्म जेहि आही ❀ उठै शब्द परकट गुण ताही ॥
 शून्य माहँ जे शब्द समाई ❀ औरौ कहौँ सुनो चितलाई ॥
 आंत हाथ इकइस मम माना ❀ सवा हाथ भोली परमाना ॥
 सवा हाथ नाभी फिर कहिया ❀ खिरकी सोत गुफा महँ रहिया ॥

छंद—पिता अँग लक्ष तीन जानो पाँच अंगुल दिल कही ।
 सात अंगुल फेफसा है सात सिन्धु जामहँ रही ॥
 पवन धारन साधि योगी ब्रह्म केवल ध्यावहीं ।
 फाँस यम ते मुक्त है फिरि जीव लोक न आवहीं ॥६५॥
 सो०—ज्ञान योग सुख राशि, नाम लहै निज घर चलै ।
 अरि पर्वत को नाशि, जिवनमुक्त जिव है रहै ॥६८॥
 चोपाई ।

प्रभु तुम हो सत पुरुष दयाला ❀ बचन तुम्हार सुमानि रसाला ॥
 अब बरणों प्रभुपद निज दासा ❀ गृही बिरागी रहनि प्रकासा ॥
 कवनि रहनि बैराग कमावै ❀ कवनी रहनि गृही गुण गावै ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास सुनु शब्द सँदेशा ❀ जीवन कहो मुक्ति उपदेशा ॥
वैरागी वैराग दृढ़ हौ ❀ गृही भाव भक्ती समुझै हौ ॥

वैरागी लक्षण ।

वैरागिहि अस चाल बताओ ❀ तजि अखाद्य तब हंस कहाओ ॥
जीव दया आनै दिल माहीं ❀ द्रोह घात किहु चितवै नाहीं ॥
चलै पान मुक्तिहि को छापा ❀ जाते मिटै कर्म भ्रम पापा ॥
हंस दशा लखि पंथ चलावै ❀ श्रवनी कंठी तिलक बनावै ॥
रूखा फीका करै अहारा ❀ निशिदिन सुमरै नाम हमारा ॥
औ पुनि लेइ तुम्हारो नाऊँ ❀ पठवों ताहि अमरपुर गाऊँ ॥
कर्म भर्म सब देइ बहाई ❀ सार शब्द मों रहै समाई ॥
नारि न परसै बिन्दस जोवै ❀ क्रोधकपटनिशिदिनतेहि खोवै ॥
नरक खानि नारी कहँ त्यागै ❀ इक चित होय शब्द अनुरागै ॥
क्रोध कपट सब देइ बहाई ❀ गुरु गमि तेज रहै चित लाई ॥
बिकसितबदनभक्तिकोआगर ❀ शीतल दशा प्रेम सुखसागर ॥
रहै अयाँची यँचै न काहू ❀ का राजा का परजा शाहू ॥
पछिम लहरि जो गावै जानी ❀ अजपा जाप भजन धुनि ठानी ॥
रहिता रहै बहै नहिं कबहीं ❀ सो वैरागी जानै हमहीं ॥
हम कहँ भजै हमहिं अस होई ❀ आवागमन मिटै दुख सोई ॥
गुरु चरणन महँ रहै समाई ❀ आवागमन मिटै दुखदाई ॥
तजै काम मन दृढ़ चतुराई ❀ गुरु आझा निरखै चितलाई ॥
ताकर खूँट काल नहिं गहई ❀ गुरु प्रतीत राखै जो रहई ॥
गुरु भक्ति उपजै दृढ़ जेही ❀ आवागमन मिटै पुनि तेही ॥
मोहिं समान गुरु कहँ भाखै ❀ नाम प्रताप सुदृढ़ कै राखै ॥
गुरु सेवन सों सब फल पावै ❀ गुरु बिमुखी नर पार न पावै ॥
जस चन्दा कुमुदिनि कै रीती ❀ गहै शिष्य अस गुरु पद प्रीती ॥

ऐसी रहनि करै वैरागी ❀ जिहिमतिअसि सोई अनुरागी ॥
गृही का लक्षण ।

गृही भक्ति अब सुनु भ्रमदासू ❀ जाते गृही पर नहिं फाँसू ॥
काग दशा सब देह बहाई ❀ जीव दया दिल राख समाई ॥
मीन माँस मद निकट न जाई ❀ अंकुर भक्ष सो सदा कराई ॥
लेवै पान मुक्ति सहिदानी ❀ तजे काल नहिं रोकै जानी ॥
कण्ठी तिलक सत्य का बाना ❀ गुरुमुख शब्द प्रतीत समाना ॥
सुमिरत जे गुरु देहिं दृढ़ाई ❀ मन क्रम से सुमिरै मोहिं भाई ॥
गुरु सेवा पर सरबस वारै ❀ सेवा भक्ति सोई पथ धारै ॥
प्रेम भाव सन्तन ते राखै ❀ सेवा सन्त प्रीति अभिलाखै ॥
गृही सुभक्ति करहि परमाना ❀ यथाशक्ति सेवा सहिदाना ॥
नाम कबीर जपै लवलाई ❀ तुम्हरो नाम जपै मन राई ॥
प्रीति अखण्ड गुरु पद गहई ❀ बन्दन प्रीति दोऊ निरबहई ॥
ऐसी रहनि गृही जो धरई ❀ गुरु प्रताप दोऊ निस्तरई ॥

छंद—गृही औ वैराग दोऊ रहनि गहनि चेतायऊँ ।

निज रहनि दोऊ तरै सो व्यक्त व्यक्त बतायऊँ ॥

निपट अति बिकराल दुर्गम पंथ भवसागर अहै ।

नाम नौका लहै दृढ़कै क्षीर भवनिधि तब लहै ॥६६॥

सो०—केवट सो करु प्रीति, जो भव पार उतारिहै ।

चलै सो भवजल जीति, जब सतगुरु केवट मिलै ॥६६॥

हंस का लक्षण—घोपाई ।

जबलगि तन में हंसा रहई ❀ निरखत शब्दचलै पथ गहई ॥
जैसे शूर रहे रण माँड़ी ❀ जो भागै तो होवे भाँड़ी ॥
संत खेत गुरु शब्द अमोला ❀ जब जेहि भ्रसा जीव जे डोला ॥
गुरु विमुखी जिवकतहुँ न बाचै ❀ अग्निकुण्ड महुँ मरिमरिनाचै ॥
शासति बहुत होई तिहिभाई ❀ जन्म जन्म सो नरकहि जाई ॥

कोटि जन्म विषधर को पावै ❀ विष ज्वाला सहि जन्म गँवावै ॥
जौ लौं चन्द्र सूर्य सहिदानी ❀ तौलगि रहै नरक की खानी ॥
बासा ठाम कीर तन धरही ❀ कोटिजन्म अघ नरकहि परही ॥
कहा कहों शामति तेहिकेरा ❀ गुरुमुख गहो शब्द दृढ़ चेरा ॥
जेहिगुरुकतहुँछुवैनहिं काला ❀ गुरु दयाल तो सबै दयाला ॥
जो जानहिं परमारथ बानी ❀ अवर जीव परमारथ जानी ॥
गुरुव्रत जाहि ताहि नहिं हानी ❀ और देव सो नहिं मन आनी ॥
सतगुरु बिना जीव की हानी ❀ सोइ नर होइ नरक की खानी ॥
सतगुरु अगम गम्य बतलावै ❀ जाकी गति को वेद न पावै ॥
वेद जाहिसों ताहि बखानै ❀ सत्य पुरुष का मर्म न जानै ॥
कोइ इक हंस विवेकी होई ❀ सत्य शब्द सो गहै बिलोई ॥
कोटि माहँ कोइ एक विशेषी ❀ सो मम बानी गहै परेखी ॥
फंदे सबै निरञ्जन फन्दा ❀ उलटि न निजघर चीन्है मन्दा ॥

कोयल का दृष्टान्त ।

कोइलसुनु सुभाव निजदासा ❀ समुक्तितासुगुणकरहु प्रकासा ॥
कोइल चित्त चातुर मृदुबानी ❀ बीरी तासु काग अघखानी ॥
ताके घर निज अंड पवारा ❀ दुष्ट मित्र सब समके धारा ॥
सखा जानि निजबायसु जुगवै ❀ अण्डा काग जानि सो भुगवै ॥
कलासुपुष्ट अण्ड बिहराना ❀ कछु दिन गये कागवै जाना ॥
कछुकपक्ष पुनि ताकहँ भयऊ ❀ कोइल शब्द सुनावै लयऊ ॥
सुनत शब्द कोइल सो जागा ❀ निजकुल बचन ताहिप्रियलागा ॥
काग जाहि पुनि तबहिं चरावै ❀ तब कोइल तेहि शब्द सुनावै ॥
निजअंकुर कोइल सुत गहिया ❀ बायस सीख हिये नहिं रहिया ॥
एक दिवस अपकृत दिखलाई ❀ कोइल सुत उड़ि चला पराई ॥
निज बोली बोलत चलु बाला ❀ धाये बायस बिकल बिहाला ॥
धावत थकित भयो नहिं पाई ❀ बहुरो मुरछि भवन फिरि आई ॥

कोइल सुत मिलु निज परिवारा ❀ बायस काग मुरछि भखमारा ॥
 कोइल सुत जस शूरा होई ❀ इहि बिधि धाय मिलै मुहिकोई ॥
 निज घर सुरति करै जो हंसा ❀ तारौं तासु इकोतर बंसा ॥
 काग गवन गति छाँड़हु भाई ❀ हंस दशा धरि लोकहि जाई ॥
 बोलै काग काहु नहि भावै ❀ कोइल स्वर सुनि सब सुख पावै ॥
 अस हंसा बोलहु बिलछानी ❀ प्रेम सुधा सम कहु गुरुबानी ॥
 काहुहि कुटिल बचन नहि कहिये ❀ शीतल शब्द गुरुहिंगरि रहिये ॥
 जो कोई क्रोध अनल समधावै ❀ आपु आपु हैं तपत जुड़ावै ॥
 ज्ञान अज्ञान कौन सहिदानी ❀ कुटिल बुद्धि शीतल शुभ बानी ॥
 कुटिल कठोर कुमति अज्ञानी ❀ प्रेम भाव शीतल गुणज्ञानी ॥
 ज्ञानीतब जब कुबुधि नशावै ❀ मन को अंग चीन्हि बिसरावै ॥
 जस अज्ञान होय तस ज्ञानी ❀ सज्ञाना अज्ञान बखानी ॥
 सुरा काछै काछै जो कोई ❀ सम्मुख मरै सुयश तब होई ॥
 होइ गलानिज्ञानि उर माहीं ❀ मूर्ख हिये कम सूझै नाहीं ॥
 चक्षु मीन पद विष्ठा परई ❀ ताहि कोई उपहास न करई ॥
 दृग आहत पगु परै कुठाई ❀ तेहि कहँ दोष देइ नर आई ॥
 धर्मणि अहै ज्ञान अज्ञानी ❀ परखै सन्त सुर गुरु बानी ॥
 सर्वमयी है आपुनि बासा ❀ कहीं गुप्त कहि प्रकट प्रकासा ॥
 सबसे नविन हंसनिजजानी ❀ गहे रहै गुरु पक्षनिशानी ॥

छंद—रंग काचा फलत लखि प्रह्लाद कस दृढ़ कै रहा ।

तात तेहि बहु कष्ट दीन्हों अडिग हो हरिगुण गहा ॥

भाँति बहु सतगुरु भजै तो हंस होय अमोल हो ।

अमरलोक निवास पावै अटल होय अडोल हो ॥ ६७ ॥

परमार्थ का वर्णन ।

सो०—तेज भर्म यमजाल, सत्त नाम लौ लाइये ।

चलै सन्त की चाल, परमार्थ पर चित दिये ॥ ७० ॥

चौपाई ।

गऊ बिप्र परमारथ खानी ❀ गऊ चालि गुण परिखहुबानी ॥
 आपुहि चरहिं तिरन औपाना ❀ जल अचवहिं सुक्षीर दे दाना ॥
 तासु क्षीर घृत देव अघाही ❀ औ सुत नर पशु थंभन आही ॥
 बिष्टा तासु काज नर आवै ❀ नर अधकमीं जन्मगँवावै ॥
 टीका पूजै गउतन नासा ❀ नर राक्षस तन लै तेहि ग्रासा ॥
 चरन तासु तनअति सुखदाई ❀ एतिक एकगऊ गुण भाई ॥
 जो गउ जानि गहत यह बानी ❀ तो नहिं काल करतजिवहानी ॥
 जे पशुतन तेहिनर समझाना ❀ नरदेही सो पशू समाना ॥
 नर तन लहि अस बुद्धी होई ❀ सतगुरु मिलै अमर ह्वै सोई ॥
 सुनु धर्मणि परमारथ बानी ❀ कहौं बुझाय पुरुष सहिदानी ॥
 पद परमारथ सन्त अधारा ❀ गुरु गमि लेय सो उत्तरै पारा ॥
 सत्य शब्द को परचै पावै ❀ परमारथ पथ लोक सिधावै ॥
 सेवा करै बिसारै आपा ❀ आपा थापि अधिक सन्तापा ॥
 यह नर अस चातुरबुधि हीना ❀ ऊँच क्रिया अपने शिर लीना ॥
 औगुण करै कहै हरि कीना ❀ गुरु शुभ कर्म सो आप प्रबीना ॥
 ताते हो शुभ कर्म बिनाशा ❀ धर्मदास तुम गहो निराशा ॥
 आशा एक नाम की राखो ❀ निजशुभकर्म प्रकटनहिं भाखो ॥
 गुरु पद रहौ सदा लौ लीना ❀ जैसे जलहि न बिसरै मीना ॥
 पुरुष नाम को अस परभाऊ ❀ हंसा कह भव रहै न पाऊ ॥
 निश्चय जाय पुरुष के पासा ❀ कूर्म कला परिखहु भ्रमदासा ॥

छंद—जिमि कमठ बालस्वभाव तिमि मम हंस निज घर धावही ।

यम दूत हो बलहीन देखत हंस निकट न आवही ॥

हंस निर्भय निडर गाजहि सत्य नाम उचारही ।

हंस मिलि परिवार यम दूत सब भख मारही ॥६८॥

सो०—आनंदधाम अमोल, हंस तहाँ सुख पावही ।
हंसन हंस कलोल, पुरुष काहि छवि निरखही ॥ ७१ ॥

छंद—अनुराग सागर ग्रन्थ कथि तोहिं अगम गम्य बताइया ।
पुरुष लीला काल छल बल सबै बरणि सुनाइया ॥
रहनि गहनि बिबेक बानी जब हरी जन बूझिहैं ।
परखि मारग गहैं ते निज अगम मारग समुझिहैं ॥
सतगुरु पदों परतीत निश्चय नाम भक्ति ददायहै ।
सन्त की सब सत्यकीरति कथन बन्ध नशायहै ॥ ६६ ॥

सो०—सतगुरु पीव अमान, अजर अमर बिनशै नहीं ।
कहों शब्द परमान, भजे अमर सो अमर है ॥ ७२ ॥
तनधरि जाकी आस, गहै जीव अमरै तहाँ ।
चित चेतो भ्रमदास, तव गुरु चरणहि लीन रहु ॥ ७३ ॥
मन अलि कमल बसाव, सतगुरु पद पंकज रुचिर ।
गुरुचरणन चितलाव, स्थिर घर तबहीं मिलै ॥ ७४ ॥
शब्द सुरति करु मेल, शब्द मिले सतगुरु चलै ।
बुन्द सिन्धुकाखेल, मिलै न दूजा तिहि कहै ॥ ७५ ॥
मन की दशा बिहाय, गुरुमारग निरखत चलै ।
हंस लोक को जाय, सुख सागर सुख सो लहै ॥ ७६ ॥
बुन्द जीव अनुमान, सिन्धु नाम सतगुरु सही ।
कहहिं कबीर प्रमान, गुरुज्ञानी जन बूझिहैं ॥ ७७ ॥

इति श्रीअनुरागसागर विवेकज्ञानकादेशते अपरअलखनाम-सारांशकथन
बाणी कबीर साहेब की शिष्यप्रबोध विभाषासमाप्तम् ॥

दो०—कार्तिक मास शुभ कृष्ण पक्ष, तिथि नौमी सोवार ।
अनुरागहि सम्पूर भये, रविबासर यतवार ॥ ६ ॥

जाके सुमिरण कियेते होत सिद्धि सब काम ।

शिवचरणदास दसखत कियो सुमिरयो गणपतिनाम ॥१०॥

सो०—जन्मभूमि मम ग्राम बढिआचक सो नाम यक ।

तालुक साहिसुजान प्रगने धुरआपार है ॥

चौपाई :

जिल्ले गोरखपूरहि कही ❀ अनुरागहि प्रति लिखिमें सही ॥

रामदास सोनार लिखाया ❀ ग्रामे गोला बजार जनाया ॥

गोपालपूर सोतालुक अहई ❀ प्रगने धुरआपारसो कहई ॥

जिल्ले गोरखपूरहि जानी ❀ इतिप्रमाणलिखि कहा बखानी ॥

इति

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम		सुखसागर सचित्र सजिल्द	२४०)
लेखक- श्रीप्रताप सिंह	६०)	भगवद्गीता भाषा सजिल्द	२५)
अष्टावक्र गीता सटीक	६६)	योग वाशिष्ठ संपूर्ण दो भागों में	४७५)
आल्हखण्ड सजिल्द		विश्राम सागर सटीक सचित्र	
ललिताप्रसाद कृत	१२०)	सजिल्द	२२५)
कर्म विपाक संहिता	३५)	भक्ति सागर चरणदास सजिल्द	१००)
चमत्कार चिन्तामणि (ज्योतिष)	१२)	महाभारत भाषा सचित्र सजिल्द	१८०)
चाणक्य नीतिदर्पण	२०)	लग्न चन्द्रिका	३५)
चित्रकूट महात्म्य	७)	माधव निदान भाषा टीका	६०)
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी		मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	६०)
(सजिल्द)	२०१)	विवाह पद्धति भाषा टीका	३०)
नवीन संग्रह	६)	शतपंच चौपाई	३)
पार्वण श्राद्ध	६)	शार्ङ्गधर संहिता	६०)
सत्यनारायण व्रत कथा रेवाखंडी	६)	सर्वतोभद्र चक्रम	२५)
प्रश्न प्रकाश	८)	नूतन स्त्री सुबोधिनी	१००)
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	१२०)	अमृतसागर नागरी सजिल्द	१४०)
फल प्रकाश	६)	सुन्दर विलास	२१)
शिवपुराण भाषा सचित्र सजिल्द	१६०)	हरितालिका व्रत कथा	३)
बृहज्ज्योतिःसार सटीक सजिल्द	६०)	हनुमन्त बावनी	२)
बृहज्जातक सटीक स्टिफ कवर		दुर्गासप्तशती भाषा टीका सजिल्द	४५)
ज्योतिष	३५)	ब्रज विलास	६०)

मिलने का पता

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड
उत्तराधिकारी - (नवल किशोर प्रेस बुक डिपो)

१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ - २२६००१

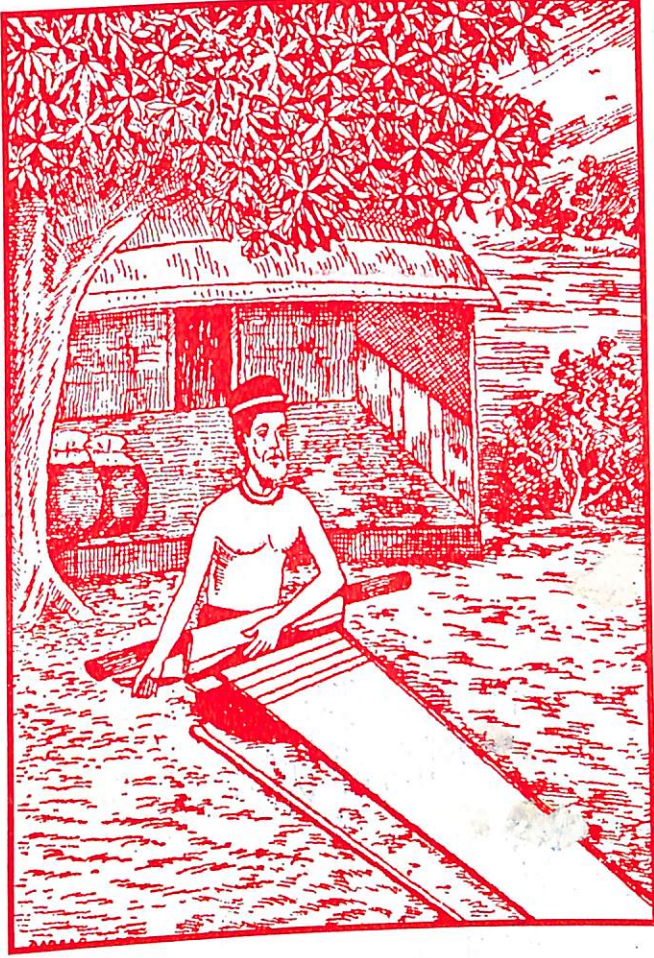
फोन - (०५२२) २६२३३१५

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा

अवध पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ, फोन - २४५०७६८ में मुद्रित

॥ श्री ॥

अनुराग सागर



प्रकाशक

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ

मूल्य : २४ रुपये